जय-तिथि-पत्रक

श्री वीर-निर्वाण संवत्
२५४६-२५४७
विक्रम संवत् २०७७

तेरापंथ संवत्
२६०-२६१
ईस्वी सन् २०२०-२०२१

सम्पादक : मुनि उदितकुमार

जैन विश्व भारती
लाडनूं - 341306 (राजस्थान)
दूरभाष : 01581-226025, 224671, 226080, फैक्स : 01581-227280
E-mail : jainvishvabharati@yahoo.com, Visit us at : www.jvbharati.org

अहिंसा यात्रा

₹20

जैन विश्व भारती

मानवीय मूल्यों को समर्पित संस्था

प्रमुख गतिविधियां : एक नजर

शिक्षा :

- जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय)
- विमल विद्या विहार सीनियर सैकण्डरी स्कूल
- महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, टमकोर
- महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर
- समण संस्कृति संकाय
- केन्द्रीय जीवन विज्ञान अकादमी

सेवा :

- सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला
- श्रीमद् आचार्य तुलसी महाप्रज्ञ मानव कल्याण केन्द्र, बीदासर
- स्व. माणकचन्द मनोहरी देवी दूगड़ आयुर्वेद चिकित्सालय, बीदासर
- विद्युत चुम्बकीय चिकित्सा केन्द्र
- समणी केन्द्र व्यवस्था

साहित्य :

- प्रकाशन एवं वितरण
- आगम मंथन प्रतियोगिता
- इतिहास मंथन प्रतियोगिता

संस्कृति :

- तुलसी कला दीर्घा (आर्ट गैलेरी)

शोध :

- आगम सम्पादन
- हस्तलिखित एवं पाण्डुलिपियों की सुरक्षा एवं संरक्षण

समन्वय :

- पुरस्कार एवं सम्मान
- विदेशों में प्रचार–प्रसार

साधना :

- प्रेक्षाध्यान
- प्रेक्षाध्यान पत्रिका

उक्त सभी गतिविधियों में संपूर्ण समाज की सहभागिता एवं सहयोग हेतु सादर निवेदन

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें

जैन विश्व भारती

पोस्ट : लाडनूं–341306, जिला : नागौर (राज.) फोन : 01581–226080 I 224671

E-mail : jainvishvabharati@yahoo.com, Visit us at : www.jvbharati.org

आशीर्वचन

जैन विश्व भारती के परिसर का कण-कण जप-तप से भावित है। भिक्षु विहार में अनवरत जप-तप की तरंगें प्रवाहित होती रहती है। प्रज्ञालोक में अध्यात्म चिंतन और ध्यान के विकिरण सतत संचरित रहते हैं। तुलसी अध्यात्म नीडम् का वायब्रेशन उस समूचे भाग को प्रभावित करता है। आगम, शोध व सम्पादन के क्रम में आगमों के पाठ का पारायण होता रहता है। मुझे तो लगता है कि यहां अध्यात्म का वातावरण है, इसलिए यहां आने वाले अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। मेरा एक सुझाव है कि यहां आने वाले ध्याता बनकर आएं और ध्येय के प्रति समर्पित रहें। ऐसा होने पर प्रसन्नता और पवित्रता हर पल आपकी परिक्रमा करती रहेगी।

- आचार्य तुलसी

जैन विश्व भारती और जैन विश्व भारती संस्थान जैन विद्या के विश्व प्रसिद्ध केन्द्र हैं। जैन विश्व भारती के पास ज्ञान की विशाल राशि है। इसकी मिट्टी में सात सकारों के बीज हैं। आचार्यश्री तुलसी का तप तेजस्वी सूर्य है, जो इसकी उर्वरा को बढ़ाएगा। ज्ञान का स्रोत है, दर्शन का संरक्षण है, चरित्र की हवा है। जिससे यह बगीचा प्राच्य विद्याओं के फूलों की सुगंध को, सुवास को क्षितिज पर फैलाएगा। उस सुवास और सौरभ से विश्व मानस प्रभावित हो, जीवन बोध पाएगा।

- आचार्य महाप्रज्ञ

जैन विश्व भारती एक गौरवशाली संस्था है। उसके द्वारा जैन विद्या, शिक्षा, साहित्य, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान जैसी विभिन्न महत्त्वपूर्ण गतिविधियों का संचालन किया जा रहा है। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी और परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी का महनीय मार्गदर्शन इस संस्था को प्राप्त हुआ। जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) उसके साथ जुड़ा हुआ है। लाडनूं स्थित जैन विश्व भारती परिसर मुनिवृंद, समणीवृंद और मुमुक्षुवृंद का भी आवास स्थल बना हुआ है। तेरापंथ समाज मानों इस माने भी भाग्यशाली है कि उसके पास इतनी बड़ी संस्था है। यह संस्था आध्यात्मिक आरोहण करती रहे तथा समाज को आध्यात्मिक पोषण देती रहे। शुभाशंसा।

- आचार्य महाश्रमण

अपनी आलोचना का जवाब जबान से नहीं,
अपने महत्त्वपूर्ण कार्यों से दो।

-आचार्य महाश्रमण

'श्रद्धानिष्ठ श्रावक'
स्व. हनुमानमलजी दूगड़ 'जौहरी' की पुण्य स्मृति में

: श्रद्धावनत :

'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' गिन्नीदेवी दूगड़
मदनचंद, आलोक, अजित दूगड़ समस्त 'जौहरी' दूगड़ परिवार
(सरदारशहर-मुम्बई-सूरत)

DC-4220, Bharat Diamond Bourse
Bandra Kurla Complex, Bandra (E) Mumbai-400051
T : 022-23611056/57/58 | F : 022-23611055
E : royal_diam@hotmail.com

Royal Diam

701-702, Gangotri Tower, Kesarba Market
Gotalawadi, Katargam, Surat - 395004
T : 0261-2531700, 2532800
F : 0261-2531100

प्रकाशकीय

जैन विश्व भारती के समण संस्कृति संकाय द्वारा विगत 42 वर्षों से मर्यादा महोत्सव के पावन अवसर पर जय-तिथि-पत्रक का प्रकाशन प्रतिवर्ष निरंतर किया जा रहा है। सन् 2019 से प्रकाशन कार्य का दायित्व जैन विश्व भारती साहित्य विभाग द्वारा लिया गया है। इसी क्रम में 156वें मर्यादा महोत्सव के पावन अवसर पर संवत् 2077 का जय-तिथि-पत्रक सुधी पाठकों के हाथों में प्रस्तुत करते हुए हमें हार्दिक प्रसन्नता है। जय-तिथि-पत्रक में ज्योतिषीय सूचनाओं, विशेष पर्वों, महत्त्वपूर्ण दिवसों व अनुष्ठानों के साथ-साथ संस्थाओं एवं विभिन्न संघीय गतिविधियों, कार्यक्रमों आदि से संबंधित उपयोगी सामग्री प्रकाशित की गई है।

'शासन स्तंभ' मंत्रीमुनि श्री सुमेरमलजी ने जय-तिथि-पत्रक संपादन के गुरुतर दायित्व का सन् 1984 से निरंतर सम्यक् निर्वहन किया। इस वर्ष श्रद्धेय मंत्रीमुनिश्री का देवलोकगमन हो गया। मुनिश्री ने इतने वर्षों तक दैनंदिन आवश्यकता की ज्योतिषीय सूचना-सामग्री प्रस्तुत करने की कृपा की, हम मंत्री मुनिश्री के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित करते हैं। परमाराध्य आचार्यप्रवर के निर्देशानुसार मुनिश्री उदितकुमारजी ने जय तिथि पत्रक का संपादन किया है। मुनिश्री के महनीय मार्गदर्शन हेतु हार्दिक कृतज्ञता। श्री जीतमल नाहटा, कोलकाता का सामग्री संकलन कार्य में वर्षों तक सहयोग प्राप्त हुआ। इस वर्ष उनका निधन हो गया। नाहटाजी के प्रति हार्दिक आभार एवं श्रद्धांजलि। इस वर्ष इस कार्य में श्री प्रवीण सुराणा (कोलकाता) का सहयोग प्राप्त हुआ।

जय-तिथि-पत्रक के प्रकाशन के लिए हमें अनेक महानुभावों का आर्थिक सौजन्य प्राप्त हुआ है। उनका उदार सहयोग-भाव संस्था की प्रवृत्तियों को गतिशील रखने में योगभूत बनता है। सभी अनुदानदाताओं के प्रति हम हार्दिक आभार ज्ञापित करते हैं। प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से इस कार्य में सहयोगी सभी महानुभावों के सहयोग हेतु आभार।

विश्वास है कि जय-तिथि-पत्रक 2077 की सामग्री सभी उपयोगकर्ताओं के लिए महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी सिद्ध होगी तथा इसमें प्रस्तुत सामग्री से उपयोगकर्ता त्याग-प्रत्याख्यान के लिए प्रेरित होंगे।

अरविन्द संचेती
अध्यक्ष, जैन विश्व भारती

धरमचंद लुंकड़
विभागाध्यक्ष, आदर्श साहित्य विभाग

गौरव जैन मांडोत
मंत्री, जैन विश्व भारती

01 जनवरी, 2020

अध्यक्ष की कलम से

जैन विश्व भारती समाज की एक गौरवपूर्ण संस्था है। प्रथम अनुशास्ता आचार्यश्री तुलसी से लेकर तृतीय अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी जैसे धर्मसंघ के तीन-तीन आचार्यों के सुदीर्घ मार्गदर्शन एवं सान्निध्य की अधिकारी यह कामधेनु रही है। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के शब्दों में निर्माण की पुरोधा इस संस्था की गतिविधियां व्यापक है। इन सभी गतिविधियों का प्रयोजन भारतीय संस्कृति विशेषतः जैन संस्कृति के मूल में बसे हुए मानवीय मूल्यों को प्रकाश में लाना है। इन गतिविधियों का मूल उद्देश्य गणाधिपति तुलसी द्वारा स्थापित एवं पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण द्वारा विकसित सत्य, अहिंसा, मानवीय एकता, नैतिक उत्थान एवं शिक्षा के नवीन स्वरूप को स्थापित करना है। जैन विश्व भारती सही मायने में वह अलौकिक गौ है जो सभी महत्त्वाकांक्षाओं को पूर्ण कर सकती है।

जैन विश्व भारती के माध्यम से समस्त मानव जाति की जागतिक समस्याओं का सटीक समाधान संभव है। यही स्वप्न था गुरुदेव तुलसी का, अध्यात्म योगी आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का और यही स्वप्न है महातपस्वी युवामनीषी आचार्यश्री महाश्रमणजी का। इस संस्था के अमिट चिह्न, उपलब्धियां एवं रचनात्मक स्थितियां सकल समाज की देन है। सप्त सकार को केन्द्र में रखकर कार्य करने वाली यह संस्था गुरु के आशीर्वाद, समाज के सहयोग एवं सक्षम कार्यकर्ताओं के प्रयासों के फलस्वरूप अनेक मानव कल्याणकारी गतिविधियों का संचालन कर रही है। समाज का विशिष्ट एवं महत्त्वपूर्ण सहयोग इस संघीय संस्था को सदैव प्राप्त रहा है। जैन विश्व भारती का समृद्ध साहित्य, समुन्नत साधना, सम्पन्न संस्कार आदि ऐसी निधियां है, जिनके संरक्षण का सौभाग्य सम्पूर्ण समाज को प्राप्त हुआ है।

परमपूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का जन्म शताब्दी वर्ष एवं जैन विश्व भारती का स्वर्ण जयंती वर्ष ऐसी दो महत्त्वपूर्ण थातियां सिद्ध होंगी जिसे इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित किया जायेगा।

हम सबका यह दायित्व बनता है कि हमारी सृजन चेतना एवं रचनात्मक सोच दिन प्रतिदिन उर्वरा बनी रहे और हम गुरुदेव तुलसी की इस कामधेनु को, इस संस्थान को सार्थक आयाम देने के लिए कृतसंकल्प रहें।

1 जनवरी 2020

अरविन्द संचेती
अध्यक्ष
जैन विश्व भारती

मर्यादा महोत्सव क्षेत्र 'हुबली' : एक परिचय

हुबली कर्नाटक राज्य का एक प्रमुख शहर है, जो उत्तर कर्नाटक की राजधानी अथवा छोटा मुंबई के नाम से भी प्रसिद्ध है। हुबली धारवाड़ का जुड़वा शहर है तथा बेंगलुरु के पश्चात् कर्नाटक राज्य में दूसरा विकासशील शहर है। हुबली शब्द की उत्पत्ति हुब्बल्ली शब्द से हुई, जिसे स्थानीय भाषा में हू (फूल) बल्ली (स्टेन) से हुई। हुबली एक ऐतिहासिक शहर है, जिसका निर्माण चालुक्य वंश के समय में हुआ तथा इसे पूर्व में रायना हुबली, इलैया पुरावदहल्ली और पूरबहल्ली के नामों से भी जाना जाता है।

विजयनगर के राजाओं के शासनकाल में रायरा हुबली कपास व लौहे के व्यापार का प्रमुख केन्द्र बन गया था। हुबली अक्सर मराठाओं अंग्रेजों व मुगलों के निशाने पर रहा। अंग्रेजों द्वारा औद्योगिक दृष्टि से हुबली में एक कारखाना स्थापित किया गया था, जिसे सन् १९६५ ई. में छत्रपति शिवाजी द्वारा लूट लिया गया था।

हुबली कुछ समय के लिए मुगलों के भी अधीन रहा था, जिसके अंतर्गत मुगलों द्वारा पूरे शहर को नष्ट कर दिया गया था, उसके पश्चात् दुर्गबदेल के आसपास बसप्पा शेट्टी नाम के व्यापारी ने नए कस्बे को बसाया। उसके पश्चात् सन् १७५५-५६ ई. में मराठाओं ने कब्जा कर लिया तथा उसके पश्चात् हैदरअली ने भी मराठाओं से छीन कर अपने कब्जे में कर लिया लेकिन सन् १७९० ई. में पुनः मराठाओं ने वापिस इसे अपने कब्जे में कर लिया। सन् १८१७ ई. में पुरानी हुबली अंग्रेजों के अधीन हो गई तथा सन् १८२० में नई हुबली को भी अंग्रेजी ने अपने अधीन कर लिया।

यातायात की सुविधाएं

हुबली पूरे भारतवर्ष से रेल, सड़क एवं वायु मार्ग से जुड़ा हुआ है। देश के किसी भी हिस्से में आने-जाने की सुविधा यहां से रेल द्वारा मिल जाती है। यहां का हवाई अड्डा राष्ट्रीय उड़ानों को संचालित करता है जो कि वर्तमान में किसी भी स्थान पर पहुंचने में मददगार साबित होता है।

पर्यटन स्थल

हुबली एक प्रमुख पर्यटक आकर्षण के रूप में उभरा हुआ है। इसके प्रसिद्ध पर्यटक स्थलों में भवानीशंकर मंदिर, असार, सिद्धरूधा मठ, उन्कल झील, नृपटूंगा बेट्टा और ग्लास हाउस शामिल है। गोवा १९० किमी., दांदेली १२० किमी. मुरदेश्वर २१० किमी., जोग फाल्स १६२ किमी., होस्पेट बांध १५० किमी., हम्पी १६० किमी., गोल गुम्बज २०० किमी. आदि इसके नजदीकी पर्यटक स्थल हैं।

औद्योगिक नगरी

सन् १८८० ई. में अंग्रेजों ने एक रेल्वे कारखाने की शुरूआत की, जिसके कारण यह शहर आज प्रसिद्ध औद्योगिक क्षेत्र के रूप में बदल गया। आज हुबली सूत, कपास, मूंगफली आदि का व्यापारिक केन्द्र है। यहां का

खादीग्राम उद्योग पूरे विश्व में प्रसिद्ध है, जिसमें राष्ट्रीय ध्वज का निर्माण इसी खादीग्राम उद्योग में होता है।

शिक्षा एवं चिकित्सा

शिक्षा एवं चिकित्सा के रूप में यह शहर विशेष रूप से प्रख्यात है। विश्वस्तरीय सुविधाएं एवं व्यवस्थाएं उपलब्ध होने के कारण देश के विभिन्न क्षेत्रों के लोग यहां पर अध्ययन करने एवं चिकित्सा प्राप्ति के लिए आते हैं। यहां पर मेडिकल, डेन्टल व इंजिनियरिंग कॉलेज हैं, जिसमें संपूर्ण भारत वर्ष से विद्यार्थी अध्ययन हेतु यहां आते हैं।

हुबली में सभी धर्मों के अनुयायी शताब्दियों से रहते हैं। राजस्थानी भाईचारे की मिसाल राजस्थानी संघ इस सुदूर प्रदेश में सबको देश की माटी से जोड़े रखता है।

तेरापंथ धर्मसंघ की धर्माराधना का केन्द्र : तेरापंथ भवन

लगभग ३००० वर्ग फीट में निर्मित यहां का सभा भवन श्रावक समाज की धर्माराधना का मुख्य केन्द्र है। तेरापंथ समाज के करीब १६० परिवार प्रवासित है तथा तेरापंथ समाज के कुल सदस्यों की संख्या लगभग ६०० है। धर्मसंघ की सभी संघीय संस्थाएं अपने-अपने कार्य एवं दायित्व के प्रति पूरी निष्ठा के साथ कार्यरत है। ज्ञानशाला का कार्य सुचारू रूप से व्यवस्थित चल रहा है।

पूज्यप्रवरों की असीम अनुकम्पा इस क्षेत्र पर हमेशा से रही है। समय-समय पर चारित्रात्माओं के चातुर्मास, समणी केन्द्र के नियमित रूप से संचालन होने में धार्मिक गतिविधियां निरन्तर चलती रहती है। पूरा श्रावक-श्राविका समाज जागरूकता एवं गुरु इंगित के अनुरूप अपना कार्य कर रहे हैं। पूज्यप्रवर की अनुकम्पा से यहां के श्रावक-श्राविका समाज को प्रदत्त संबोधन में, समाजभूषण, तेरापंथ प्रवक्ता के साथ-साथ शासनसेवी, श्रद्धानिष्ठ श्रावक, श्रद्धा की प्रतिमूर्ति से भी अलंकृत किया गया है। यहां का श्रावक समाज प्रति वर्ष गुरु दर्शनार्थ, रास्ते की सेवा में जाते हैं। गुरु कृपा से स्थानीय कई भाई-बहिन केन्द्रीय संस्थाओं में महत्त्वपूर्ण पदों पर अपना दायित्व बखूबी निभा रहे हैं। ये सब बातें हमारे लिए गौरव की अनुभूति कराते हैं।

-: निवेदक :-
सोहनलाल कोठारी (९४४८५९०३९२)
अध्यक्ष
आचार्यश्री महाश्रमण मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति, हुबली (कर्नाटक)

हैदराबाद

हैदराबाद दक्षिण-मध्य भारत में मूसी नदी के किनारे एवं डेक्कन पठार पर स्थित है। यह भारत के नवीनतम राज्य तेलंगाना की राजधानी है। इसका क्षेत्रफल 650 वर्ग किमी. है, एवं आबादी 80-90 लाख मानी जाती है। यहां की मुख्य भाषा तेलुगु, हिंदी व उर्दू है।

1463 में बने गोलकोंडा का गढ़ जब छोटा पड़ने लगा, तो नयी राजधानी हेतु मोहम्मद कूलि कुतब शाह ने हैदराबाद की स्थापना 1591 में चारमीनार के निर्माण से प्रारम्भ हुई। शहर का नाम अपनी गणिका ''भागमती'' के नाम से प्रेरित हो ''भाग्यनगर'' रखा एवं विवाह पश्चात् पत्नी के नए नाम ''हैदर महल'' से शहर का नाम ''हैदराबाद'' रखा। सिकन्दराबाद नया शहर है व हैदराबाद-सिकन्दराबाद नगरद्वय के बीच हुसैन सागर झील है, जो कि टैंक बंद के नाम से भी प्रसिद्ध है।

आजादी के पूर्वा हैदराबाद स्टेट भारत का सबसे समृद्ध राज्य था एवं यहां के निजाम की गिनती विश्व के सबसे अमीर लोगों में आती थी। निजाम के न्योते पर उत्तर भारत व राजस्थान के कई व्यापारियों एवं प्रशासकों ने हैदराबाद को अपना कर्म क्षेत्र व नया निवास बनाया। आजादी के पश्चात लोह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल ने 17 सितम्बर 1948 को इसका विलय भारत में किया।

आज हैदराबाद भारत के आई. टी. क्षेत्र की दूसरी राजधानी मानी जाती है एवं भारतवर्ष के प्रमुख व चर्चित शहरों में एक है। इसे दक्षिण भारत का द्वार भी कहा जाता है। यह सम्पूर्ण भारतवर्ष से सड़क, रेल, हवाई मार्ग से जुड़ा हुआ है।

चारमीनार, मक्का मस्जिद, चोमौहल्ला महल, फलकनुमा महल, गोलकोंडा गढ़, कुतबशाही गुम्बज, पैगाह मकबरे, पुरानी हवेली, सालार जंग संग्रहालय, टोली मस्जिद पुराने शहर के आकर्षण है, तो वहीं नए शहर में स्टेट संग्रहालय, बिरला मंदिर, बिरला प्लानेटोरियम व साइंस म्यूजियम, हाईटेक सिटी, हाईटेक्स, टैंक बंद, बुद्ध प्रतिमा, नेक्लस रोड, रामोजी फिल्म सिटी इत्यादि नए शहर के दर्शनीय स्थल हैं।

लगभग 90 किलोमीटर दूर अवस्थित, 2000 वर्ष पुराना कुलपाकजी जैन मंदिर की गिनती भारत के प्राचीन जैन मंदिरों में आती हैं। इसका मुख्य आकर्षण भगवान महावीर की विलक्षण मूर्ति है जो फीरोजा

पत्थर से निर्मित है। जैन रत्न श्री सुरेन्द बाबू लुनिया की अध्यक्षता में इस मंदिर की देख-रेख हो रही है। पर्यटक इनके अलावा यहां के लजीज खाने से भी मोहित हैं, खासकर हैदराबादी बिरयानी, कराची बिस्कुट एवं दक्षिण व्यंजन।

इसके अलावा हैदराबाद में प्रमुख शिक्षण संस्थान आई. आई. टी., बी. आई. टी. एस. पिलानी, आई. आई. आई. टी., ओस्मानिया व हैदराबाद विश्वविद्यालय हैं। कई बड़े अनुसंधान केन्द्र व अस्पताल हैं- राष्ट्रीय रक्षा, जीनोम वैली, नैनो टेक्नॉलजी पार्क, फार्मा व एल. वी. प्रसाद, ए. आई. जी., एन. आई. एम. एस., के. आई. एम. एस. कामीनेनि, अपोलो इत्यादि।

बगड़ी निवासी दौलतरामजी कातरेला हैदराबाद में बसने वाले सर्वप्रथम तेरापंथी थे। तत्पश्चात् गणाधिपति पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी की दक्षिण यात्रा के अंतिम पड़ाव 1970 मर्यादा महोत्सव, हैदराबाद में 55 तेरापंथी परिवार थे। वर्तमान में बृहत्तर हैदराबाद में लगभग 1500 तेरापंथी परिवार हैं। हैदराबाद, सिकन्दराबाद व बोलारम में तेरापंथ भवन निर्मित है।

गणाधिपति पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी का 29 जनवरी 1970 को चारमीनार से भव्य जुलूस से स्वागत हुआ। 2 फरवरी 1970 को गुजराती स्कूल, सिकन्दराबाद व 3 फरवरी 1970 का साधना मंदिर, बोलारम में प्रवास हुआ। 1770 के मर्यादा महोत्सव का भव्य आयोजन अम्बरपेट स्थित पुलिस आवास ''महावीर नगर'' उपमित कॉलोनी में हुआ। इस मर्यादा महोत्सव में अणुव्रत आंदोलन, सर्वोदय सम्मेलन, विभिन्न संघ प्रभावक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। 23 फरवरी 1970 को मर्यादा महोत्सव का मुख्य आयोजन हुआ। हैदराबाद के समस्त जैन समाज (चारों सम्प्रदाय) ने इससे सक्रिय सहभागिता दर्ज की।

हैदराबाद में सर्वप्रथम मुनिश्री घासीरामजी स्वामी ने 1932 में चातुर्मास किया। तत्पश्चात् आचार्य प्रवरों की कृपा से संघ के एक से एक विद्वान्, विदुषी साधु-साध्वियों के चातुर्मासों का लाभ हैदराबाद प्रवासियों को मिला है। उनमें उल्लेखनीय है शासन-स्तम्भ मंत्री मुनिश्री सुमेरमलजी (लाडनूं) एवं सहवर्ती मुनिश्री उदितकुमारजी के लगातार दो चातुर्मास जिनमें हैदराबाद समाज से धर्म-संघ में पहली दीक्षा 2005 में प्रेक्षा-प्रणेता आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के करकमलों द्वारा जयपुर में साध्वी कान्ताश्रीजी की हुई।

2013 में आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मुनिश्री वर्धमानजी को बीदासर में दीक्षा प्रदान कर हैदराबाद को फिर से अनुग्रहित किया। पूज्यप्रवर की अनुकम्पा से 2019 का चातुर्मास मुनिश्री अर्हतकुमारजी का हुआ।

संयोग की बात है कि अब तक हैदराबाद में कुल 50 चातुर्मास हुए हैं एवं युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी के पदार्पण को भी 50 वर्ष हो चुके हैं।

हैदराबाद का सकल समाज पलकें बिछाए गणाधिपति पूज्य गुरुदेव के सुविख्यात सुशिष्य महातपस्वी महातेजस्वी महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमणजी को हैदराबाद की धरा पर स्वागत करने के लिए लालायित है।

अहिंसा यात्रा द्वारा जन-जन का उद्धार करने वाले परम कृपालु आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ 14 जून 2020 को चंदानगर में पदार्पण करेंगे।

हैदराबाद में धर्म-संघ की चारों मूलक संस्थाएं : तेरापंथी सभा, महिला मण्डल, युवक परिषद एवं प्रोफेशनल फोरम सक्रियता एवं जागरूकता से अपना कार्य कर रही हैं।

हैदराबाद तेरापंथ धर्म-संघ के समस्त अनुयायी पलकें बिछाए परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के चरण-रजों का सोपान करने को उत्सुक है। पूज्य प्रवर ने हैदराबाद वासियों को सवाया चातुर्मास प्रदान कर असीम अनुकम्पा बरसायी है। साथ ही आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के जन्म शताब्दी समारोह का अंतिम चरण (17 से 19 जून 2020) प्रदान भी किया। हम सभी हैदराबाद वासी आपश्री के प्रति आजीवन कृतज्ञ रहेंगे।

देश-विदेश में फैले समस्त श्रावक-श्राविकाओं से विशेष अनुरोध एवं आमंत्रण देते हुए परम गौरव की अनुभूति हो रही है कि आपके आतिथ्य सत्कार का अवसर हमें अवश्य दें। चातुर्मास व्यवस्था समिति आपकी निर्विघ्न धर्मोपासना के लिए प्रतिबद्ध है।

निवेदक

सकल हैदराबाद तेरापंथ परिवार

करबद्ध, विशेषकर

आचार्यश्री महाश्रमण चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति

हैदराबाद

मनोज कुमार दूगड़	**महेन्द्र चंद भण्डारी**
महामंत्री	**अध्यक्ष**
9449051100	**9849051678**

परमश्रद्धेय शान्तिदूत महातपस्वी

आचार्यश्री महाश्रमणजी

सुस्वागतम्

निवेदक

सकल हैदराबाद तेरापंथ परिवार

करबद्ध, विशेषकर

आचार्यश्री महाश्रमण चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति

हैदराबाद

मनोज कुमार दूगड़
महामंत्री
98490-51100

महेन्द्र चंद भण्डारी
अध्यक्ष
98490-51678

अध्यात्म ऊर्जा का केन्द्र : जैन विश्व भारती

विश्व इतिहास में मानव संस्कृति को सार्थक दिशा देने वाले महापुरुषों में क्रांतिकारी द्रष्टा, विश्वसंत गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के स्वप्नों की साकार प्रतिमान जैन विश्व भारती की स्थापना शिक्षा, शोध साधना एवं सेवा के विशेष उद्देश्यों के साथ सन् 1970 में राजस्थान के नागौर जिले के लाडनूं नगर में हुई। जैन विश्व भारती अहिंसा और शांति का अनुपम सांस्कृतिक केन्द्र है। शिक्षा, शोध, साहित्य, साधना, सेवा, संस्कृति और समन्वय इन सात महान प्रवृत्तियों को अपने आप में समेटे हुए यह संस्था तपोवन का रूप ले चुकी है और यहां के प्रकंपन यह इंगित दे रहे हैं कि यह प्राचीन काल से कोई तपोभूमि रही है। तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी के आध्यात्मिक संरक्षण व निर्देशन में संस्था निरन्तर गतिशील है।

शिक्षा

जैन विश्व भारती की स्थापना जिन उद्देश्यों को लेकर हुई थी उनमें से एक मुख्य प्रवृत्ति है–शिक्षा। इस उद्देश्य की पूर्ति यहां प्राथमिक से विश्वविद्यालय स्तर तक समस्त शैक्षणिक गतिविधियां संचालित की जा रही हैं। जैन विश्व भारती के तत्त्वावधान में वर्तमान में विमल विद्या विहार सीनियर सेकेण्डरी स्कूल तथा महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर, टमकोर एवं बैंगलोर संचालित हैं। मातृ संस्था जैन विश्व भारती के संरक्षण में जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय से अब तक लगभग 45,000 विद्यार्थियों ने शिक्षा प्राप्त की है जिनमें सैकड़ों विद्यार्थियों ने उच्च पदों पर पहुंच कर संस्था का गौरव बढ़ाया है।

भावी पीढ़ी में संस्कारों के संरक्षण तथा आध्यात्मिक व नैतिक शिक्षा के विकास की दृष्टि से **'समण संस्कृति संकाय'** के अंतर्गत जैन विद्या की शिक्षा प्रदान की जाती है।

सेवा

शिक्षा के साथ-साथ सेवा के क्षेत्र में भी जैन विश्व भारती अग्रणी है। जैन विश्व भारती परिसर में **'सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला'** तथा बीदासर में **'श्रीमद् आचार्यश्री तुलसी महाप्रज्ञ मानव कल्याण केन्द्र'** सुचारु रूप से संचालित हैं। **'सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला'** द्वारा चिकित्सा सेवा विषयक जन-कल्याणकारी प्रवृत्ति का संचालन किया जाता है। यहां जिन औषधियों का निर्माण होता है वे आयुर्वेद विभाग से प्राप्त ड्रग मैन्युफैक्चरिंग लाइसेन्स के अंतर्गत जी.एम.पी. प्रमाणित हैं।

प्राकृतिक चिकित्सा, एक्युप्रेशर एवं फिजियोथेरेपी पद्धति से रोगियों की चिकित्सा हेतु **'श्रीमद् आचार्यश्री तुलसी मानव कल्याण केन्द्र'** की स्थापना जैन विश्व भारती की एक इकाई के रूप में बीदासर में की गई। यहां आधुनिक उपकरणों द्वारा व्यायाम की सुविधा उपलब्ध है। वर्तमान में केन्द्र के अंतर्गत होमियोपैथिक चिकित्सा से रोगियों को स्वास्थ्य लाभ दिया जा रहा है।

साधना

प्रेक्षाध्यान–आचार्यश्री महाप्रज्ञजी द्वारा निर्देशित प्रेक्षाध्यान पद्धति के निरंतर प्रयोग, प्रशिक्षण एवं शोध का केन्द्र है जैन विश्व भारती स्थित–**'तुलसी अध्यात्म नीडम्' एवं आचार्य तुलसी अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान केन्द्र।** जहां योग एवं अध्यात्म साधना के अभ्यास एवं प्रशिक्षण के द्वारा व्यक्ति के भाव परिष्कार व संवेग परिवर्तन के प्रयोग होते हैं। सन् 1978 में स्थापित तुलसी अध्यात्म नीडम् का उद्देश्य है–प्रेक्षाध्यान का प्रशिक्षण, विकास एवं अधिकाधिक प्रचार-प्रसार करना।

अध्यात्म, योग और अन्य जीवनोपयोगी विषयों पर आधारित मासिक पत्रिका **'प्रेक्षाध्यान'** का विगत 36 वर्षों से जैन विश्व भारती के अंतर्गत तुलसी अध्यात्म नीडम् द्वारा प्रकाशन किया जा रहा है।

साहित्य

साहित्य प्रकाशन एवं वितरण–साहित्य प्रकाशन एवं वितरण जैन विश्व भारती की महत्त्वपूर्ण गतिविधि है। आगम, जैन विद्या, जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान आदि से संबंधित साहित्य के साथ आचार्य भिक्षु, श्रीमद् जयाचार्य, आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ, आचार्य महाश्रमण एवं साधु-साध्वियों, समण-समणीवृंद तथा शोधार्थियों द्वारा लिखित/सम्पादित साहित्य का प्रकाशन विगत लगभग 40 वर्षों से किया जा रहा है। जैन विश्व भारती गत 2-3 वर्षों से अंतर्राष्ट्रीय स्तर के अन्य प्रकाशकों के साथ मिलकर भी साहित्य प्रकाशन व वितरण का कार्य कर रही है।

शोध

जैन विश्व भारती की स्थापना के उद्देश्यों में **शोध** का विशेष स्थान है। पूज्य आचार्यश्री तुलसी ने इसकी स्थापना के उद्देश्यों में जैन धर्म एवं दर्शन के उच्च-स्तरीय शोध संस्थान की परिकल्पना सामने रखी थी। उसी परिकल्पना की सुखद परिणति स्वरूप जैन विश्व भारती की शोध प्रवृत्ति के अंतर्गत आगम सम्पादन का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कार्य हो रहा है। यह कार्य पूर्व में आचार्यश्री तुलसी व आचार्यश्री महाप्रज्ञजी एवं वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमणजी के

निर्देशन में चल रहा है। आगम सम्पादन के प्रबन्धन का सारा दायित्व जैन विश्व भारती द्वारा निर्वहन किया जा रहा है।

हस्तलिखित एवं पाण्डुलिपि विभाग–जैन विश्व भारती में अनेक प्राचीन एवं दुर्लभ जैन हस्तलिखित ग्रन्थ उपलब्ध हैं जिनकी सुरक्षा एवं संरक्षण जैन विश्व भारती के हस्तलिखित एवं पाण्डुलिपि विभाग के अंतर्गत किया जा रहा है।

समन्वय

पुरस्कार एवं सम्मान–जैन विश्व भारती द्वारा कुल 9 पुरस्कारों का संचालन विभिन्न प्रायोजकों के सहयोग से किया जा रहा है। आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य पुरस्कार, आचार्य तुलसी अनेकान्त सम्मान, आचार्य तुलसी प्राकृत पुरस्कार, संघ सेवा पुरस्कार, जय तुलसी विद्या पुरस्कार, आचार्य महाप्रज्ञ अहिंसा प्रशिक्षण सम्मान, महादेवलाल सरावगी जैन आगम मनीषी पुरस्कार, गंगादेवी सरावगी जैन विद्या पुरस्कार आदि पुरस्कारों के द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में सेवाएं देने एवं उल्लेखनीय कार्य करने वालों को प्रोत्साहित किया जाता है और उनकी प्रतिभा का सम्यक् मूल्यांकन किया जाता है।

संस्कृति

तुलसी कला दीर्घा–जैन विश्व भारती में स्थित तुलसी कला दीर्घा (आर्ट गैलरी) में जैन धर्म को दर्शाने वाली प्राचीन एवं अर्वाचीन चित्रों एवं हस्तकलाओं की प्रचुर सामग्री का संग्रह किया गया है। दुर्लभ, कलापूर्ण, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व की प्रदर्शन योग्य सामग्री के साथ तेरापंथ के आचार्यों को सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा प्रदत्त राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय सम्मानों से संबंधित प्रतीक चिह्न, प्रशस्ति पत्र एवं अन्य सामग्री को यहां पर शो विंडो में कलापूर्ण ढंग से सुसज्जित किया गया है।

उक्त सभी गतिविधियों के साथ सुरम्य हरीतिका से सुशोभित परिसर जैन विश्व भारती के बाह्य सौन्दर्य की मुखर कहानी कह रहा है। जैन विश्व भारती परिवार आप सभी को सादर आमंत्रित करता है। आप यहां पधारें एवं यहां संचालित गतिविधियों के बारे में जानकारी प्राप्त करें। संस्था के विकास हेतु आपके अमूल्य सुझावों एवं विचारों का स्वागत है। अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें–

जैन विश्व भारती
पोस्ट : लाडनूं - 341306, जिला : नागौर (राज-)
फोन : (01581) 226080/224671
ई-मेल : contact@jvbharati.org ,
sec@jvbharati.org
वेबसाईट : www. jvbharati.org

महाप्रज्ञ वाङ्मय

पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ की जन्म शताब्दी के सुअवसर पर श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमणजी के निर्देशानुसार दिनांक 25 अक्टूबर 2016 को चतुर्मास काल में गुवाहाटी में निर्णय लिया गया कि आचार्यश्री महाप्रज्ञजी द्वारा रचित सम्पूर्ण साहित्य का समग्र संकलन किया जाए एवं महाप्रज्ञ वाङ्मय के रूप में पुर्नप्रकाशन किया जाए। इस हेतु आदर्श आधार तुलसी वाङ्मय का रहे। जैन विश्व भारती के लिए यह अत्यन्त गौरव का विषय है कि परमपूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के समग्र साहित्य के महाप्रज्ञ वाङ्मय के रूप में प्रकाशन का कार्य दायित्व प्राप्त हुआ।

आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी के परिप्रेक्ष्य में आचार्यश्री महाश्रमणजी की दृष्टि के अनुसार जैन विश्व भारती को प्रदत्त आचार्य महाप्रज्ञ के साहित्य के संदर्भ में आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य प्रबंधन समिति के अंतर्गत महाप्रज्ञ वाङ्मय का कार्य सुचारू गतिमान है। साध्वीवृंद, समणीवृंद के द्वारा जैन विश्व भारती की इस परियोजना हेतु महत्त्वपूर्ण श्रम किया जा रहा है। इस परियोजना में जैन विश्व भारती द्वारा 121 पुस्तकों के प्रकाशन का दायित्व लिया गया है। इन पुस्तकों के अतिरिक्त आचार्य महाप्रज्ञजी द्वारा लिखित अन्य 25 पुस्तकों को प्रकाशन भी किया जाएगा। वर्तमान में वाङ्मय के अंतर्गत समस्त पुस्तकों के कम्पोजिंग का कार्य पूर्ण हो चुका है एवं प्रेस द्वारा मुद्रण प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी गई है। महाप्रज्ञ वाङ्मय के विमोचन का लक्ष्य हुबली मर्यादा महोत्सव के दौरान रखा गया है।

महाप्रज्ञ वाङ्मय के अंतर्गत प्रकाशित होने वाली 25 अन्य पुस्तकों में से दो अंग्रेजी पुस्तकों का प्रकाशन जैन विश्व भारती द्वारा प्रतिष्ठित प्रेस प्रगति प्रकाशन एवं थाम्पसन प्रेस के माध्यम से करवाया गया। वाङ्मय श्रृंखला की अंग्रेजी पुस्तकwho is Jain Shrawak एवं Body & Soul पुस्तक का भी विमोचन हो चुका है।

जैन विश्व भारती की इस महत्त्वपूर्ण योजना हेतु 121 महानुभावों से अनुदान की घोषणा की गई है, समस्त घोषणाकर्ताओं के प्रति हार्दिक आभार। परियोजना के सुचारु संचालन हेतु समय-समय पर साहित्य प्रबंधन समिति की बैठकें आयोजित की गई एवं महत्त्वपूर्ण निर्णय भी लिए गए। 'महाप्रज्ञ वाङ्मय' के कार्य हेतु परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी का पावन आशीर्वाद एवं पथदर्शन प्राप्त हो रहा है, आचार्यप्रवर के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। आचार्यप्रवर के इंगितानुसार 'महाप्रज्ञ वाङ्मय' का कार्य मुख्यनियोजिका साध्वीश्री विश्रुतविभाजी के निर्देशन में संचालित है। मुख्यनियोजिकाजी के मार्गदर्शन हेतु हार्दिक कृतज्ञता। इस कार्य में अनेक साध्वियों एवं समणीवृंद का समय व श्रम नियोजन हो रहा है, उन सभी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। मुख्य रूप से कार्य की देखरेख हेतु मुमुक्षु डॉ. शांता जैन एवं सुश्री वीणा जैन की सेवाओं हेतु हार्दिक आभार। आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य प्रबंधन समिति के संयोजक श्री सुरेन्द्र चोरड़िया एवं समिति सदस्य श्री मनोज लुनिया, श्री संजय धारीवाल एवं श्री राकेश कठोतिया के सहयोग हेतु आभार।

आचार्य महाश्रमण

जन्म :	वि.सं. 2019, वैशाख शुक्ला नवमी (13 मई 1962) सरदारशहर
पिता :	स्व. श्री झूमरमलजी दूगड़
माता :	स्व. श्रीमती नेमादेवी दूगड़
दीक्षा :	वि.सं. 2031 वैशाख शुक्ला चतुर्दशी (5 मई 1974) सरदारशहर
अन्तरंग सहयोगी :	वि.सं. 2042, माघ शुक्ला सप्तमी (16 फरवरी 1986) उदयपुर
साझपति :	वि.सं. 2043, वैशाख शुक्ला चतुर्थी (13 मई 1986) ब्यावर
महाश्रमण पद :	वि.सं. 2046, भाद्रव शुक्ला नवमी (9 सितम्बर 1989) लाडनूं
युवाचार्य पद :	वि.सं. 2054, भाद्रव शुक्ला द्वादशी (14 सितम्बर 1997) गंगाशहर
आचार्य पदाभिषेक :	वि.सं. 2067, द्वितीय वैशाख शुक्ला दशमी (23 मई 2010) सरदारशहर
महातपस्वी :	वि.सं. 2064, भाद्रपद शुक्ला पंचमी (17 सितम्बर 2007) उदयपुर
शान्तिदूत :	वि.सं. 2068, ज्येष्ठ कृष्णा द्वादशी (29 मई 2011) उदयपुर
श्रमण संस्कृति उद्गाता :	वि.सं. 2069, आश्विन कृष्णा चतुर्दशी (14 अक्टूबर 2012) जसोल
प्रकाशित पुस्तकें :	आओ हम जीना सीखें, दुःख मुक्ति का मार्ग, क्या कहता है जैन वाङ्मय, संवाद भगवान से (भाग-1,2), शिक्षा सुधा, शेमुषी, मेरे गीत, धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, महात्मा महाप्रज्ञ, सुखी बनो, संपन्न बनो, विजयी बनो, रोज की एक सलाह, शिलान्यास धर्म का, अदृश्य हो गया महासूर्य, निर्वाण का मार्ग, परमसुख का पथ, १८ पाप।

आचार्यश्री महाश्रमण की प्रमुख कृतियां

दुःख मुक्ति का मार्ग

आचार्यश्री महाश्रमण ने इस पुस्तक में साधना के रहस्यों को प्रस्तुत किया है। सुख, शांति और आनंद की प्राप्ति में यह कृति मार्गदर्शक की भूमिका अदा करती है।

क्या कहता है जैन वाङ्मय

इस पुस्तक में जैन शास्त्रों में उपलब्ध सफलता के सूत्रों में से चुनिंदा मोतियों को पिरोया गया है। प्रस्तुत कृति आचार्यश्री महाश्रमण के हृदयस्पर्शी प्रवचनों का महत्त्वपूर्ण संग्रह है।

आओ हम जीना सीखें

जीता हर कोई है, किन्तु कलापूर्ण जीना कोई-कोई जानता है। प्रस्तुत पुस्तक में आचार्यश्री महाश्रमण ने कलात्मक जीवन के सूत्रों को प्रकाशित करते हुए जीवन की प्रत्येक क्रिया का व्यवस्थित प्रशिक्षण दिया है। वस्तुतः यह कृति 'कैसे जीएं' इस प्रश्न का सटीक समाधान है।

संवाद भगवान से

प्रतिष्ठित जैनागम उत्तराध्ययन के २९वें अध्ययन पर आधारित इस पुस्तक में भगवान महावीर और उनके प्रमुख शिष्य गौतम के रोचक संवाद के माध्यम से मन में संशय पैदा करने वाले प्रश्नों को विस्तृत रूप में समाहित किया गया है। यह कृति दो भागों में उपलब्ध है।

महात्मा महाप्रज्ञ

युगप्रधान आचार्यश्री महाप्रज्ञ तेरापंथ के आचार्य, अनुशास्ता, साहित्यकार और प्रवचनकार थे। इन सबसे पहले वे एक सन्त थे, महात्मा थे, उनकी आत्मा में महानता थी। उनके उत्तराधिकारी आचार्यश्री महाश्रमण ने उन्हें नजदीकी से देखा और जाना। प्रस्तुत पुस्तक में श्री महाप्रज्ञ के नौ दशकों के इतिहास और रहस्यों को उजागर किया गया है।

रोज की एक सलाह

लघु आकार में प्रस्तुत यह पुस्तक 'गागर में सागर' उक्ति को चरितार्थ करती है। आचार्य महाश्रमण द्वारा सूक्तियों में दी गई 'रोज की एक सलाह' हर व्यक्ति के लिए प्रतिदिन की पर्याप्त खुराक है। सदा साथ रखी जा सकने वाली यह कृति न केवल सफलता की प्राप्ति में सहायक है, अपितु व्यक्तिगत समस्याओं के समाधान में भी इसकी उपयोगिता असंदिग्ध है।

१. सुखी बनो २. सम्पन्न बनो ३. विजयी बनो

आचार्य महाश्रमण ने प्रस्तुत तीनों पुस्तकों में श्रीमद्भगवद्गीता और उत्तराध्ययन की तुलनात्मक विवेचना करते हुए साधक का सुन्दर पथदर्शन किया है। तीन भागों में उपलब्ध यह ग्रन्थमाला जहां दो महनीय ग्रन्थों को युगीन रूप में प्रस्तुति देती है, वहीं अध्यात्मरसिकों के लिए पोषक का कार्य भी करती है।

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं

आचार्यश्री महाश्रमण की प्रस्तुत पुस्तक में जैन तत्त्वज्ञान, साधना के प्रयोगों, महापुरुषों और उनके अवदानों आदि विविध विषयों से संबद्ध उपयोगी और प्रेरणास्पद सामग्री संजोई गई है।

शिलान्यास धर्म का

धर्म का आदि बिन्दु है–सम्यक्त्व। आचार्य महाश्रमण की प्रस्तुत कृति सम्यक्त्व, उसके लक्षण, दूषण, भूषण तथा देव, गुरु, धर्म आदि विषयों पर आधारित प्रवचनों और प्रश्नोत्तरों का संग्रह है। जैन अनुयायियों की आस्था के दृढ़ीकरण में यह कृति सहायक की भूमिका अदा करती है।

निर्वाण का मार्ग

अध्यात्म साधना का अन्तिम लक्ष्य है–निर्वाण। भगवान् महावीर और गौतम बुद्ध ने वर्षों तक साधना कर निर्वाण के रहस्यों को प्राप्त किया और जनता को दिखाया–निर्वाण का मार्ग। जैनागम उत्तराध्ययन और बौद्धग्रंथ धम्मपद पर आधारित आचार्यश्री महाश्रमण की प्रलम्ब प्रवचनमाला के चुनिंदा मोतियों से निर्मित इस पुस्तक को पढ़कर अध्यात्मरसिक व्यक्ति परम सुख का पथ प्राप्त कर सकता है।

● प्राप्ति स्थान ●

जैन विश्व भारती, लाडनूं–8742004849, आचार्य महाश्रमण प्रवास स्थल–7002359890

ई-मेल : **contact@jvbharati.org, books@jvbharati.org**

नवाह्निक आध्यात्मिक अनुष्ठान

दुनिया में शक्ति का महत्त्व होता है। शक्तिहीन व्यक्ति अपने आप में रिक्तता अनुभव करता है। कभी-कभी शक्तिविहीन मनुष्य अपने आपको दयनीय और असहाय भी अनुभव करता है। सबसे बड़ी शक्ति आध्यात्मिक शक्ति होती है। अन्य शक्तियों का भी अपना-अपना महत्त्व होता है।

गुरुदेवश्री तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने नवाह्निक आध्यात्मिक अनुष्ठान का एक नया उपक्रम प्रारंभ किया। आचार्यश्री महाश्रमण के निर्देशन में वह उसी रूप में विधिवत् चल रहा है। उसका उद्देश्य है—आत्मशुद्धि और ऊर्जा का विकास। उसकी कालावधि आश्विन शुक्ला प्रथमा से प्रारंभ कर निरंतर नौ दिनों की निर्धारित की गई है। चैत्र शुक्ला प्रथमा से प्रारंभ कर निरंतर नौ दिनों की कालावधि में भी इसकी आराधना की जा सकती है। संपूर्ण विधि एवं समय सारिणी इस प्रकार निश्चित की गई है—

प्रातः ९.३० से १०.००

'चंदेसु निम्मलयरा आइच्चेसु अहियं पयासयरा
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु' — का पांच बार पाठ
चंदेसु निम्मलयरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु — का तेरह बार पाठ
आइच्चेसु अहियं पयासयरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु—का तेरह बार पाठ
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु — का तेरह बार पाठ
आरोग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु — का तेरह बार पाठ
सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु — का इक्कीस बार पाठ
'चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु।' — का पांच बार पाठ

ॐ ह्रीं क्लीं ब्लूं

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो।
देवा वि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो।।१।।
जहा दुमस्स पुप्फेसु, भमरो आवियई रसं।
न य पुप्फं किलामेइ, सो य पीणेइ अप्पयं।।२।।
एमेए समणा मुत्ता, जे लोए संति साहुणो।
विहंगमा व पुप्फेसु, दाणभत्तेसणे रया।।३।।
वयं च वित्तिं लब्भामो, न य कोई उवहम्मई।
अहागडेसु रीयंति, पुप्फेसु भमरा जहा।।४।।
महुकारसमा बुद्धा, जे भवंति अणिस्सिया।
नाणापिंडरया दंता, तेण वुच्चंति साहुणो।।५।।—का सात बार पाठ

प्रातः १०.०० से १०.३०—आध्यात्मिक प्रवचन

मध्याह्न २.३० से ३.१५ आगम पाठ का स्वाध्याय।

(दसवेआलियं, उत्तरज्झयणाणि आदि के मूल पाठ का स्पष्ट व शुद्ध उच्चारण एवं व्याख्या)

पश्चिम रात्रि–४.४५ से ५.३०

उवसग्गहरं पासं (उपसर्गहर स्तोत्र) आदि पांच श्लोक एवं 'ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमिऊण' का नौ बार पाठ। फिर 'विघनहरण' का जप।

उपसर्गहर स्तोत्र

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं।
विसहर-विसनिन्नासं, मंगल-कल्लाण आवासं।।१ ।।
विसहर-फुलिंग-मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ।
तस्स गह-रोग-मारी, दुट्ठ जरा जंति उवसामं।।२ ।।
चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ।
नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख-दोहग्गं।।३ ।।
तुह सम्मत्ते लद्धे, चिन्तामणि-कप्पपायपब्भहिए।
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं।।४ ।।
इह संथुओ महायस! भत्तिब्भर-निब्भरेण हियएण।
ता देव! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचंद।।५ ।।

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमिऊण पास
विसहर वसह जिण फुल्लिंग ह्रीं श्रीं नमः ।।

विघनहरण

विघनहरण मंगलकरण, स्वाम भिक्षु रो नाम।
गुण ओलख सुमिरण करै, सरै अचिंत्या काम।।

जप और आगम-स्वाध्याय के साथ तप का योग भी आवश्यक माना गया है। तप में एकासन, आयंबिल, षड्विगय वर्जन, पंच विगय वर्जन और दस प्रत्याख्यान में से किसी एक तप की आराधना इस अवधि में की जाए। व्यक्तिगत इच्छा के अनुसार नौ दिनों तक एक ही तप अथवा वैकल्पिक तप की आराधना की जा सकती है।

निर्धारित कालावधि और करणीय क्रम को यथावत् रखते हुए स्थानीय सुविधानुसार समय में परिवर्तन भी किया जा सकता है। साधु-साध्वियों की भांति श्रावक-श्राविकाएं भी इसमें संभागी बन सकते हैं। संभागी श्रावक-श्राविकाओं के लिए निम्नांकित नियम भी अनुष्ठान काल में पालनीय हैं–

ब्रह्मचर्य का पालन, रात्रि भोजन-विरमण (चौविहार/तिविहार), जमीकंद का वर्जन।

अनुष्ठान का प्रारंभ प्रथम दिन प्रातः ९.३० से यानी प्रातःकालीन सत्र में किया जाए एवं अनुष्ठान का समापन रात्रि के ५.३० बजे यानी रात्रिकालीन सत्र में किया जाए।

स्पष्ट लक्ष्य के साथ जीने वाला व्यक्ति अपने जीवन को
सार्थक व सुफल बना सकता है।

-आचार्य महाश्रमण

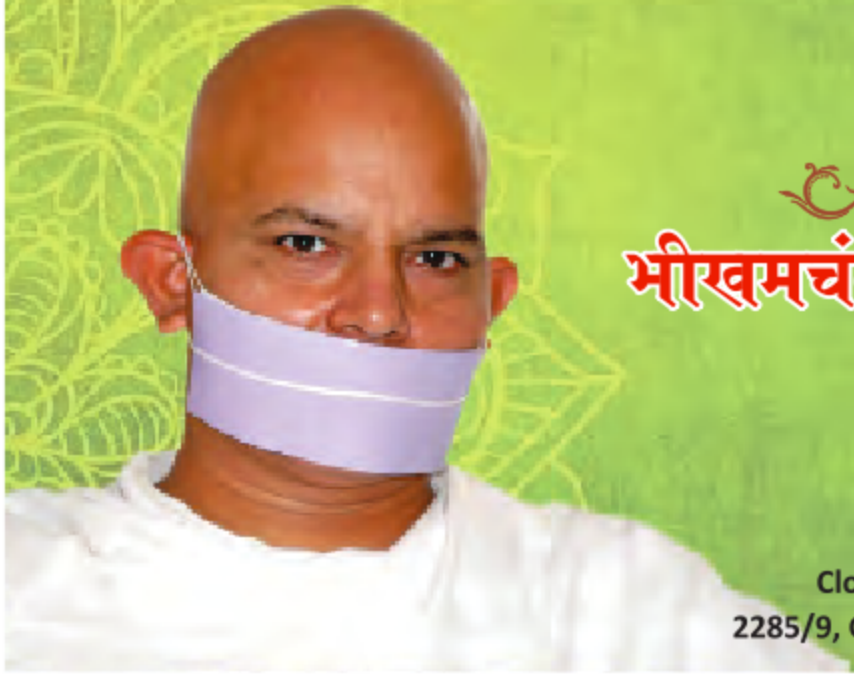

श्रद्धावनत

भीखमचंद जीतमल चोरड़िया

बीदासर

J. M. Jain

Cloth Merchant & Commission Agents

2285/9, Gali Hinga Beg, Tailak Bazar, Delhi-110006

जैन विश्व भारती, लाडनूं में संचालित

सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला

शास्त्रीय विधान से निर्मित जीएमपी प्रमाणित विश्वसनीय विशिष्ट आयुर्वेदिक औषधियां

SEVABHAVI
DEDICATED TO AYURVED

क्र. सं.	औषध का नाम	उपयोग	वजन (ग्राम)	मूल्य
01.	सेवाभावी सुपर्वप्राश (मकरध्वज, केशर, चांदी भस्म युक्त)	शक्तिवर्धक व स्फूर्तिदायक पौष्टिक योग	900 500	800/- 480/-
02.	सेवाभावी स्पेशलप्राश (केशर, रससिंदूर,पौष्टिक योग चांदी भस्म युक्त)	शक्तिवर्धक व स्फूर्तिदायक	900 500	620/- 370/-
03.	दंतफ्रेश टूथपेस्ट	दंत रोगों में उपयोगी	100	50/-
04.	सेवाभावी प्रतिदिनम् चूर्ण	कब्ज को दूर करने में उपयोगी	100 500	60/- 270/-
05.	सेवाभावी अग्निसंदीपन चूर्ण	पाचक एवं गैस निवारक	100 500	130/- 590/-
06.	सेवाभावी तुलसीप्रभावटी	मधुमेह (शुगर) में उपयोगी	30 100	170/- 540/-
07.	सेवाभावी अर्जुनघनसत्व वटी	रक्तचाप व हृदयरोग में उपयोगी	10 100	40/- 360/-

08.	सेवाभावी दिव्यतेज वटी	जुखाम, बुखार आदि में उपयोगी	05	80/-
09.	सेवाभावी कंठसुधाकर वटी	कफ, खांसी आदि में उपयोगी	10	50/-
			100	450/-
10.	सेवाभावी अमृतम् पिल्स	मुख शोधक	05	80/-
11.	सेवाभावी सितोपलादि योग	पुरानी खांसी, श्वास, फेफड़ों के रोग में उपयोगी	30 पुड़िया	270/-

: नोट :

✦ औषधियां चिकित्सक की सलाहनुसार सेवन करें।

✦ सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला द्वारा निर्मित उक्त औषधियों के अतिरिक्त लगभग 150 प्रकार की अन्य औषधियां पूर्ण शास्त्रीय विधि से प्रामाणिक रूप में तैयार की जाती है।

औषधियां मंगवाने के लिए संपर्क करें

सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला

जैन विश्व भारती परिसर, पोस्ट : लाडनूं-341306
जिला : नागौर (राजस्थान)
संपर्क : 01581-226969, 97849-31457, 90576-05440
Email : contact@sevabhaviayurveda.com

ऑनलाईन स्टोर से प्राप्त करने हेतु : www.sevabhaviayurveda.com

✳ महेन्द्रा आयुर्वेद सेन्टर, बैंगलोर , 94820-82782 ✳ आचार्य महाश्रमण प्रवास स्थल (चल औषधि विक्रय केन्द्र) 99283-93902

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

अपने आराध्य के प्रति
सर्वात्मना समर्पित हो जाओ।
फिर देखो,
मंजिल तुम्हारा स्वागत करने तैयार मिलेगी।

-आचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

अमरचंद धरमचंद लुंकड़

राणावास - चेन्नई

विषय-प्रवेश

कोष्ठक विवरण

जय-तिथि-पत्रक का पहला कोष्ठक अंग्रेजी दिनांक का है और फिर वार का है। उसके बाद तिथि का कोष्ठक है। उसके आगे के दो कोष्ठक में क्रमशः इतने बजे व मिनट तक का संकेत है। छठा कोष्ठक नक्षत्र का है। सातवें व आठवें में नक्षत्र के कितने बजे व मिनट तक का सूचन है। नौवें व दसवें में क्रमशः सूर्योदय व सूर्यास्त कितने बजे होता है इसका निदर्शन है। सूर्योदय व सूर्यास्त लाडनूं को केन्द्र मानकर स्टेण्डर्ड टाइम में दिया गया है। ग्यारहवें कोष्ठक में प्रथम प्रहर कितने बजे आती है तथा बारहवें कोष्ठक में दिन का एक प्रहर कितने घंटे व मिनट का होता है, इसका दिग्दर्शन है। तेरहवें कोष्ठक में चन्द्रमा तथा चौदहवें कोष्ठक में विशेष विवरण के अंतर्गत योग तथा भद्राकाल है। ये भी बजे व मिनट के क्रम से हैं।

तिथि-पत्रक में बजे-मिनट रेलवे समय-सारिणी पद्धति से दिये गये हैं। मध्य रात्रि में १२ बजे से रेलवे समय सारिणी के अनुसार २४ बजे होता है, के बाद ०० समय से शुरू कर २४ बजे तक २४ घंटे मानते हुए चलता है। जैसे–चैत्र शुक्ला तृतीया २२/१४ बजे है। इसका तात्पर्य है–यह तिथि उस दिन २२ बजकर १४ मिनट तक है। अर्थात् रात्रि में १० बजकर १४ मिनट तक है। चैत्र शुक्ला प्रतिपदा १७/२८ बजे है। इसका अर्थ है यह तिथि उस दिन सायं ५ बजकर २८ मिनट तक रहेगी। इसी तरह चैत्र शुक्ला द्वादशी को मघा नक्षत्र १४/५८ बजे है। अर्थात् उस दिन दोपहर २ बजकर ५८ मिनट तक है।

तिथि व नक्षत्र के बजे-मिनट बराबर में हैं। वे बजे, मिनट से स्पष्ट हैं। चंद्रमा के आगे संख्या ऊपर नीचे हैं। चंद्रमा के ऊपर वाली संख्या बजे व नीचे वाली मिनट है। जैसे–चैत्र शुक्ला द्वितीया को चंद्रमा मेष राशि में $\frac{०७}{१७}$ अर्थात् प्रातः ७ बजकर १७ मिनट पर मेष राशि में प्रवेश करेगा। चंद्रमा के लिए इतना विशेष है कि उसका प्रवेश काल दिया है। विशेष विवरण स्पष्ट है। इसमें योग व अन्य के आगे संख्या बराबर में हैं।

तिथि, नक्षत्र आदि के साथ जहां शून्य (०) अंकित है, वह उस दिन 'पूरे दिन और पूरी रात' है अर्थात् वह तिथि या नक्षत्र उस दिन सूर्योदय से पूर्व शुरू हो गया और दूसरे दिन सूर्योदय होने के बाद तक रहा। वह समय अगले दिन की पंक्ति में है। जैसे–बैशाख कृष्णा द्वादशी को पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के आगे (०) अंकित है जिससे यह नक्षत्र पूरे दिन-रात है। बैशाख कृष्णा अमावस्या (प्रथम) के आगे (०) अंकित है अर्थात् यह तिथि पूरे दिन-रात है।

सूर्यास्त से लेकर सूर्योदय होने के ठीक पहले तक का समय ''रात्रि समय'' और उसके बाद ''दिवा समय'' होता है।

विशेष विवरण के कोष्ठक में प्रदत्त योगों के सांकेतिक अक्षरों में पूर्ण नाम इस प्रकार हैं :–

- र.–रवि योग (शुभ व कुयोगनाशक)
- अ.–अमृत सिद्धि योग (शुभ)
- राज.–राजयोग (शुभ)
- कु.–कुमार योग (शुभ)
- सि.–सिद्धि योग (शुभ)
- मृ.–मृत्यु योग (अशुभ)

● व्या.–व्याघात योग (अशुभ) ● वै.–वैधृति (अशुभ)
● व्य.–व्यतिपात योग (अशुभ) ● ज्वा.–ज्वालामुखी योग(अशुभ)
● पं.–पंचक (अशुभ) घास, लकड़ी एकत्र करने, घर की छत बनाने, दक्षिण यात्रा करने में वर्जित।
● भ.–भद्राकाल (शुभ-अशुभ दोनों) ● यम.–यमघंट योग (अशुभ)

नोट : शास्त्रीय मान्यता है कि मध्याह्न के पश्चात् अशुभ योगों का दोष नहीं रहता।

भद्रा-काल

श्रेष्ठ कार्यों में भद्रा-काल होना वर्जित है, किन्तु शास्त्रकारों ने भद्रा को शुभ भी माना है, जो इस प्रकार है–मेष, वृष, मिथुन और वृश्चिक के चंद्रमा में भद्रा का वास स्वर्ग में रहता है। यह भद्राकाल शुभ और ग्राह्य है।

कन्या, तुला, धनु और मकर के चन्द्रमा में भद्रा का वास नागलोक (पाताल) में रहता है। यह भद्राकाल भी लक्ष्मीदायक-धनदायक होने से शुभ है।

कुंभ, मीन, कर्क और सिंह के चंद्रमा में भद्रा का वास मृत्युलोक में होता है। यह अशुभ है, इसलिए शुभ कार्यों में सर्वथा वर्जनीय है।

भद्राकाल समय-विशेष के साथ शुभ भी बताया है।

शुक्ल पक्ष की भद्रा वृश्चिक संज्ञक और कृष्ण पक्ष की भद्रा सर्वसंज्ञक है। मतान्तर से रात्रि की भद्रा वृश्चिक संज्ञक और दिन की भद्रा सर्वसंज्ञक है। सर्वसंज्ञक भद्रा के मुख की पांच घटी (२ घंटा) और वृश्चिक संज्ञक भद्रा की पुच्छ की तीन घटी (१ घंटा १२ मि.) शुभ कार्य में त्याज्य है।

तिथि-पत्रक के विवरण पृष्ठों के बाद कोलकाता, दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, बैंगलोर व जोधपुर–इन छह शहरों के महीने की पहली व सोलहवीं तारीख के सूर्योदय व सूर्यास्त का समय दिया गया है।

समय-सारिणी के बाद नक्षत्र के नाम का अक्षर और राशि की तालिका है। फिर राशि स्वामी एवं गुरु दर्शन के नक्षत्र हैं। फिर घातचक्र है। इसके बाद यात्रा में चंद्र विचार, योगिनी विचार चक्र, दिशाशूल विचार चक्र तथा काल-राहू विचार चक्र है। इनसे अगले पृष्ठ पर सुयोग-कुयोग चक्र है। अंतिम पृष्ठ पर पोरसी प्रमाण, राहुकाल, दिन एवं रात्रि के चौघड़िये हैं।

चौघड़िया-अवलोकन

दिन का चौघड़िया सूर्योदय से प्रारंभ होता है तथा रात्रि का चौघड़िया सूर्यास्त से प्रारंभ होता है। एक दिन में आठ चौघड़िये व रात्रि में आठ चौघड़िये होते हैं।

चौघड़िया का काल दिन-रात छोटे-बड़े होने के अनुसार न्यूनाधिक होता रहता है। प्रत्येक दिन के सूर्योदय से सूर्यास्त तक की समयावधि को आठ से विभाजित करने पर जो एक भाग प्राप्त होगा वह उस दिन में एक चौघड़िया का मान होगा, अर्थात् दिन की समयावधि का आठवां हिस्सा एक चौघड़िया होता है। इसी प्रकार सूर्यास्त से अगले सूर्योदय तक की समयावधि को आठ से विभाजित करने से प्राप्त होने वाला एक हिस्सा रात्रि के चौघड़िये का मान होता है। अर्थात् रात्रि की समयावधि का आठवां हिस्सा रात्रि का एक चौघड़िया होता है।

चौघड़िये में उद्वेग, काल और रोग–ये तीन अशुभ हैं। शेष तीन लाभ, अमृत और शुभ–ये चौघड़िये श्रेष्ठ होते हैं। शुक्र के अर्थात् चल (चंचल) वेला के चौघड़िये को भी अच्छा मानते हैं। श्रेष्ठ चौघड़िये में सभी कार्य करने प्रशस्त हैं। अमृत का चौघड़िया सभी शुभ कार्यों में अत्युत्तम है।

इस तिथि-पत्रक में लाडनूं को केन्द्र मानकर सूर्योदय एवं सूर्यास्त दिया गया है। उससे पूर्व दिशा वाले स्थानों में प्रति तीस किलोमीटर पर एक-एक मिनट पहले सूर्योदय व सूर्यास्त होगा। उससे पश्चिम दिशा वाले स्थानों में प्रति तीस किलोमीटर पर एक-एक मिनट बाद में सूर्योदय व सूर्यास्त होगा। लाडनूं अक्षांश २७°-४०°, उत्तर पर है। रेखांश ७४°-२४° पूर्व है। अयनांश २३° १७'-१८' रेखांतर ३२ मिनट २० सैकिण्ड है। बेलान्तर+२ मिनट ३२ सैकिण्ड है। पलभा ६-१० है।

धार्मिक उपासना में पर्व तिथियों का अपना महत्त्व होता है। पक्खी आदि का प्रतिक्रमण तिथि के आधार पर करना होता है। पहले इसे 'पक्खी' के नाम से संत तैयार करते थे। बाद में इसका विस्तृत रूप 'लघु पंचांग', 'जय पंचांग' के रूप में सामने आया। वर्तमान में यह 'जय तिथि पत्रक' के नाम से प्रकाशित हो रहा है। सन् १९८४ (सं. २०४१) से पूज्य आचार्यों के निर्देश से 'शासन स्तंभ' मंत्रीमुनिश्री सुमेरमलजी के द्वारा संपादन होने लगा जो सन् २०१९ (सं. २०७६) ३६ वर्षों तक अनवरत चलता रहा। इस वर्ष अक्षय तृतीया के दिन (७ मई २०१९) मंत्रीमुनिश्री का देवलोकगमन हो गया। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने यह कार्य दायित्व मुझे सौंपा। पूज्यप्रवर के कृपा प्रसाद व श्रद्धेय मंत्रीमुनिश्री के आशीर्वाद से इस दिशा में गतिमान बना रहूं, यही अभीप्सा है।

२७ अक्टूबर २०१९ **मुनि उदितकुमार**
तेरापंथ भवन, जयपुर

विशेष अवगति

वर्ष के दिन–इस वर्ष मास-१३, पक्ष-२६, तिथि क्षय-१७, तिथि वृद्धि-११, कुल-दिन ३८४

गाज बीज की अस्वाध्याय नहीं–आषाढ़ कृष्णा ३०, रविवार, दिनांक २१ जून २०२० से द्वितीय आश्विन कृष्णा ७, शुक्रवार, २३ अक्टूबर २०२० तक।

सूर्य ग्रहण–आषाढ़ कृष्णा ३०, रविवार, दिनांक २१ जून २०२०

चन्द्र ग्रहण–ज्येष्ठ शुक्ला १५, शुक्रवार, दिनांक ५ जून २०२०

मलमास–(i) वर्ष प्रारंभ से वैशाख कृष्णा ६, सोमवार, दिनांक १३ अप्रैल २०२० तक रहेगा। यह पिछले वर्ष चैत्र कृष्णा ६, शनिवार, दिनांक १४ मार्च २०२० से प्रारंभ हो चुका था।

(ii) मार्गशीर्ष शुक्ला १, मंगलवार, दिनांक १५ दिसम्बर २०२० से प्रारंभ, पौष शुक्ला २, शुक्रवार, दिनांक १५ जनवरी २०२१ तक।

(iii) फाल्गुन शुक्ला १, रविवार, दिनांक १४ मार्च २०२१ से प्रारंभ, अगले वर्ष तक चलेगा।

तारा–(१) गुरु अस्त : पौष शुक्ला ६, मंगलवार, दिनांक १९ जनवरी २०२१ से प्रारंभ, माघ कृष्णा ३०, गुरुवार, दिनांक ११ फरवरी २०२१ को संपन्न।

(२) शुक्र अस्त : (i) ज्येष्ठ शुक्ला ९, रविवार, दिनांक ३१ मई २०२० से प्रारंभ, आषाढ़ कृष्णा २, रविवार, दिनांक ७ जून २०२० को संपन्न।

(ii) माघ शुक्ला ९, रविवार, दिनांक २१ फरवरी २०२१ से प्रारंभ होकर वर्ष के अन्त तक रहेगा।

नोट–ग्रहण, मलमास तथा गुरु, शुक्र के अस्तकाल में विशिष्ट शुभ कार्य वर्जनीय हैं।

विशेष ज्ञातव्य

(क) विशेष मुहूर्त्त

(१) अभिजित मुहूर्त्त, (२) रवियोग, (३) अमृत का चौघड़िया

(४) दीपावली का प्रदोषकाल (सूर्यास्त से दो घड़ी-४८ मिनट तक)

(५) पुष्य नक्षत्र के साथ रविवार या गुरुवार सदा श्रेष्ठ माना जाता है। गुरु-पुष्य विवाह में वर्जित है।

(ख) यात्रा के लिए आवश्यक

(१) यात्रा-कर्ता की जन्म-राशि से यात्रा दिन का चंद्रमा चौथे, आठवें में स्थित न हो। पंचांग में घातचक्र में दिये गये चंद्रमा को भी टालें। (जन्म-राशि ज्ञात न होने से प्रचलित नाम राशि)।

(२) यात्रा के समय सम्मुख चंद्रमा हो तो सब दोष नष्ट माने जाते हैं। पूर्व दिशा में जाने के लिए मेष, सिंह, धन का चंद्रमा, पश्चिम में मिथुन, तुला और कुंभ का, दक्षिण में वृष, कन्या, मकर का और उत्तर में कर्क, वृश्चिक और मीन का चंद्रमा सम्मुख रहता है। दाहिना चंद्रमा भी शुभ है।

(३) यात्रा-योग न मिलने पर अमृत का चौघड़िया अथवा अभिजित मुहूर्त्त सदैव ग्राह्य है। बुधवार को अभिजित शुभ नहीं।

(४) राहू काल-कुवेला का समय वर्जनीय है।

(५) मृत्यु योग आदि अशुभ योग वर्जनीय है।

(ग) यात्रा के लिए अन्य ज्ञातव्य

(१) सोमवार और शनिवार को पूर्व में, रविवार और शुक्रवार को पश्चिम में, मंगलवार और बुधवार को उत्तर में तथा गुरुवार को दक्षिण में यात्रा न करें, क्योंकि दिशाशूल रहता है।

(२) उषाकाल में पूर्व में, गोधूलिकाल में पश्चिम में, मध्याह्न में दक्षिण में तथा मध्य रात्रि में उत्तर में यात्रा न करें, क्योंकि समयशूल रहता है।

(३) ज्येष्ठा नक्षत्र में पूर्व को, पूर्वाभाद्रपद में दक्षिण को, रोहिणी में पश्चिम को तथा उत्तराफाल्गुनी में उत्तर को यात्रा न करें, क्योंकि नक्षत्र-शूल रहता है।

(४) धनिष्ठा का उत्तरार्ध, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती को पंचक कहते हैं। इन दिनों में दक्षिण की ओर यात्रा वर्जनीय है।

(५) तिथियां ४,६,८,९,१२,१४,३० और शुक्ल पक्ष की एकम यात्रा के लिए शुभ नहीं है।

(६) भरणी, कृतिका, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, चित्रा, स्वाति और विशाखा नक्षत्र यात्रा के लिए शुभ नहीं है।

(७) अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती यात्रा में विशेष शुभ नक्षत्र माने जाते हैं।

(८) उत्तर में २,१०; दक्षिण में ५,१३; पूर्व में १,९; पश्चिम में ६,१४ तिथियों में योगिनी रहती है। योगिनी के सामने या दाहिने होने पर यात्रा वर्जनीय है।

(९) पूर्व में शनिवार को, पश्चिम में मंगलवार को, उत्तर में रविवार को

तथा दक्षिण में गुरुवार को यात्रा का निषेध है क्योंकि काल-राहू सम्मुख रहता है।

(१०) शनिवार और बुधवार को ईशान कोण (पूर्वोत्तर) में, मंगलवार को वायव्य (पश्चिमोत्तर) में, रविवार, शुक्रवार को नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम) में तथा सोमवार, गुरुवार को आग्नेय (पूर्व-दक्षिण) में विदिशाशूल है अतः यात्रा में वर्जनीय है।

दिशा-शूल परिहार–रवि को तांबूल, सोम को चंदन, मंगल को मट्ठा, बुध को पुष्प, गुरु को दही, शुक्र को घृत व शनि को तिल खाकर या देकर यात्रा करने में दिक्शूल-दोष मिटता है।

शकुन–यात्रा के समय लोहा, तेल, घास, मट्ठा, पत्थर, लकड़ी, बिलाव मिले तो अशुभ व दही, चावल, चांदी का घड़ा, पुष्प, हंस तथा मुर्दा शुभ है।

सुयोग के सामने सभी कुयोगों का नाश

इक्कस्स भए पंचाणणस्स, भज्जंति गय सय सहस्सा।

तह रवि जोग पणट्ठा, गयणम्मि गहा न दीसंति ।। यति वल्लभ ।।

एक शेर के सामने लाख हाथी भी भाग जाते हैं। एक सूर्य के आने पर आकाश में एक भी ग्रह नहीं दीखता। इसी तरह रवि योग होने पर अन्य अप्योग स्वतः अप्रभावी बन जाते हैं।

रवियोगे राजयोगे, कुमारयोगे असुद्ध दिहए वि।

जं सुह कज्जं कीरइ, तं सव्वं बहुफलं होइ ।। यतिवल्लभ ।।

अशुभ दिन में भी रवियोग, राजयोग व कुमारयोग होने पर जो भी शुभ कार्य किया जाये तो वह बहुत फलदायी होता है।

सिद्धियोगः कुयोगश्च, जायेतां युगपद्यदि।

कुयोगं तत्र निर्जित्य, सिद्धि योगो विजृम्भते ।। आरंभ सिद्धि ।।

सिद्धियोग व कुयोग यदि एक साथ हो तो कुयोग का फल नष्ट हो जाता है।

(घ) यात्रा-निवृत्ति पर प्रवेश मुहूर्त्त

शुभ नक्षत्र–अनु., चि., मृ., तीनों उत्तरा, रो., पुष्य, ह., ध.।

शुभ वार–सोम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि।

आजकल नक्षत्र चंद्रमा के अनुकूल होने पर रवि को भी प्रवेश करते हैं।

शुभ-तिथि–२,३,५,७,१०,११,१३,१५।

नोट : एक ही दिन में यात्रा और प्रवेश हो तो मात्र प्रवेश देखा जाए।

(च) दीक्षा-ग्रहण-मुहूर्त्त

शुभ मास–वैशाख, श्रावण, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन।

शुभ नक्षत्र–तीनों उत्तरा,अश्वि,रो.,रे.,अनु.,पुष्य.,स्वा.,पुन,श्र.ध., श.,मू।

शुभ वार–रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्र।

शुभ तिथि–२,३,५,७,१०,११,१३ शुक्ल पक्ष में;२,३,५ कृष्ण पक्ष में।

तीर्थंकरों के दीक्षा-कल्याणक दिन, नक्षत्र भी लिए जा सकते हैं।

नोट : गुरु अस्त न हो, अधिक मास व तिथि न हो।

(छ) विद्यारंभ आदि

शुभ तिथि–२,३,५,६,१०,११,१२ कृष्ण पक्ष २,३,५।

शुभ वार–बुध, गुरु, शुक्र।

शुभ नक्षत्र–मृ, आर्द्रा, पुन, पुष्य, आश्ले, मृ, ह, चि, स्वा, अश्वि, श्र, ध, श, तीनों पूर्वा।

नोट : सोमवार, मंगलवार, शनिवार को आरंभ किया हुआ कोई भी साहित्य सृजन, शोध-कार्य आदि सफलता का सूचक नहीं होता। जैन विद्या का सत्रारंभ रवि और शुक्र को श्रेष्ठ रहता है।

साहित्य-सृजन में आर्द्रा, पुनः, पुष्य, रे, ह, चि, स्वा, अश्वि, श्र, अनु, नक्षत्र उत्तम माने गये हैं, बुध, गुरु, शुक्रवार श्रेष्ठ हैं।

(ज) जन्म के पाये

आर्द्रा नक्षत्र से १० नक्षत्र तक चांदी का, विशाखा नक्षत्र से ४ नक्षत्र तक लोहे का, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र से ६ नक्षत्र तक तांबे का तथा उत्तराभाद्रपद नक्षत्र से ७ नक्षत्र तक सोने का पाया होता है।

प्रकारान्तर से जन्म-नक्षत्र के कालमान को समान चार भागों में बांट लिया जाता है। प्रथम भाग में जन्म होने से सोने का पाया, द्वितीय भाग में होने से चांदी का पाया, तृतीय भाग में होने से तांबे का पाया और चौथे भाग में होने से लोहे का पाया मानते हैं।

लग्न और चंद्रमा से भी पाया देखा जाता है। जन्म-कुंडली में लग्न से पहला, छठा, ग्यारहवां चंद्रमा पड़ा हो तो सोने का पाया, लग्न से दूसरा, पांचवां तथा नौवां चंद्रमा पड़ा हो तो चांदी का पाया, लग्न से तीसरा, सातवां व दसवां चंद्रमा पड़ा हो तो तांबे का पाया मानते हैं। जन्म से चौथा, आठवां व बारहवां चंद्रमा पड़ा हो तो लोहे का पाया मानते हैं। सोना एवं लोहे का पाया कष्टप्रद तथा चांदी व तांबे का पाया श्रेष्ठ माने जाते हैं।

अधिकांश ज्योतिषियों के मतानुसार लग्न और चंद्रमा से देखा गया पाया ही मान्य होता है। पूरे देश में प्रायः इसी का प्रचलन है।

(झ) वार संज्ञक नक्षत्र

आश्लेषा, मूल, ज्येष्ठा और मघा–ये वार संज्ञक नक्षत्र हैं। इन नक्षत्रों में जन्म होने पर जातक का जन्म वारों में हुआ माना जाता है। इनमें उत्पन्न बच्चों का प्रायः वही नक्षत्र आने से नामकरण होता है। ज्येष्ठा की अंतिम चार घड़ी तथा मूल की पहली चार घड़ी अभुक्त मूल मानी जाती है जो कष्टदायक है। मूल के प्रथम चरण में जन्म होने से पिता के लिए, दूसरे में माता के लिए, तीसरे में आर्थिक पक्ष के लिए अनिष्टकारक माना जाता है। मूल का चौथा चरण शुभ माना जाता है। इसके विपरीत आश्लेषा का प्रथम चरण शुभ माना जाता है। दूसरा धन के लिए, तीसरा माता के लिए तथा चौथा पिता के लिए अनिष्टकारक माना जाता है। इसी प्रकार ज्येष्ठा का प्रथम बड़े भाई के लिए, दूसरा छोटे भाई के लिए, तीसरा माता के लिए और चौथा स्वयं बालक के लिए अनिष्टकारक माना जाता है।

(ट) ग्रहण

सब जगह एक साथ ग्रहण नहीं लगता, इस कारण उसका समय नहीं दिया जाता है। जो ग्रहण जहां नहीं दीखता, उस ग्रहण की अस्वाध्याय आदि रखने की जरूरत नहीं है।

संवत् २०७७ के विशेष पर्व दिवस

१.	२६१वां भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस, रामनवमी	चैत्र शुक्ला ९	०२ अप्रैल २०२०	गुरुवार
२.	२६१९वीं महावीर जयन्ती (महावीर जन्म कल्याणक दिवस)	चैत्र शुक्ला १३	०६ अप्रैल २०२०	सोमवार
३.	आचार्यश्री महाप्रज्ञ का एकादशम महाप्रयाण दिवस	वैशाख कृष्णा ११	१८ अप्रैल २०२०	शनिवार
४.	अक्षय तृतीया	वैशाख शुक्ला ३	२६ अप्रैल २०२०	रविवार
५.	आचार्यश्री महाश्रमण का ५९वां जन्म दिवस	वैशाख शुक्ला ९	०२ मई २०२०	शनिवार
६.	आचार्यश्री महाश्रमण का ११वां पदाभिषेक दिवस	वैशाख शुक्ला १०	०३ मई २०२०	रविवार
७.	भगवान् महावीर केवलज्ञान कल्याणक दिवस	वैशाख शुक्ला १०	०३ मई २०२०	रविवार
८.	आचार्यश्री महाश्रमण का ४७वां दीक्षा दिवस (युवा दिवस)	वैशाख शुक्ला १४	०६ मई २०२०	बुधवार
९.	आचार्यश्री तुलसी का २४वां महाप्रयाण दिवस	आषाढ़ कृष्णा ३	०८ जून २०२०	सोमवार
१०.	आचार्यश्री महाप्रज्ञ का १०१वां जन्म दिवस (जन्म शताब्दी समापन)	आषाढ़ कृष्णा १३	१९ जून २०२०	शनिवार
११.	आचार्य श्री भिक्षु का २९५वां जन्म दिवस एवं २६३वां (बोधि दिवस)	आषाढ़ शुक्ला १३	०३ जुलाई २०२०	शुक्रवार
१२.	चातुर्मासिक पक्खी	आषाढ़ शुक्ला १४	०४ जुलाई २०२०	शनिवार
१३.	२६१वां तेरापंथ स्थापना दिवस	आषाढ़ शुक्ला १५	०५ जुलाई २०२०	रविवार
१४.	रक्षा बंधन	श्रावण शुक्ला १५	०३ अगस्त २०२०	सोमवार
१५.	७४वां स्वतंत्रता दिवस	भाद्रपद कृष्णा ११	१५ अगस्त २०२०	शनिवार
१६.	पर्युषण प्रारंभ दिवस	भाद्रपद कृष्णा ११	१५ अगस्त २०२०	शनिवार
१७.	श्री मज्जयाचार्य का १४९वां निर्वाण दिवस	भाद्रपद कृष्णा १२	१६ अगस्त २०२०	रविवार
१८.	पर्युषण पक्खी	भाद्रपद कृष्णा १४	१८ अगस्त २०२०	मंगलवार
१९.	संवत्सरी महापर्व	भाद्रपद शुक्ला ४	२२ अगस्त २०२०	शनिवार
२०.	आचार्यश्री कालूगणी का ८५वां स्वर्गवास दिवस	भाद्रपद शुक्ला ६	२४ अगस्त २०२०	सोमवार
२१.	२७वां विकास महोत्सव	भाद्रपद शुक्ला ९	२७ अगस्त २०२०	गुरुवार
२२.	२१८वां आचार्यश्री भिक्षु चरमोत्सव	भाद्रपद शुक्ला १३	३१ अगस्त २०२०	सोमवार

२३.	दीपावली	कार्तिक कृष्णा १४	१४ नवम्बर २०२०	शनिवार
२४.	भगवान् महावीर का २५४८वां निर्वाण कल्याणक दिवस	कार्तिक कृष्णा ३०	१५ नवम्बर २०२०	रविवार
२५.	आचार्यश्री तुलसी का १०७वां जन्म दिवस (अणुव्रत दिवस)	कार्तिक शुक्ला १/२	१६ नवम्बर २०२०	सोमवार
२६.	चातुर्मासिक पक्खी	कार्तिक शुक्ला १५	३० नवम्बर २०२०	सोमवार
२७.	भगवान् महावीर का २५९०वां दीक्षा कल्याणक दिवस	मार्गशीर्ष कृष्णा १०	१० दिसम्बर २०२०	गुरुवार
२८.	भगवान् पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक दिवस	पौष कृष्णा १०	०८ जनवरी २०२१	शुक्रवार
२९.	७२वां गणतंत्र दिवस	पौष शुक्ला १३	२६ जनवरी २०२१	मंगलवार
३०.	१५७वां मर्यादा महोत्सव	माघ शुक्ला ७	१९ फरवरी २०२१	शुक्रवार
३१.	होलिका	फाल्गुन शुक्ला १५	२८ मार्च २०२१	रविवार
३२.	चातुर्मासिक पक्खी	फाल्गुन शुक्ला १५	२८ मार्च २०२१	रविवार
३३.	भगवान् ऋषभ दीक्षा कल्याणक दिवस (वर्षीतप प्रारंभ)	चैत्र कृष्णा ८	०४ अप्रैल २०२१	रविवार

वर्षावास स्थापना अनुष्ठान

* चउवीसत्थव (लोगस्स) ५ बार अथवा ९ बार
* ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं, ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं,
  ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं, ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं,
  ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं।
  णमो नाणस्स, णमो दंसणस्स, णमो चरित्तस्स, णमो तवस्स।
  (नवपदी जप—नौ बार)
* ॐ ऋषभाय नमः (नौ बार)
* ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय सर्व विघ्नोऽप शमनाय स्वाहा। (नौ बार)
* ॐ नमो भगवते वर्धमानाय ज्ञान दर्शन चारित्र तपो वृद्धिकरणाय। (नौ बार)
* ॐ भिक्षु ह्रां, ह्रीं, ह्रूं, ह्रैं, ह्रौं, ह्रः।। (नौ बार)
* ॐ जय तुलसी-तुलसी नाम ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं शुभ धाम ह्रीं (नौ बार)
* ॐ श्री महाप्रज्ञ गुरवे नमः (नौ बार)
* मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणी।
  मंगलं स्थूलभद्राद्याः, जैनधर्मोऽस्तु मंगलम्।।
  मंगलं मतिमान् भिक्षुः, मंगलं भारमल्लकः।
  मंगलं रायचन्द्राद्याः, मंगलं तुलसीगुरुः।।
  महाप्रज्ञोऽस्तु मंगलम्, महाश्रमणोस्तु मंगलम्।
  तेरापंथोऽस्तु मंगलम्।।
  विघ्न हरण मंगलकरण, स्वाम भिक्षु नो नाम।
  गुण ओळख सुमिरण कियां, सरै अचिंत्या काम।।

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२५	बु	१	१७	२८	रे	०	०	६.३३	६.४३	९.३६	३.०३	मीन	पं.
२६	गु	२	१९	५५	रे	०७	१७	६.३२	६.४३	९.३५	३.०३	मेष $\frac{०७}{१७}$	पं. ०७/१७तक, वै. १६/३० से
२७	शु	३	२२	१४	अ	१०	१०	६.३१	६.४४	९.३४	३.०३	मेष	राज. १०/१० से २२/१४ तक, र. १०/१० से, वै. १७/१६ तक
२८	श	४	२४	१९	भ	१२	५३	६.३०	६.४४	९.३४	३.०३	वृष $\frac{१९}{३१}$	भ. ११/१८ से २४/१९ तक, र. १२/५३ तक
२९	र	५	०२	०२	कृ	१५	१८	६.२९	६.४५	९.३३	३.०४	वृष	र. १५/१८ से
३०	सो	६	०३	१६	रो	१७	१९	६.२८	६.४५	९.३२	३.०४	मि. $\frac{०६}{०६}$	कु. १७/१९ तक, र. १७/१९ तक, अ. १७/१९ से
३१	मं	७	०३	५१	मृ	१८	४५	६.२७	६.४५	९.३१	३.०४	मिथुन	राज. १८।४५ तक, सूर्य रेवती में ०६/५९ से, र. ०६/५९ से १८/४५ तक, भ. ०३/५१ से
१	बु	८	०३	४१	आ	१९	२९	६.२६	६.४६	९.३१	३.०५	मिथुन	भ. १५/५४ तक
२	गु	९	०२	४३	पुन	१९	२९	६.२५	६.४६	९.३०	३.०५	कर्क $\frac{१३}{३३}$	सि. १९/२९ तक, गुरुपुष्यामृत योग १९/२९ से (विवाहे वर्ज्य), र. १९।२९ से **२६१वां भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस, रामनवमी**
३	शु	१०	२४	५८	पु	१८	४१	६.२४	६.४६	९.२९	३.०५	कर्क	र. अहोरात्र, ज्वा. १८/४१ से २४/५८ तक, मृ. १८/४१ से
४	श	११	२२	३०	आ	१७	०९	६.२३	६.४७	९.२९	३.०६	सिंह $\frac{१७}{०९}$	भ. ११/४९ से २२/३० तक, र. १७/०९ तक
५	र	१२	१९	२६	म	१४	५८	६.२२	६.४७	९.२८	३.०६	सिंह	यम. १४/५८ तक, राज. १४/५८ से १९/२६ तक
६	सो	१३	१५	५३	पू.फा.	१२	१६	६.२१	६.४७	९.२७	३.०६	क. $\frac{१७}{३३}$	र. १२/१६ से, **२६१९वीं महावीर जयंती**
७	मं	१४	१२	०३	उ.फा. / ह	०९ / ०६	१६ / ०८	६.१९	६.४८	९.२६	३.०७	कन्या	र. ०९/१६ तक, भ. १२/०३ से २२/०५ तक, राज. ०६/०८ से, व्या. १८/३७ से, **एक्वी**
८	बु	१५ / १	०८ / ०४	०६ / १५	चि	०३	०४	६.१८	६.४८	९.२५	३.०७	तुला $\frac{२६}{३५}$	राज. ०८/०६ तक, व्या. १४/१३ तक

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
९	गु	२	२४	४१	स्वा	२४	१७	६.१७	६.४८	९.२५	३.०८	तुला	
१०	शु	३	२१	३५	वि	२१	५७	६.१६	६.४९	९.२४	३.०८	वृ. $\frac{१६}{२८}$	भ. ११/०४ से २१/३५ तक, व्य. ०२/२५ से
११	श	४	१९	०४	अ	२०	१४	६.१५	६.५०	९.२४	३.०९	वृश्चिक	व्य. २३/२२ तक
१२	र	५	१७	१७	ज्ये	१९	१५	६.१४	६.५०	९.२३	३.०९	धन $\frac{१९}{१५}$	र. १९/१५ से, सि. १९/१५ से
१३	सो	६	१६	२१	मू	१९	०४	६.१३	६.५१	९.२३	३.०९	धन	कृ. १६/२१ तक, भ. १६/२१ से ०४/११ तक, र. १९/०४ तक, सूर्य अश्विनी एवं मेष में २०/२४ से र. २०/२४ से, मलमास समाप्त
१४	मं	७	१६	१३	पू.षा.	१९	४३	६.१२	६.५१	९.२२	३.१०	म. $\frac{०३}{००}$	राज. १६/१३ तक, र. १९/४३ तक
१५	बु	८	१६	५३	उ.षा.	२१	०६	६.११	६.५२	९.२१	३.१०	मकर	
१६	गु	९	१८	१३	श्र	२३	०७	६.१०	६.५२	९.२०	३.१०	मकर	
१७	शु	१०	२०	०६	ध	०१	३७	६.०९	६.५२	९.२०	३.११	कुंभ $\frac{१२}{१९}$	भ. ०७/०६ से २०/०६ तक, पं. १२/१९ से
१८	श	११	२२	१९	श	०४	२६	६.०८	६.५३	९.१९	३.११	कुंभ	पं., **आचार्यश्री महाप्रज्ञ का ११वां महाप्रयाण दिवस**
१९	र	१२	२४	४५	पू.भा.	०	०	६.०७	६.५४	९.१९	३.११	मीन $\frac{२४}{३९}$	पं.
२०	सो	१३	०३	१३	पू.भा.	०७	२४	६.०६	६.५४	९.१८	३.१२	मीन	पं., भ. ०३/१३ से, वै. २०/३३ से
२१	मं	१४	०५	३९	उ.भा.	१०	२४	६.०५	६.५५	९.१७	३.१२	मीन	पं., सि. १०/२४ तक, भ. १६/२७ तक, वै. २१/२७ तक
२२	बु	३०	०	०	रे	१३	१९	६.०४	६.५६	९.१७	३.१३	मेष $\frac{१३}{१९}$	पं. १३/१९ तक, मृ. १३/१९ से **पक्खी**
२३	गु	३०	०७	५७	अ	१६	०६	६.०३	६.५६	९.१६	३.१३	मेष	

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२४	शु	१	१०	०३	भ	१८	४०	६.०२	६.५७	९.१६	३.१४	वृष $\frac{०१}{१६}$	राज. १०/०३ से १८/४० तक
२५	श	२	११	५३	कृ	२०	५८	६.०१	६.५८	९.१५	३.१४	वृष	र. २०/५८ से, अ. २०/५८ से (प्रयाणे वर्ज्य)
२६	र	३	१३	२४	रो	२२	५६	६.००	६.५८	९.१५	३.१४	वृष	र. २२/५६ तक, भ. ०२/०१ से, **अक्षय तृतीया**
२७	सो	४	१४	३१	मृ	२४	३०	५.५९	६.५९	९.१४	३.१५	मि. $\frac{११}{४६}$	अ. २४/३० तक, सूर्य भरणी में १२/०९ से, र. १२/०९ से २४/३० तक, भ. १४/३१ तक
२८	मं	५	१५	०९	आ	०१	३३	५.५८	७.००	९.१४	३.१५	मिथुन	यम. ०१/३३ तक, र. एवं कु. ०१/३३ से
२९	बु	६	१५	१३	पुन	०२	०२	५.५७	७.००	९.१३	३.१६	कर्क $\frac{१९}{५८}$	कु. १५/१३ तक, र. ०२/०२ तक, राज. ०२/०२ से
३०	गु	७	१४	४०	पु	०१	५३	५.५७	७.०१	९.१३	३.१६	कर्क	गुरुपुष्यामृत योग ०१/५३ तक (विवाहे वर्ज्य), भ. १४/४० से ०२/०८ तक
१	शु	८	१३	२८	आ	०१	०५	५.५६	७.०१	९.१३	३.१६	सिंह $\frac{०१}{०५}$	मृ. ०१/०५ तक, र. ०१/०५ से
२	श	९	११	३६	म	२३	४०	५.५५	७.०२	९.१२	३.१६	सिंह	र. अहोरात्र, **आचार्यश्री महाश्रमण का ५९वां जन्म दिवस**
३	र	१०	०९	१०	पू.फा.	२१	४३	५.५४	७.०२	९.११	३.१७	क. $\frac{०३}{०९}$	भ. १९/४५ से, र. २१/४३ तक, व्या. १२/०९ से, **भगवान् महावीर केवलज्ञान कल्याणक दिवस, आचार्यश्री महाश्रमण का १२वां पदाभिषेक दिवस**
४	सो	$\frac{११}{१२}$	$\frac{०६}{०२}$	$\frac{१४}{५५}$	उ.फा.	१९	२०	५.५३	७.०३	९.१०	३.१७	कन्या	भ. ०६/१४ तक, व्या. ०८/३६ तक
५	मं	१३	२३	२३	ह	१६	४०	५.५२	७.०३	९.१०	३.१८	तुला $\frac{०३}{१६}$	र. १६/४० से
६	बु	१४	१९	४७	चि.	१३	५३	५.५१	७.०४	९.०९	३.१८	तुला	र. १३।५३ तक, भ. १९।४७ से ०६/०० तक, व्य. २०/४० से, **आचार्यश्री महाश्रमण का ४७वां दीक्षा दिवस (युवा दिवस)**
७	गु	१५	१६	१७	स्वा	११	०९	५.५१	७.०४	९.०९	३.१८	वृ. $\frac{०३}{१५}$	व्य. १६/४१ तक **पक्खी**

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
८	शु	१	१३	०४	वि	०८	४०	५.५०	७.०५	९.०९	३.१९	वृश्चिक	कु. ०८/४० तक, राज. १३/०४ से
९	श	२	१०	१८	अ / ज्ये	०६ / ०५	३४ / ०४	५.५०	७.०६	९.०९	३.१९	धन ०५/०४	भ. २१/०७ से
१०	र	३	०८	०७	मू	०४	१५	५.४९	७.०७	९.०९	३.१९	धन	सि. ०४/१५ तक, ध. ०८/०७ तक
११	सो	४ / ५	०६ / ०५	३७ / ५५	पू.षा.	०४	१२	५.४९	७.०८	९.०९	३.२०	धन	सूर्य कृतिका में ०६/२३ से, मृ. ०४/१२ से
१२	मं	६	०६	०१	उ.षा.	०४	५५	५.४८	७.०८	९.०९	३.२०	म. १०/१९	कु. ०४/५५ से ०६/०१ तक, र. ०४/५५ से, भ. ०६/०१ से
१३	बु	७	०	०	श्र	०	०	५.४७	७.०९	९.०८	३.२०	मकर	र. अहोरात्र, भ. १८।२२ तक
१४	गु	७	०६	५३	श्र	०६	२४	५.४७	७.१०	९.०७	३.२१	कुंभ १९/२४	र. ०६/२४ तक, सूर्य वृषभ में १७/१७ से, पं. १९।२४ से
१५	शु	८	०८	२४	ध	०८	३१	५.४६	७.१०	९.०७	३.२१	कुंभ	पं., वै. ०१/५० से
१६	श	९	१०	२५	श	११	०७	५.४६	७.१०	९.०७	३.२१	कुंभ	पं., भ. २३/३३ से, वै. ०२/३७ तक
१७	र	१०	१२	४४	पू.भा.	१४	००	५.४५	७.१०	९.०६	३.२१	मीन ०७/१८	पं., भ. १२/४४ तक
१८	सो	११	१५	१०	उ.भा.	१६	५९	५.४४	७.११	९.०६	३.२२	मीन	पं.
१९	मं	१२	१७	३३	रे	१९	५४	५.४४	७.१२	९.०६	३.२२	मेष १९/५४	पं. १९/५४ तक, अ. १९/५४ से (प्रवेशे वर्ज्य)
२०	बु	१३	१९	४४	अ	२२	३८	५.४३	७.१२	९.०६	३.२२	मेष	मृ. २२/३८ तक, भ. १९।४४ से
२१	गु	१४	२१	३७	ध	०१	०४	५.४३	७.१३	९.०५	३.२२	मेष	भ. ०८/४३ तक, यम. ०१/०४ से
२२	शु	३०	२३	०९	कृ	०३	१०	५.४३	७.१३	९.०५	३.२२	वृष ०७/३८	कु. एवं यम. ०३/१० से **पक्खी**

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२३	श	१	२४	१८	रो	०४	५३	५.४२	७.१४	९.०५	३.२३	वृष	अ. ०४/५३ तक (प्रयाणे वर्ज्य)
२४	र	२	०१	०२	मृ	०	०	५.४२	७.१५	९.०५	३.२३	मि. $\frac{१७}{३८}$	राज. अहोरात्र, सूर्य रोहिणी में ०२/३४ से
२५	सो	३	०१	१९	मृ	०६	११	५.४१	७.१५	९.०५	३.२३	मिथुन	अ. ०६/११ तक
२६	मं	४	०१	१०	आ	०७	०३	५.४१	७.१५	९.०५	३.२३	कर्क $\frac{०१}{२४}$	यम. ०७/०३ तक, र. ०७/०३ से, भ. १३/१८ से ०१/१० तक, कु. ०१/१० से
२७	बु	५	२४	३३	पुन	०७	२९	५.४१	७.१६	९.०५	३.२४	कर्क	र. एवं कु. ०७/२९ तक
२८	गु	६	२३	२८	पु	०७	२७	५.४१	७.१६	९.०५	३.२४	कर्क	गुरुपुष्यामृत योग ०७।२७ तक (विवाहे वर्ज्य), र. ०७/२७ से, व्या. २४/२५ से
२९	शु	७	२१	५६	आ	०६	५९	५.४०	७.१७	९.०४	३.२४	सिंह $\frac{०६}{५९}$	मृ. ०६/५९ तक, र. ०६/५९ तक, भ. २१/५६ से, व्या. २२/०६ तक
३०	श	८	१९	५९	म / पू.फा.	०६ / ०४	०४ / ४४	५.४०	७.१७	९.०४	३.२४	सिंह	भ. ०९/०० तक, र. ०४/४४ से
३१	र	९	१७	३८	उ.फा.	०३	०२	५.४०	७.१८	९.०४	३.२४	क. $\frac{१०}{१९}$	र. अहोरात्र, अ. ०३/०२ से
१	सो	१०	१४	५९	ह	०१	०४	५.४०	७.१८	९.०४	३.२४	कन्या	कु. ०१/०४ तक, र. ०१/०४ तक, भ. ०१/३३ से, व्य. १३/१८ से
२	मं	११	१२	०६	चि	२२	५६	५.४०	७.१८	९.०४	३.२४	तुला $\frac{१२}{००}$	भ. १२/०६ तक, राज. १२/०६ से २२/५६ तक, व्य. ०९/५३ तक
३	बु	१२	०९	०७	स्वा	२०	४४	५.३९	७.१८	९.०४	३.२५	तुला	र. २०/४४ से
४	गु	१३ / १४	०६ / ०३	०८ / १८	वि	१८	३८	५.३९	७.१९	९.०४	३.२५	वृ. $\frac{१३}{०९}$	र. १८/३८ तक, भ. ०३/१८ से
५	शु	१५	२४	४४	अ	१६	४५	५.३९	७.१९	९.०४	३.२५	वृश्चिक	राज. १६/४५ तक, भ. १३/५८ तक, चन्द्रग्रहण **पक्खी**

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
६	श	१	२२	३६	ज्ये	१५	१४	५.३९	७.२०	९.०४	३.२५	धन $\frac{१५}{१४}$	ज्वा. १५/१४ से २२/३६ तक
७	र	२	२०	५८	मू	१४	१३	५.३९	७.२१	९.०४	३.२५	धन	सि. १४/१३ तक, राज. १४/१३ से, सूर्य मृगशीर्ष में २४/२९ से
८	सो	३	१९	५९	पू.षा.	१३	४७	५.३९	७.२१	९.०४	३.२५	म. $\frac{१९}{४७}$	भ. ०८/२४ से १९/५९ तक, मृ. १३/४७ से, **आचार्यश्री तुलसी का २४वां महाप्रयाण दिवस**
९	मं	४	१९	४१	उ.षा.	१४	०२	५.३९	७.२२	९.०५	३.२६	मकर	कु. १९/४१ से
१०	बु	५	२०	०७	श्र	१४	५९	५.३९	७.२२	९.०५	३.२६	कुंभ $\frac{०३}{४७}$	कु. १४/५९ तक, पं. ०३/४३ से, वै. १०/३८ से
११	गु	६	२१	१३	ध	१६	३७	५.३९	७.२३	९.०५	३.२६	कुंभ	पं., र. १६/३७ से, ध. २१/१३ से, वै. १०/१८ तक
१२	शु	७	२२	५५	श	१८	५०	५.३९	७.२३	९.०५	३.२६	कुंभ	पं., भ. १०/०० तक, र. १८/५० तक
१३	श	८	०१	०१	पू.भा.	२१	२९	५.३९	७.२४	९.०५	३.२६	मीन $\frac{१४}{४७}$	पं.
१४	र	९	०३	२१	उ.भा.	२४	२३	५.३९	७.२४	९.०५	३.२६	मीन	पं., सूर्य मिथुन में २३/५५ से
१५	सो	१०	०५	४२	रे	०३	१८	५.३९	७.२५	९.०५	३.२६	मेष $\frac{०३}{१८}$	भ. १६/३२ से ०५/४२ तक, पं. ०३/१८ तक, कु. ०३/१८ से
१६	मं	११	०	०	अ	०	०	५.३९	७.२५	९.०५	३.२६	मेष	कु. अहोरात्र, अ. अहोरात्र (प्रवेशे वर्ज्य)
१७	बु	११	०७	५२	अ	०६	०५	५.३९	७.२५	९.०५	३.२६	मेष	मृ. ०६/०५ तक, कु. ०६/०५ तक, राज. ०७/५२ से
१८	गु	१२	०९	४०	भ	०८	३१	५.३९	७.२५	९.०५	३.२६	वृष $\frac{५५}{०४}$	यम. ०८/३१ से
१९	शु	१३	११	०२	कृ	१०	३२	५.३९	७.२५	९.०५	३.२६	वृष	यम. १०/३२ से, भ. ११/०२ से २३/३१ तक, **आचार्यश्री महाप्रज्ञ का १०१वां जन्म दिवस (जन्म शताब्दी का समापन)**
२०	श	१४	११	५३	रो	१२	०२	५.३९	७.२६	९.०६	३.२७	मि. $\frac{२४}{३६}$	अ. १२/०२ तक (प्रयाणे वर्ज्य) **पक्खी**
२१	र	३०	१२	१२	मृ	१३	०२	५.२९	७.२६	९.०६	३.२७	मिथुन	**सूर्य आर्द्रा में २३/२९ से, सूर्यग्रहण, गाजथीज का अस्वाध्याय नहीं**

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२२	सो	१	१२	००	आ	१३	३१	५.३९	७.२६	९.०६	३.२७	मिथुन	
२३	मं	२	११	२०	पुन	१३	३३	५.४०	७.२७	९.०७	३.२७	कर्क ०७/३५	राज. १३/३३ से, व्या. ११/०३ से
२४	बु	३	१०	१५	पु	१३	११	५.४१	७.२७	९.०७	३.२७	कर्क	राज. १०/१५ तक, र. १३/११ से, भ. २१/३४ से, व्या. ०९/०९ तक
२५	गु	४	०८	४९	आ	१२	२७	५.४१	७.२७	९.०८	३.२७	सिंह १३/२७	भ. ०८/४९ तक, र. १२/२७ तक
२६	शु	५/६	०७/०५	०४/०५	म	११	२६	५.४२	७.२७	९.०८	३.२६	सिंह	कु. ११/२६ तक, र. ११/२६ से, मि. ११/२६ से, राज. ०५/०५ से, व्य. ०१/५६ से
२७	श	७	०२	५५	पू.फा.	१०	१२	५.४२	७.२७	९.०८	३.२६	क. १५/५२	र. १०/१२ तक, भ. ०२/५५ से, व्य. २३/०८ तक
२८	र	८	२४	३७	उ.फा.	०८	४७	५.४३	७.२७	९.०९	३.२६	कन्या	अ. ०८/४७ से, भ. १३/४७ तक
२९	सो	९	२२	१४	ह/वि	०७/०५	१५/४०	५.४३	७.२७	९.०९	३.२६	तुला १८/२८	र. ०७/१५ से
३०	मं	१०	१९	५१	स्वा	०४	०५	५.४४	७.२७	९.१०	३.२६	तुला	र. ०४/०५ तक, कु. ०४/०५ से
१	बु	११	१७	३१	वि	०२	३५	५.४४	७.२७	९.१०	३.२६	वृ. २०/५७	भ. ०६/४१ से १७/३१ तक, कु. १७/३१ तक, राज. एवं अ. ०२/३५ से
२	गु	१२	१५	१९	अ	०१	१५	५.४५	७.२७	९.११	३.२५	वृश्चिक	र. ०१/१५ से
३	शु	१३	१३	१९	ज्ये	२४	१०	५.४५	७.२७	९.११	३.२५	धन २४/१०	र. २४/१० तक, **आचार्यश्री भिक्षु का २९५वां जन्म दिवस एवं २६३वां बोधि दिवस**
४	श	१४	११	३६	मू	२३	२४	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	धन	भ. ११/३६ से २२/५३ तक **चातुर्मासिक पक्खी**
५	र	१५	१०	१६	पू.षा.	२३	०४	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	म. ०५/०३	राज. १०/१६ तक, सूर्य पुनर्वसु में २३/०४, से वै. २३/०५ से, **२६१वां तेरापंथ स्थापना दिवस**

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
६	सो	१	०९	२५	उ.षा.	२३	१४	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	मकर	मृ. २३/१४ तक, सि. २३/१४ से, वै २१/३६ तक
७	मं	२	०९	०५	श्र	२३	५८	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	मकर	भ. २१/०९ से, राज. २३/५८ से
८	बु	३	०९	२१	ध	०१	१७	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	कुंभ $\frac{१३}{३३}$	भ. ०९/२१ तक, राज. ०९/२१ तक, पं. १२/३३ से
९	गु	४	१०	१४	श	०३	११	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	कुंभ	पं.
१०	शु	५	११	४०	पू.भा.	०५	३४	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	मीन $\frac{२३}{५६}$	पं., कु. ०५/३४ तक, र. ०५/३४ से
११	श	६	१३	३५	उ.भा.	०	०	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	मीन	पं., र. अहोरात्र, भ. १३/३५ से ०२/४१ तक
१२	र	७	१५	५०	उ.भा.	०८	२०	५.४७	७.२६	९.१२	३.२५	मीन	पं., राज. ०८/२० तक, र. ०८/२० तक
१३	सो	८	१८	११	रे	११	१५	५.४७	७.२६	९.१२	३.२४	मेष $\frac{११}{१५}$	पं. ११/१५ तक
१४	मं	९	२०	२५	अ	१४	०७	५.४७	७.२५	९.१२	३.२४	मेष	अ. १४/०७ तक (प्रवेशे वर्ज्य)
१५	बु	१०	२२	२०	भ	१६	४४	५.४८	७.२५	९.१२	३.२४	वृष $\frac{२३}{१९}$	भ. ०९/२६ से २२/२० तक, सि. १६/४४ से
१६	गु	११	२३	४५	कृ	१८	५४	५.४९	७.२५	९.१३	३.२४	वृष	यम. १८/५४ तक, सूर्य कर्क में १०/४८ से
१७	शु	१२	२४	३४	रो	२०	२८	५.५०	७.२५	९.१४	३.२४	वृष	यम. २०/२८ तक, राज. २०/२८ से २४/३४ तक
१८	श	१३	२४	४२	मृ	२१	२४	५.५०	७.२५	९.१४	३.२४	मि. $\frac{०९}{०२}$	भ. २४/४२ से, व्या. २३/०८ से
१९	र	१४	२४	१०	आ	२१	४०	५.५१	७.२४	९.१४	३.२३	मिथुन	भ. १२/३१ तक, सूर्य पुष्य में २२/३७ से, व्या. २१/४४ तक **पक्खी**
२०	सो	३०	२३	०३	पुन	२१	२१	५.५१	७.२४	९.१४	३.२३	कर्क $\frac{२५}{२९}$	

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२१	मं	१	२१	२५	पु	२०	३१	५.५२	७.२४	९.१५	३.२३	कर्क	
२२	बु	२	१९	२३	आ	१९	१६	५.५२	७.२३	९.१५	३.२३	सिंह $\frac{१९}{१६}$	व्य. १४/५७ से
२३	गु	३	१७	०५	म	१७	४५	५.५३	७.२३	९.१५	३.२३	सिंह	व्य. १२/०२ तक, र. १७/४५ से, भ. ०३/५१ से
२४	शु	४	१४	३६	पू.फा.	१६	०४	५.५३	७.२२	९.१५	३.२२	क. $\frac{३१}{३८}$	सि. १६/०४ तक, भ. १४/३६ तक, र. १६/०४ तक
२५	श	५	१२	०४	उ.फा.	१४	२०	५.५४	७.२१	९.१६	३.२२	कन्या	र. १४/२० से, मृ. एवं यम. १४/२० से
२६	र	६	०९	३४	ह	१२	३९	५.५४	७.२१	९.१६	३.२२	तुला $\frac{२३}{५१}$	अ. १२/३९ तक, र. १२/३९ तक, राज. १२/३९ से
२७	सो	$\frac{७}{८}$	$\frac{०७}{०४}$	$\frac{११}{५९}$	चि	११	०५	५.५५	७.२०	९.१६	३.२१	तुला	भ. ०७/११ से १८/०४ तक
२८	मं	९	०३	०१	स्वा	०९	४३	५.५५	७.२०	९.१६	३.२१	वृ. $\frac{०३}{५०}$	र. ०९/४३ से, कु. ०३/०१ से
२९	बु	१०	०१	१८	वि	०८	३५	५.५६	७.१९	९.१७	३.२१	वृश्चिक	र. अहोरात्र, कु. ०८/३५ तक, अ. ०८/३५ से
३०	गु	११	२३	५२	अ	०७	४२	५.५६	७.१९	९.१७	३.२१	वृश्चिक	र. ०७/४२ तक, भ. १२/३३ से २३/५२ तक
३१	शु	१२	२२	४४	ज्ये	०७	०७	५.५७	७.१८	९.१७	३.२०	धन $\frac{०७}{०७}$	वै. ११/१४ से
१	श	१३	२१	५७	मू	०६	५०	५.५७	७.१८	९.१७	३.२०	धन	र. ०६/५० से, वै. ०९/२५ तक
२	र	१४	२१	३१	पू.षा.	०६	५४	५.५८	७.१७	९.१८	३.२०	म. $\frac{१२}{५८}$	र. ०६/५४ तक, सूर्य आश्लेषा में २१/२९ से, र. २१/२९ से, भ. २१/३१ से
३	सो	१५	२१	३१	उ.षा.	०७	२०	५.५९	७.१७	९.१८	३.१९	मकर	मृ. ०७/२० तक, र. ०७/२० तक, सि. ०७/२० से, भ. ०९/२८ तक, कु. २१/३१ से, **रक्षा बंधन,** **पक्खी**

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
४	मं	१	२१	५७	श्र	०८	१३	५.५९	७.१६	९.१८	३.१९	कुंभ २०/४९	कु. ०८/१३ तक, पं. २०/४९ से, राज. २१/५७ से
५	बु	२	२२	५३	ध	०९	३२	६.००	७.१५	९.१९	३.१९	कुंभ	पं., राज. ०९/३२ तक
६	गु	३	२४	१७	श	११	२०	६.०१	७.१४	९.१९	३.१८	कुंभ	पं., भ. ११/३१ से २४/१७ तक
७	शु	४	०२	०८	पू.भा.	१३	३५	६.०१	७.१४	९.१९	३.१८	मीन ०६/५९	पं.
८	श	५	०४	२०	उ.भा.	१६	१३	६.०२	७.१३	९.२०	३.१८	मीन	पं.
९	र	६	०	०	रे	१९	०७	६.०२	७.१२	९.२०	३.१७	मेष १९/०७	पं. १९/०७ तक, र. १९/०७ से
१०	सो	६	०६	४५	अ	२२	०६	६.०३	७.११	९.२०	३.१७	मेष	कु. ०६/४५ तक, भ. ०६/४५ से १९/५७ तक, र. २२/०६ तक
११	मं	७	०९	०८	भ	२४	५७	६.०३	७.१०	९.२०	३.१७	मेष	राज. ०९/०८ तक, ज्वा. २४/५७ से
१२	बु	८	११	१७	कृ	०३	२७	६.०४	७.०९	९.२०	३.१६	वृष ०७/३८	सि. ०३/२७ तक, ज्वा. ११/१७ तक, ज्वा. ०३/२७ से
१३	गु	९	१२	५९	रो	०५	२३	६.०४	७.०९	९.२०	३.१६	वृष	ज्वा. १२/५९ तक, भ. ०१/३६ से, मृ. ०५/२३ से, व्या. ०९/५१ से
१४	शु	१०	१४	०३	मृ	०	०	६.०५	७.०७	९.२०	३.१६	मि. १८/०६	भ. १४/०३ तक, व्या. ०९/४७ तक
१५	श	११	१४	२१	मृ	०६	३६	६.०५	७.०६	९.२०	३.१५	मिथुन	**स्वतंत्रता दिवस, पर्युषण प्रारंभ,**
१६	र	१२	१३	५१	आ	०७	०३	६.०६	७.०५	९.२१	३.१५	कर्क २४/५३	सूर्य सिंघा-सिंह में १९/१२ से, व्य. ०६/०१ से, **श्रीमज्जयाचार्य का १४०वां निर्वाण दिवस**
१७	सो	१३	१२	३६	पु / पु	०६ / ०५	४५ / ४४	६.०६	७.०४	९.२१	३.१४	कर्क	भ. १२/३६ से २३/४२ तक, व्य. ०३/३१ तक
१८	मं	१४	१०	४०	आ	०४	०९	६.०७	७.०३	९.२१	३.१४	सिंह ०४/०९	**पक्खी**
१९	बु	३० / १	०८ / ०५	१३ / २१	म	०२	०८	६.०७	७.०२	९.२१	३.१४	सिंह	कु. ०८/१२ से ०२/०८ तक, राज. ०५/२१ से

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२०	गु	२	०२	१४	पू.फा.	२३	५२	६.०७	७.०१	९.२१	३.१३	क. $\frac{०५}{१६}$	
२१	शु	३	२३	०५	उ.फा.	२१	३०	६.०८	७.००	९.२१	३.१३	कन्या	र. २१/३० से
२२	श	४	१९	५९	ह	१९	१३	६.०८	७.००	९.२१	३.१३	तुला $\frac{०६}{०८}$	मृ. एवं यम. १९/१३ तक, भ. ०९/३१ से १९/५९ तक, र. १९/१३ तक, **संवत्सरी महापर्व**
२३	र	५	१७	०६	चि	१७	०७	६.०९	६.५९	९.२१	३.१३	तुला	र. १७/०७ से,
२४	सो	६	१४	३३	स्वा	१५	२२	६.०९	६.५८	९.२१	३.१२	तुला	र. १५/२२ तक, यम. १५/२२ से, **आचार्यश्री कालूगणी का ८५वां स्वर्गवास दिवस**
२५	मं	७	१२	२४	वि	१४	०१	६.१०	६.५७	९.२२	३.११	वृ. $\frac{०८}{१८}$	भ. १२/२४ से २३/५० तक, वै २१/५२ से
२६	बु	८	१०	४२	अ	१३	०६	६.११	६.५६	९.२२	३.११	वृश्चिक	अ. १३/०६ तक, र. १३/०६ से, वै. १९/३४ तक
२७	गु	९	०९	२८	ज्ये	१२	३९	६.११	६.५५	९.२२	३.११	धन $\frac{१३}{३९}$	र. अहोरात्र, **२७वां विकास महोत्सव**
२८	शु	१०	०८	४१	मू	१२	३९	६.१२	६.५४	९.२३	३.१०	धन	कु. १२/३९ तक, र. १२/३९ तक, भ. २०/२७ से
२९	श	११	०८	२०	पू.षा.	१३	०५	६.१३	६.५३	९.२३	३.१०	म. $\frac{१९}{१४}$	भ. ०८/२० तक
३०	र	१२	०८	२४	उ.षा	१३	५४	६.१३	६.५२	९.२३	३.१०	मकर	र. १३/५४ से १५/०८ तक, सूर्य पूर्वाफाल्गुनी में १५/०८ से
३१	सो	१३	०८	५१	श्र	१५	०५	६.१४	६.५१	९.२३	३.०९	कुंभ $\frac{०३}{५०}$	सि. १५/०५ तक, र. १५/०५ से, पं. ०३/५० से, **२१८वां आचार्यश्री भिक्षु चरमोत्सव**
१	मं	१४	०९	४१	ध	१६	३९	६.१४	६.५०	९.२३	३.०९	कुंभ	पं., गज. ०९/४५ से १६/३९ तक, भ. ०९/४१ से २२/१५ तक, र. १६/३९ तक, मृ १६/३९ से
२	बु	१५	१०	५४	श	१८	३५	६.१४	६.४९	९.२३	३.०९	कुंभ	पं., कु. १८/३५ से **पक्खी**

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
३	गु	१	१२	२९	पू.भा.	२०	५२	६.१५	६.४८	९.२३	३.०९	मीन $\frac{१४}{१६}$	पं.
४	शु	२	१४	२६	उ.भा.	२३	२९	६.१५	६.४७	९.२३	३.०८	मीन	पं., राज. २३/२९ तक, अ. २३/२९ से, भ. ०३/३१ से
५	श	३	१६	४०	रे	०२	२२	६.१५	६.४५	९.२३	३.०८	मेष $\frac{०२}{२३}$	भ. १६/४० तक, पं. ०२/२२ तक
६	र	४	१९	०८	अ	०५	२५	६.१६	६.४४	९.२३	३.०७	मेष	ज्वा. ०५/२५ से
७	सो	५	२१	४०	भ	०	०	६.१६	६.४३	९.२३	३.०७	मेष	ज्वा. २१/४० तक, व्या. १६/३९ से
८	मं	६	२४	०४	भ	०८	२७	६.१७	६.४२	९.२३	३.०७	वृष $\frac{१५}{११}$	र. ०८/२७ से, भ. २४/०४ से, व्या. १७/३४ तक
९	बु	७	०२	०७	कृ	११	१६	६.१७	६.४१	९.२३	३.०६	वृष	सि. ११/१६ तक, र. ११/१६ तक, भ. १३/०९ तक
१०	गु	८	०३	३६	रो	१३	३९	६.१८	६.४०	९.२३	३.०६	मि. $\frac{०३}{३८}$	मृ. १३/३९ से
११	शु	९	०४	२१	मृ	१५	२६	६.१८	६.३९	९.२३	३.०५	मिथुन	व्य. १८/२६ से
१२	श	१०	०४	१५	आ	१६	२५	६.१८	६.३८	९.२३	३.०५	मिथुन	भ. १६/२४ से ०४/१५ तक, व्य. १७/३५ तक
१३	र	११	०३	१७	पुन	१६	३४	६.१८	६.३७	९.२३	३.०५	कर्क $\frac{१०}{३६}$	सूर्य उत्तराफाल्गुनी में ०९/०४ से, राज. ०३/१७ से
१४	सो	१२	०१	३०	पु	१५	५३	६.२०	६.३६	९.२४	३.०४	कर्क	
१५	मं	१३	२३	००	आ	१४	२५	६.२०	६.३५	९.२४	३.०३	सिंह $\frac{१४}{२५}$	भ. २३/०० से
१६	बु	१४	१९	५८	म	१२	२१	६.२१	६.३४	९.२४	३.०३	सिंह	भ. ०९/३३ तक, सूर्य कन्या में १९/०९ तक
१७	गु	३०	१६	३१	पू.फा.	०९	४९	६.२१	६.३३	९.२४	३०३	क. $\frac{१५}{०८}$	**पक्खी**

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१८	शु	१	१२	५२	उ.फा. / ह	०७ / ०४	०१ / ०८	६.२१	६.३२	९.२४	३.०३	कन्या	कु. ०७/०१ से १२/५२ तक, राज. ०४/०८ से
१९	श	२ / ३	०९ / ०५	१२ / ४१	चि	०१	२२	६.२१	६.३१	९.२४	३.०३	तुला $\frac{१४}{४४}$	र. ०१/२२ से, सि. ०१/२२ से
२०	र	४	०२	२९	स्वा	२२	५४	६.२२	६.२९	९.२४	३.०२	तुला	भ. १६/०२ से ०२/२९ तक, र. २२/५४ तक, वै. ११/४० से
२१	सो	५	२३	४५	वि	२०	५१	६.२२	६.२८	९.२४	३.०२	वृ. $\frac{१५}{१८}$	कु. एवं यम. २०/५१ तक, र. २०/५१ से, वै. ०८/०० तक
२२	मं	६	२१	३४	अ	१९	२०	६.२३	६.२७	९.२४	३.०२	वृश्चिक	र. १९/२० तक
२३	बु	७	१९	५९	ज्ये	१८	२६	६.२३	६.२५	९.२४	३.०१	धन $\frac{१८}{२६}$	यम. १८/२६ से, भ. १९/५९ से
२४	गु	८	१९	०४	मू	१८	११	६.२४	६.२३	९.२४	३.००	धन	भ. ०७/२७ तक, र. १८/११ से
२५	शु	९	१८	४६	पू.षा.	१८	३२	६.२५	६.२२	९.२४	२.५९	म. $\frac{२४}{४४}$	र. अहोरात्र
२६	श	१०	१९	०२	उ.षा.	१९	२७	६.२५	६.२१	९.२४	२.५९	मकर	र. १९/२७ तक, सूर्य हस्त में, २४/३० से, र. २४/३० से
२७	र	११	१९	४८	श्र	२०	५१	६.२६	६.२०	९.२४	२.५८	मकर	भ. ०७/२२ से १९/४८ तक, र. २०/५१ तक, राज. २०/५१ से
२८	सो	१२	२१	०१	ध	२२	४०	६.२६	६.१९	९.२४	२.५८	कुंभ $\frac{०९}{४३}$	पं. ०९/४३ से
२९	मं	१३	२२	३५	श	२४	४९	६.२६	६.१८	९.२४	२.५८	कुंभ	पं., मृ. २४/४९ तक, र. २४/४९ से
३०	बु	१४	२४	२८	पू.भा.	०३	१६	६.२७	६.१७	९.२४	२.५८	मीन $\frac{२०}{३८}$	पं., भ. २४/२८ से, र. ०३/१६ तक, राज. ०३/१६ से
१	गु	१५	०२	३७	उ.भा.	०५	५८	६.२७	६.१६	९.२४	२.५७	मीन	पं., भ. १३/३१ तक **पक्षी**

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२	शु	१	०४	५८	रे	०	०	६.२८	६.१५	९.२५	२.५७	मीन	पं., अ. अहोरात्र, व्या. २१/१५ से
३	श	२	०	०	रे	०८	५२	६.२९	६.१३	९.२५	२.५६	मेष $\frac{०८}{५२}$	पं. ०८/५२ तक, व्या. २२/०८ तक
४	र	२	०७	२९	अ	११	५४	६.२९	६.१२	९.२५	२.५६	मेष	राज. ११/५४ से, भ. २०/४६ से
५	सो	३	१०	०४	भ	१४	५७	६.२९	६.११	९.२५	२.५५	वृष $\frac{२१}{४३}$	भ. १०/०४ तक
६	मं	४	१२	३३	कृ	१७	५५	६.३०	६.१०	९.२५	२.५५	वृष	कु. १७/५५ से, व्य. २४/५६ से
७	बु	५	१४	४८	रो	२०	३६	६.३०	६.०९	९.२५	२.५५	वृष	कु. २०/३६ तक, र. २०/३६ से, व्य. ०१/३० तक
८	गु	६	१६	३८	मृ	२२	५०	६.३०	६.०८	९.२५	२.५४	मि. $\frac{०९}{४७}$	मृ. २२/५० तक, भ. १६/३८ से ०५/२० तक, र. २२/५० तक
९	शु	७	१७	५१	आ	२४	२७	६.३१	६.०७	९.२५	२.५४	मिथुन	
१०	श	८	१८	१८	पुन	०१	१७	६.३१	६.०६	९.२५	२.५४	कर्क $\frac{१९}{१०}$	सूर्य चित्रा में १३/३५ से
११	र	९	१७	५५	पु	०१	१८	६.३२	६.०५	९.२५	२.५३	कर्क	ज्वा. ०१/१८ से, भ. ०५/२४ से
१२	सो	१०	१६	४०	आ	२४	२९	६.३२	६.०४	९.२५	२.५३	सिंह $\frac{२४}{२९}$	भ. १६/४० तक, ज्वा. १६/४० तक, कु. ०५/२९ से
१३	मं	११	१४	३६	म	२२	५४	६.३३	६.०३	९.२५	२.५२	सिंह	कु. १४/३६ तक, राज. २२/५४ से
१४	बु	१२	११	५१	पू.फा.	२०	४१	६.३३	६.०२	९.२५	२.५२	क. $\frac{०२}{०३}$	राज. ११/५१ तक
१५	गु	$\frac{१३}{१४}$	$\frac{०८}{०४}$	$\frac{३४}{५४}$	उ.फा.	१७	५९	६.३४	६.०१	९.२६	२.५२	कन्या	भ. ०८/३४ से १८/४६ तक, वै. ०६/०९ से
१६	शु	३०	०१	०२	ह	१४	५९	६.३५	५.५९	९.२६	२.५१	तुला $\frac{०१}{२६}$	वै. ०१/४७ तक **पक्खी**

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१७	श	१	२१	११	चि	११	५३	६.३५	५.५८	९.२६	२.५०	तुला	सूर्य तुला में ०७/०६ से, सि. ११/५३ से, **नवरात्रि आध्यात्मिक अनुष्ठान प्रारंभ**
१८	र	२	१७	२९	स्वा / चि	०८ / ०६	५३ / १०	६.३६	५.५७	९.२६	२.५०	वृ. २४/४९	र. ०६/१० से, राज. एवं मृ. ०६/१० से
१९	सो	३	१४	१०	अ	०३	५४	६.३७	५.५६	९.२७	२.४९	वृश्चिक	भ. २४/४२ से, र. ०३/५४ तक
२०	मं	४	११	२२	ज्ये	०२	१५	६.३७	५.५५	९.२७	२.४९	धन ०२/१५	भ. ११/२२ तक, र. एवं कु. ०२/१५ से
२१	बु	५	०९	११	मू	०१	१६	६.३८	५.५४	९.२७	२.४९	धन	यम. ०१/१६ तक, र. एवं कु. ०१/१६ तक
२२	गु	६	०७	४२	पू.षा.	०१	०१	६.३८	५.५३	९.२७	२.४९	धन	
२३	शु	७	०६	५९	उ.षा.	०१	३०	६.३९	५.५२	९.२७	२.४८	म. ०७/०४	भ. ०६/५९ से १८/५५ तक, सूर्य स्वाति में २४/०१ से, गाजबीज की अस्वाध्याय प्रारंभ
२४	श	८	०७	००	श्र	०२	४०	६.३९	५.५२	९.२७	२.४८	मकर	र. ०२/४० से
२५	र	९	०७	४४	ध	०४	२४	६.४०	५.५१	९.२८	२.४८	कुंभ २५/२८	र. अहोरात्र, पं. १५/२८ से
२६	सो	१०	०९	०२	श	०६	३७	६.४१	५.५१	९.२८	२.४७	कुंभ	पं., भ. २१/५२ से, र. ०६/३७ तक, कु. ०६/३७ से
२७	मं	११	१०	४९	पू.भा.	०	०	६.४१	५.४९	९.२८	२.४७	मीन ०२/३२	पं., भ. १०/४९ तक, कु. १०/४९ तक, व्या. ०१/०९ से
२८	बु	१२	१२	५६	पू.भा.	०९	१२	६.४२	५.४८	९.२८	२.४६	मीन	पं., राज. ०९/१२ से १२/५६ तक, व्या. ०१/४९ तक
२९	गु	१३	१५	१७	उ.भा.	१२	०१	६.४३	५.४८	९.२९	२.४६	मीन	पं., र. १२/०१ से
३०	शु	१४	१७	४७	रे	१४	५८	६.४४	५.४७	९.३०	२.४६	मेष १४/५८	अ. १४/५८ तक, पं. एवं र. १४/५८ तक, भ. १७/४७ से
३१	श	१५	२०	२०	अ	१७	५९	६.४५	५.४६	९.३०	२.४५	मेष	भ. ०७/०४ तक, व्य. ०४/२८ से **पक्खी**

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१	र	१	२२	५१	भ	२०	५८	६.४५	५.४६	९.३०	२.४५	वृष ०३/४३	व्य. ०५/१९ तक
२	सो	२	०१	१५	कृ	२३	५१	६.४५	५.४५	९.३०	२.४५	वृष	
३	मं	३	०३	२६	रो	०२	३१	६.४६	५.४४	९.३०	२.४४	वृष	भ. १४/२३ से ०३/२६ तक, राज. ०२/३१ से ०३/२६ तक
४	बु	४	०५	१६	मृ	०४	५२	६.४६	४.४३	९.३०	२.४४	मि. १५/४४	
५	गु	५	०६	३८	आ	०	०	६.४७	५.४३	९.३१	२.४४	मिथुन	
६	शु	६	०	०	आ	०६	४६	६.४८	५.४२	९.३२	२.४३	कर्क ०३/४९	र. ०६/४६ से ०८/१५ तक, कु. ०६/४६ से, सूर्य विशाखा में ०८/१५ से
७	श	६	०७	२४	पुन	०८	०५	६.४९	५.४१	९.३२	२.४३	कर्क	भ. ०७/२४ से १९/३३ तक, र. ०८/०५ से
८	र	७	०७	३०	पु	०८	४५	६.५०	५.४०	९.३३	२.४२	कर्क	राज. ०७/३० तक, र. ०८/४५ तक
९	सो	८/९	०६/०५	५३/२९	आ	०८	४२	६.५१	५.४०	९.३३	२.४२	सिंह ०८/४२	कु. ०५/२९ से
१०	मं	१०	०३	२३	म/पू.फा.	०७/०६	५६/२९	६.५१	५.३९	९.३३	२.४२	सिंह	कु. ०७/५६ तक, भ. १६/३१ से ०३/२३ तक, वै. २२/४५ से
११	बु	११	२४	४१	उ.फा.	०४	२६	६.५२	५.३९	९.३४	२.४२	क. १२/०१	वै. १९/२७ तक
१२	गु	१२	२१	३१	ह	०१	५५	६.५३	५.३९	९.३४	२.४१	कन्या	
१३	शु	१३	१८	०१	चि	२३	०६	६.५३	५.३८	९.३४	२.४१	तुला १२/३२	भ. १८/०१ से ०४/११ तक, धनतेरस
१४	श	१४	१४	१९	स्वा	२०	१०	६.५४	५.३७	९.३५	२.४१	तुला	सि. २०/१० तक, दीपावली
१५	र	३०	१०	३९	वि	१७	१७	६.५५	५.३७	९.३६	२.४०	वृ. १२/००	मृ. १७/१७ से, भगवान् महावीर का २५४८वां निर्वाण कल्याणक दिवस **पक्खी**

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१६	सो	१ / २	०७ / ०३	०८ / ५९	अ	१४	३८	६.५६	५.३६	९.३६	२.४०	वृश्चिक	सूर्य वृश्चिक में ०६/५५ से, **आचार्यश्री तुलसी का १०७वां जन्म दिवस (अणुव्रत दिवस)**
१७	मं	३	०१	२०	ज्ये	१२	२४	६.५६	५.३५	९.३६	२.४०	धन १३/२४	र. १२/२४ से
१८	बु	४	२३	१९	मू	१०	४२	६.५७	५.३४	९.३६	२.३९	धन	यम. १०/४२ तक, र. १०/४२ तक, भ. १२/१५ से २३/१९ तक
१९	गु	५	२२	०२	पू.षा.	०९	४१	६.५८	५.३४	९.३७	२.३९	म. १५/३३	र. ०९/४१ से १४/१३ तक, सूर्य अनुराधा में १४/१३ से
२०	शु	६	२१	३३	उ.षा	०९	२५	६.५९	५.३४	९.३८	२.३९	मकर	र. ०९/२५ से, कु. ०९/२५ से २१/३३ तक
२१	श	७	२१	५१	श्र	०९	५६	७.००	५.३४	९.३९	२.३८	कुंभ २३/२८	र. ०९/५६ तक, भ. २१/५१ से, पं. २२/२८ से, व्या. ०६/०३ से
२२	र	८	२२	५४	ध	११	११	७.०१	५.३४	९.३९	२.३८	कुंभ	पं., भ. १०/१७ तक, व्या. ०५/५२ तक
२३	सो	९	२४	३५	श	१३	०७	७.०२	५.३४	९.४०	२.३८	कुंभ	पं., र. १३/०७ से, कु. २४/३५ से
२४	मं	१०	०२	४४	पू.भा.	१५	३३	७.०३	५.३४	९.४१	२.३८	मीन ०८/५४	पं., र. अहोरात्र, कु. १५/३३ तक, सि. १५/३३ से
२५	बु	११	०५	१२	उ.भा.	१८	२२	७.०४	५.३४	९.४१	२.३७	मीन	पं., भ. १५/५६ से ०५/१२ तक, र. १८/२२ तक
२६	गु	१२	०	०	रे	२१	२२	७.०५	५.३३	९.४२	२.३७	मेष २१/२३	पं., २१/२२ तक, व्य. ०७/३६ से
२७	शु	१२	०७	४८	अ	२४	२४	७.०६	५.३३	९.४३	२.३७	मेष	र. २४/३४ से, व्य. ०८/३० तक
२८	श	१३	१०	२३	भ	०३	२०	७.०६	५.३३	९.४३	२.३७	मेष	र. ०३/२० तक
२९	र	१४	१२	४९	कृ	०६	०४	७.०७	५.३३	९.४४	२.३६	वृष १०/०२	भ. १२/४९ से ०१/५७ तक
३०	सो	१५	१५	०१	रो	०	०	७.०७	५.३३	९.४४	२.३६	वृष	कु. १५/०१ से, **चातुर्मासिक पक्खी**

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१	मं	१	१६	५३	रो	०८	३१	७.०७	५.३३	९.४४	२.३६	मि. $\frac{२१}{३७}$	कु. ०८/३१ तक, राज. १६/५३ से
२	बु	२	१८	२३	मृ	१०	३८	७.०८	५.३३	९.४४	२.३६	मिथुन	राज. १०/३८ तक, सूर्य ज्येष्ठा में १८/३४ से
३	गु	३	१९	२८	आ	१२	२२	७.०८	५.३३	९.४४	२.३६	मिथुन	भ. ०६/५९ से १९/२८ तक, सि. १२/२२ से
४	शु	४	२०	०५	पुन	१३	३९	७.०९	५.३४	९.४५	२.३६	कर्क $\frac{०७}{२३}$	
५	श	५	२०	११	पु	१४	२८	७.१०	५.३४	९.४६	२.३६	कर्क	
६	र	६	१९	४६	आ	१४	४६	७.११	५.३४	९.४७	२.३६	सिंह $\frac{१४}{४६}$	र. १०/४६ से, यम. १४/४६ से, भ. १९/४६ से, वै. ०८/१५ से ०६/२९ तक
७	सो	७	१८	४८	म	१४	३३	७.११	५.३४	९.४७	२.३६	सिंह	भ. ०७/२१ तक, र. १४/३३ तक
८	मं	८	१७	१९	पू.फा.	१३	४८	७.१२	५.३४	९.४८	२.३५	क. $\frac{१९}{३२}$	
९	बु	९	१५	१९	उ.फा.	१२	३३	७.१३	५.३४	९.४८	२.३५	कन्या	कु. १५/१९ से, भ. ०२/०८ से
१०	गु	१०	१२	५२	ह	१०	५२	७.१४	५.३४	९.४९	२.३५	तुला $\frac{२१}{५३}$	भ. १२/५२ तक, भगवान् महावीर का २५९०वां दीक्षा कल्याणक दिवस
११	शु	११ / १२	०७ / ०७	०५ / ०३	वि / स्वा	०८ / ०६	४९ / ३१	७.१५	५.३४	९.५०	२.३५	तुला	
१२	श	१३	०३	५४	वि	०४	०६	७.१६	५.३५	९.५०	२.३५	वृ. $\frac{२३}{४२}$	भ. ०३/५४ से
१३	र	१४	२४	४६	अ	०१	४२	७.१६	५.३५	९.५१	२.३५	वृश्चिक	मृ. ०१/४२ तक, भ. १४/२० तक
१४	सो	३०	२१	४८	ज्ये	२३	२८	७.१७	५.३५	९.५२	२.३४	धन $\frac{२३}{२८}$	कु. एवं ज्वा. २३/२८ से **पक्खी**

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१५	मं	१	१९	०९	मू	२१	३३	७.१८	५.३५	९.५२	२.३४	धन	कु. एवं ज्या. १९/०९ तक, राज. २१/३३ से, सूर्य मूल एवं धनु में २१/३३ से, मलमास प्रारम्भ
१६	बु	२	१६	५६	पू.षा.	२०	०६	७.१८	५.३६	९.५२	२.३४	म. $\frac{०९}{५०}$	राज. २०/०६ तक
१७	गु	३	१५	२०	उ.षा	१९	१५	७.१९	५.३६	९.५३	२.३४	मकर	र. १९/१५ से, भ. ०२/४७ से, व्या. १६/०५ से
१८	शु	४	१४	२६	श्र	१९	०६	७.१९	५.३७	९.५४	२.३४	मकर	भ. १४/२६ तक, कु. १४/२६ से १९/०६ तक, र. १९/०६ तक, व्या. १४/०९ तक
१९	श	५	१४	१७	ध	१९	४२	७.२०	५.३७	९.५४	२.३४	कुंभ $\frac{०७}{१८}$	पं., ०७/१८ से, र. १९/४२ से
२०	र	६	१४	५५	श	२१	०३	७.२०	५.३७	९.५४	२.३४	कुंभ	पं., र. २१/०३ तक
२१	सो	७	१६	१७	पू.भा.	२३	०५	७.२१	५.३८	९.५५	२.३४	मीन $\frac{१६}{३१}$	पं., भ. १६/१७ से ०५/१२ तक, व्य. ११/५४ से
२२	मं	८	१८	१६	उ.भा.	०१	३९	७.२१	५.३८	९.५५	२.३४	मीन	पं., सि. ०१/३९ तक, र. ०१/३९ से, व्य. १२/११ तक
२३	बु	९	२०	४१	रे	०४	३४	७.२२	५.३९	९.५६	२.३४	मेष $\frac{०४}{३४}$	र. अहोरात्र, पं. ०४/३४ तक, कु एवं मृ. ०४/३४ से
२४	गु	१०	२३	१९	अ	०	०	७.२२	५.३९	९.५६	२.३४	मेष	र. अहोरात्र
२५	शु	११	०१	५६	अ	०७	३७	७.२३	५.४०	९.५७	२.३४	मेष	कु. ०७/३७ तक, र. ०७/३७ तक, भ. १२/३८ से ०१/५६ तक, राज. ०१/५६ से
२६	श	१२	०४	२०	भ	१०	३६	७.२३	५.४०	९.५७	२.३४	वृष $\frac{१७}{१९}$	
२७	र	१३	०६	२२	कृ	१३	२०	७.२४	५.४१	९.५८	२.३४	वृष	र. १३/२० से
२८	सो	१४	०	०	रो	१५	४०	७.२४	५.४१	९.५८	२.३४	मि. $\frac{०४}{४०}$	र. १५/४० तक, अ. १५/४० से, सूर्य पूर्वाषाढ़ा में २३/४६ से, र. २३/४६ से
२९	मं	१४	०७	५५	मृ	१७	३३	७.२५	५.४२	९.५९	२.३४	मिथुन	राज. ०७/५५ से १७/३३ तक, भ. ०७/५५ से २०/३१ तक, र. १७/३३ तक, यम. १७/३२ से, **पक्सी**
३०	बु	१५	०८	५९	आ	१८	५६	७.२५	५.४३	१०.००	२.३४	मिथुन	कु. १८/५६ से

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
३१	गु	१	०९	३१	पुन	१९	४९	७.२५	५.४३	१०.००	२.३४	कर्क $\frac{१३}{३८}$	सि. १९/४९ तक, गुरुपुष्यामृत योग १९/४९ से (विवाहे वर्ज्य), वै. १४/५३ से
१	शु	२	०९	३४	पु	२०	१६	७.२५	५.४४	१०.००	२.३५	कर्क	राज. २०/१६ तक, मृ. २०/१६ से, भ. २१/२६ से, वै १३/३८ तक
२	श	३	०९	११	आ	२०	१८	७.२६	५.४५	१०.००	२.३५	सिंह $\frac{२०}{१८}$	भ. ०९/११ तक
३	र	४	०८	२३	म	१९	५७	७.२६	५.४५	१०.०१	२.३५	सिंह	यम. १९/५७ तक
४	सो	$\frac{५}{६}$	$\frac{०७}{०५}$	$\frac{१५}{४८}$	पू.फा.	१९	१८	७.२७	५.४६	१०.०२	२.३५	क. $\frac{०१}{०५}$	र. १९/१८ से, भ. ०५/४८ से
५	मं	७	०४	०५	उ.फा.	१८	२२	७.२७	५.४७	१०.०२	२.३५	कन्या	भ. १६/५९ तक, र. १८।२२ तक
६	बु	८	०२	०८	ह	१७	११	७.२७	५.४८	१०.०२	२.३५	तुला $\frac{०४}{३०}$	
७	गु	९	२३	५९	चि	१५	४७	७.२७	५.४८	१०.०२	२.३५	तुला	
८	शु	१०	२१	४२	स्वा	१४	१३	७.२७	५.४९	१०.०२	२.३५	वृ. $\frac{०६}{५९}$	भ. १०/५१ से २१/४२ तक, कु. १४/१३ से, **भगवान् पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक दिवस**
९	श	११	१९	१९	वि	१२	३३	७.२७	५.५०	१०.०३	२.३६	वृश्चिक	
१०	र	१२	१६	५४	अ	१०	५१	७.२७	५.५१	१०.०३	२.३६	वृश्चिक	राज. एवं मृ. १०/५१ तक, सूर्य उत्तराषाढ़ा में ०१/४६ से
११	सो	१३	१४	३४	ज्ये	०९	११	७.२७	५.५२	१०.०३	२.३६	धन $\frac{०९}{११}$	भ. १४/३४ से ०१/२८ तक, व्या. ०५/४० से
१२	मं	१४	१२	२५	मू पू.षा	०७ ०६	३९ २३	७.२७	५.५२	१०.०३	२.३६	धन	व्या. ०२/४९ तक
१३	बु	३०	१०	३२	उ.षा.	०५	२९	७.२७	५.५३	१०.०३	२.३६	म. $\frac{१२}{०८}$	कु. ०५/२९ से **पक्खी**

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१४	गु	१	०९	०४	श्र	०५	०६	७.२७	५.५४	१०.०४	२.३७	मकर	सूर्य मकर में ०८/१६ से
१५	शु	२	०८	०७	ध	०५	१८	७.२७	५.५५	१०.०४	२.३७	कुंभ $\frac{१७}{०७}$	राज. ०५/१८ तक, पं. १७/०७ से, र. ०५/१८ से, व्य. २०/२५ से, मलमास समाप्त
१६	श	३	०७	४८	श	०६	११	७.२७	५.५६	१०.०४	२.३७	कुंभ	पं., भ. १९/५४ से, र. ०६/११ तक, व्य. १९/१३ तक
१७	र	४	०८	११	पू.भा.	०	०	७.२७	५.५७	१०.०५	२.३८	मीन $\frac{०१}{१८}$	पं., भ. ०८/११ तक
१८	सो	५	०९	१६	पू.भा.	०७	४५	७.२७	५.५८	१०.०५	२.३८	मीन	पं., कु. ०७/४५ तक, र. ०७/४५ से
१९	मं	६	११	०१	उ.भा.	०९	५६	७.२७	५.५९	१०.०५	२.३८	मीन	पं., सि. ०९/५६ तक, र. ०९/५६ तक
२०	बु	७	१३	१७	रे	१२	३८	७.२६	५.५९	१०.०५	२.३८	मेष $\frac{१२}{३८}$	पं. १२/३८ तक, मृ. १२/३८ से, भ. १३/१७ से ०२/३३ तक
२१	गु	८	१५	५२	अ	१५	३८	७.२५	६.००	१०.०४	२.३९	मेष	र. १३/३८ से
२२	शु	९	१८	३१	भ	१८	४१	७.२४	६.००	१०.०३	२.३९	वृष $\frac{०१}{२६}$	र. अहोरात्र
२३	श	१०	२०	५७	कृ	२१	३३	७.२४	६.०१	१०.०३	२.३९	वृष	र. २१/३३ तक, अ. २१/३३ से (प्रवाणे वर्ज्य), सूर्य श्रवण में ०४/०० से, र. ०४/०० से
२४	र	११	२२	५९	रो	२४	०१	७.२४	६.०२	१०.०३	२.३९	वृष	भ. १०/०२ से २२/५९ तक, र. २४/०१ तक, राज. २४/०१ से
२५	सो	१२	२४	२५	मृ	०१	५६	७.२४	६.०३	१०.०३	२.४०	मि. $\frac{१३}{०३}$	अ. ०१/५६ तक, वै. २२/२९ से
२६	मं	१३	०१	१२	आ	०३	१२	७.२३	६.०३	१०.०३	२.४१	मिथुन	यम. ०३/१२ तक, र. ०३/१२ से, वै. ०१/५७ तक, गणतंत्र दिवस
२७	बु	१४	०१	१८	पुन	०३	५०	७.२२	६.०४	१०.०३	२.४१	कर्क $\frac{०७}{४३}$	भ. ०१/१८ से, र. ०३/५० तक, राज. ०३/५० से
२८	गु	१५	२४	४६	पु	०३	५१	७.२२	६.०५	१०.०३	२.४१	कर्क	गुरुपुष्यामृत योग ०३/५१ तक (विवाहे वर्ज्य), भ. १३/०६ तक, **पक्खी**

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२९	शु	१	२३	४३	आ	०३	२२	७.२२	६.०६	१०.०३	२.४१	सिंह $\frac{०३}{२२}$	मृ. ०३/२२ तक
३०	श	२	२२	१४	म	०२	२९	७.२२	६.०७	१०.०३	२.४१	सिंह	
३१	र	३	२०	२६	पू.फा.	०१	१९	७.२२	६.०८	१०.०३	२.४१	क. $\frac{०६}{५९}$	राज. २०/२६ तक, भ. ०९/२२ से २०/२६ तक
१	सो	४	१८	२६	उ.फा.	२३	५८	७.२२	६.०९	१०.०३	२.४२	कन्या	कु. २३/५८ से
२	मं	५	१६	२१	ह	२२	३४	७.२२	६.०९	१०.०३	२.४२	कन्या	कु. २२/३४ तक, र. २२/३४ से
३	बु	६	१४	१४	चि	२१	०९	७.२१	६.१०	१०.०३	२.४२	तुला $\frac{०६}{५९}$	राज. १४/१४ से २१/०९ तक, भ. १४/१४ से ०१/११ तक, र. २१/०९ तक
४	गु	७	१२	०९	स्वा	१९	४६	७.२१	६.११	१०.०३	२.४२	तुला	
५	शु	८	१०	०९	वि	१८	२९	७.२०	६.१२	१०.०३	२.४४	वृ. $\frac{१२}{४८}$	
६	श	$\frac{९}{१०}$	$\frac{०८}{०६}$	$\frac{१५}{२८}$	अ	१७	१९	७.१९	६.१३	१०.०३	२.४४	वृश्चिक	सूर्य धनिष्ठा में ०७/१३ से, भ. १९/२० से ०६/२८ तक, व्या. १६/३९ से
७	र	११	०४	४९	ज्ये	१६	१६	७.१९	६.१४	१०.०३	२.४४	धन $\frac{१६}{३६}$	सि. १६/१६ से, व्या. १४/०१ से
८	सो	१२	०३	२१	मू	१५	२१	७.१८	६.१५	१०.०२	२.४४	धन	
९	मं	१३	०२	०७	पू.षा.	१४	४०	७.१७	६.१६	१०.०२	२.४५	म. $\frac{२०}{३२}$	भ. ०२/०७ से, व्य. ०७/०४ से
१०	बु	१४	०१	११	उ.षा.	१४	१३	७.१६	६.१७	१०.०१	२.४५	मकर	भ. १३/३७ तक, व्य. ०५/०९ तक
११	गु	३०	२४	३८	श्र	१४	०७	७.१५	६.१७	१०.००	२.४६	कुंभ $\frac{०२}{१२}$	पं. ०२/१२ से **पक्खी**

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१२	शु	१	२४	३२	घ	१४	२५	७.१४	६.१८	१०.००	२.४६	कुंभ	पं., सूर्य कुंभ में २१/१३ से
१३	श	२	२४	५९	श	१५	१३	७.१४	६.१८	१०.००	२.४६	कुंभ	पं.
१४	र	३	०२	०१	पू.भा.	१६	३४	७.१३	६.१९	९.५९	२.४७	मीन १०/११	पं., र. १६/३४ से, राज. १६/३४ से ०२/०१ तक
१५	सो	४	०३	३९	उ.भा.	१८	३०	७.१२	६.२०	९.५९	२.४७	मीन	पं., भ. १४/४६ से ०३/३९ तक, र. १८/३० तक
१६	मं	५	०५	४८	रे	२०	५८	७.१२	६.२१	९.५९	२.४७	मेष २०/५८	पं. २०/५८ तक, र. एवं कु. २०/५८ से, अ. २०/५८ से (प्रवेशे वर्ज्य), वसंत पंचमी
१७	बु	६	०	०	अ	२३	५०	७.११	६.२१	९.५९	२.४८	मेष	मृ. २३/५० तक, र. एवं कु. २३/५० तक
१८	गु	६	०८	१९	भ	०२	५५	७.१०	६.२२	९.५८	२.४८	मेष	यम. ०२/५५ से
१९	शु	७	११	००	कृ	०५	५८	७.१०	६.२३	९.५८	२.४८	वृष ०९/४३	भ. ११/०० से २४/१८ तक, ज्वा. ११/०० से ०५/५८ तक, सूर्य शतभिषा में ११/३८ से, यम. ०५/५८ से, वै. ०४/३३ से, **१५ वां मर्यादा महोत्सव**
२०	श	८	१३	३३	रो	०	०	७.०९	६.२३	९.५७	२.४८	वृष	अ. अहोरात्र (प्रयाणे वर्ज्य), ज्वा. १३/३३ से, वै. ०५/१५ तक
२१	र	९	१५	४३	रो	०८	४४	७.०८	६.२४	९.५७	२.४९	मि. २१/५५	ज्वा. ०८/४४ तक, र. ०८/४४ से
२२	सो	१०	१७	१८	मृ	१०	५८	७.०७	६.२४	९.५६	२.४९	मिथुन	र. अहोरात्र, अ. १०/५८ तक, भ. ०५/४९ से
२३	मं	११	१८	०७	आ	१२	३१	७.०६	६.२५	९.५६	२.५०	मिथुन	यम. १२/३१ तक, भ. १८/०७ तक, र. १२/३१ तक, कु. १२/३१ से १८/०७ तक
२४	बु	१२	१८	०७	पुन	१३	१७	७.०५	६.२५	९.५५	२.५०	कर्क ०७/११	राज. १३/१७ से १८/०७ तक
२५	गु	१३	१७	२०	पु	१३	१७	७.०४	६.२६	९.५४	२.५१	कर्क	गुरुपुष्यामृत योग १३/१७ तक, र. १३/१७ से
२६	शु	१४	१५	५१	आ	१२	३५	७.०३	६.२७	९.५४	२.५२	सिंह १२/३५	मृ. १२/३५ तक, र. १२/३५ तक, भ. १५/५१ से ०२/५३ तक **पक्खी**
२७	श	१५	१३	४८	म	११	१८	७.०२	६.२७	९.५३	२.५२	सिंह	

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२८	र	१	११	२०	पू.फा.	०९	३६	७.०१	६.२८	९.५३	२.५२	क. १५/०८	
१	सो	२ ३	०८ ०५	३७ ४८	उ.फा. ह	०७ ०५	३८ ३३	६.५९	६.२९	९.५२	२.५३	कन्या	भ. १९/१३ से ०५/४८ तक
२	मं	४	०३	०१	चि	०३	३०	६.५८	६.३०	९.५१	२.५३	तुला १६/३१	
३	बु	५	२४	२४	स्वा	०१	३७	६.५७	६.३०	९.५०	२.५३	तुला	कु. २४/२४ से, र. ०१/३७ से, व्या. ०२/४२ से
४	गु	६	२२	०१	वि	२३	५९	६.५६	६.३०	९.५०	२.५३	वृ. १८/२२	र. १८/०१ तक, सूर्य पूर्वाभाद्रपद में १८/०१ से, भ. २२/०१ से, र. २३/५९ से, व्या. २३/३६ तक
५	शु	७	१९	५६	अ	२२	३९	६.५५	६.३१	९.४९	२.५४	वृश्चिक	राज. १९/५६ तक, भ. ०८/५६ तक, र. २२/३९ तक
६	श	८	१८	१२	ज्ये	२१	४०	६.५४	६.३१	९.४८	२.५४	धन २१/४०	
७	र	९	१६	४९	मू	२१	०१	६.५३	६.३२	९.४८	२.५५	धन	सि. २१/०१ तक, भ. ०४/१५ से, व्य. १५/५३ से
८	सो	१०	१५	४६	पू.षा.	२०	४२	६.५२	६.३३	९.४७	२.५५	म. ०२/४०	भ. १५/४६ तक, मृ. २०/४२ से, व्य. १३/५१ तक
९	मं	११	१५	०४	उ.षा.	२०	४३	६.५१	६.३४	९.४७	२.५६	मकर	
१०	बु	१२	१४	४२	श्र	२१	०४	६.५०	६.३४	९.४६	२.५६	मकर	
११	गु	१३	१४	४२	ध	२१	४७	६.४९	६.३४	९.४५	२.५६	कुंभ ०९/२३	पं. ०९/२३ से, भ. १४/४२ से ०२/५० तक
१२	शु	१४	१५	०५	श	२२	५३	६.४८	६.३५	९.४५	२.५७	कुंभ	पं.
१३	श	३०	१५	५३	पू.भा.	२४	२४	६.४७	६.३५	९.४४	२.५७	मीन १७/५८	पं. **पक्खी**

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१४	र	१	१७	०८	उ.भा.	०२	२१	६.४६	६.३६	९.४४	२.५७	मीन	पं., राज. १७/०८ से ०२/२१ तक, सूर्य मीन में १८/०४ से, मलमास प्रारंभ
१५	सो	२	१८	५१	रे	०४	४५	६.४५	६.३७	९.४३	२.५७	मेष $\frac{०४}{४५}$	पं. ०४/४५ तक, र. ०४/४५ से
१६	मं	३	२१	०१	अ	०	०	६.४४	६.३८	९.४२	२.५८	मेष	अ. अहोरात्र (प्रवेशे वर्ज्य), र. अहोरात्र
१७	बु	४	२३	३१	अ	०७	३२	६.४३	६.३९	९.४२	२.५९	मेष	मू. ०७/३२ तक, र. ०७/३२ तक, भ. १०/१४ से २३/३१ तक, ज्वा. २३/३१ से, सूर्य उत्तराभाद्रपद में ०२/२३ से, र. ०२/२३ से, वै. ०९/०१ से
१८	गु	५	०२	११	भ	१०	३६	६.४२	६.३९	९.४१	२.५९	वृष $\frac{१७}{२३}$	र. एवं ज्वा. १०/३६ तक, यम. १०/३६ से, वै. ०९/५७ तक
१९	शु	६	०४	५०	कृ	१३	४५	६.४१	६.३९	९.४०	२.५९	वृष	र. १३/४५ से, कु. १३/४५ से ०४/५० तक, यम. १३/४५ से
२०	श	७	०	०	रो	१६	४६	६.४०	६.३९	९.४०	३.००	मि. $\frac{०६}{१०}$	अ. १६/४६ तक (प्रयाणे वर्ज्य), र. १६।४६ तक
२१	र	७	०७	११	मृ	१९	२५	६.३९	६.४०	९.३९	३.००	मिथुन	राज. ०७/११ तक, भ. ०७/११ से, २०/११ तक
२२	सो	८	०९	०१	आ	२१	२८	६.३८	६.४१	९.३९	३.०१	मिथुन	र. २१/२८ से
२३	मं	९	१०	०७	पुन	२२	४५	६.३६	६.४१	९.३७	३.०१	कर्क $\frac{१६}{३९}$	र. अहोरात्र, कु. १०/०७ से २२/४५ तक
२४	बु	१०	१०	२३	पु	२३	१२	६.३५	६.४२	९.३७	३.०२	कर्क	भ. २२/१२ से, र. २३/१२ तक
२५	गु	११	०९	४७	आ	२२	४८	६.३३	६.४३	९.३६	३.०३	सिंह $\frac{२२}{४८}$	भ. ०९/४७ तक
२६	शु	$\frac{१२}{१३}$	$\frac{०८}{०६}$	$\frac{२२}{१३}$	म	२१	३९	६.३२	६.४३	९.३५	३.०३	सिंह	र. २१/३९ से, सि. २१/३९ से
२७	श	१४	०३	२८	पू.फा.	१९	५२	६.३१	६.४४	९.३४	३.०३	क. $\frac{०१}{२०}$	र. १९/५२ तक, भ. ०३/२८ से
२८	र	१५	२४	१९	उ.फा.	१७	३७	६.३०	६.४४	९.३४	३.०३	कन्या	भ. १३/५६ तक, अ. १७/३७ से, होलिका **चातुर्मासिक पक्खी**

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२९	सो	१	२०	५६	ह	१५	०३	६.२९	६.४५	९.३३	३.०४	तुला $\frac{०१}{४३}$	कु. १५/०३ तक, व्या. १७/५५ से, धुलेटी
३०	मं	२	१७	२९	चि	१२	२३	६.२८	६.४५	९.३२	३.०४	तुला	राज. १२/२३ तक, भ. ०३/४७ से, व्या. १३/५५ तक
३१	बु	३	१४	०८	स्वा	०९	४७	६.२७	६.४५	९.३१	३.०४	वृ. $\frac{०१}{५८}$	सूर्यरेवती में १३/१६ से, भ. १४/०८ तक
१	गु	४	११	०२	वि / अ	०७ / ०५	२३ / २०	६.२६	६.४६	९.३१	३.०५	वृश्चिक	व्य. ०२/४८ से
२	शु	५ / ६	०८ / ०६	१८ / ००	ज्ये	०३	४५	६.२५	६.४६	९.३०	३.०५	धन $\frac{०३}{४५}$	र. ०३/४५ से, कु. ०३/४५ से ०६/०० तक, भ. ०६/०० से, व्य. २३/४१ तक
३	श	७	०४	१५	मू	०२	४०	६.२४	६.४६	९.२९	३.०५	धन	भ. १७/०३ तक, र. ०२/४० तक
४	र	८	०३	०२	पू.षा.	०२	०८	६.२३	६.४७	९.२९	३.०६	धन	**भगवान ऋषभ दीक्षा कल्याणक दिवस (वर्षीतप प्रारम्भ)**
५	सो	९	०२	२१	उ.षा	०२	०७	६.२२	६.४७	९.२८	३.०६	म. $\frac{०८}{०४}$	मृ. ०२/०७ तक, सि. ०२/०७ से, कु. ०२/२१ से
६	मं	१०	०२	१२	श्र	०२	३६	६.२१	६.४७	९.२७	३.०६	मकर	भ. १४/१३ से ०२/१२ तक, कु. ०२/३६ तक
७	बु	११	०२	३१	ध	०३	३४	६.१९	६.४८	९.२६	३.०७	कुंभ $\frac{१५}{०२}$	पं., १५/०२ से, राज. ०२/३१ से ०३/३४ तक
८	गु	१२	०३	१८	श	०४	५९	६.१८	६.४८	९.२५	३.०७	कुंभ	पं.
९	शु	१३	०४	३०	पू.भा.	०	०	६.१७	६.४८	९.२५	३.०८	मीन $\frac{२४}{१८}$	पं., भ. ०४/३० से
१०	श	१४	०६	०५	पू.भा.	०६	४८	६.१६	६.४९	९.२४	३.०८	मीन	पं., भ. १७/१४तक
११	र	३०	०	०	उ.भा.	०८	५९	६.१५	६.५०	९.२४	३.०९	मीन	पं., वै. १३/५५ से
१२	सो	३०	०८	०२	रे	११	३१	६.१४	६.५०	९.२३	३.०९	मेष $\frac{११}{३१}$	पं. ११/३१ तक, कु. ११/३१ से, वै. १४/२८ तक **पक्खी**

		कोलकाता		दिल्ली		मुम्बई		चेन्नई		बैंगलोर		जोधपुर	
महीना		सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त
जनवरी	१	६.१९	५.००	७.१७	५.३२	७.१५	६.०९	६.३४	५.५०	६.४५	६.०१	७.२८	५.५४
	१६	६.२२	५.१०	७.१९	५.४४	७.१८	६.१८	६.३८	५.५९	६.४९	६.१०	७.३०	६.०५
फरवरी	१	६.१९	५.२१	७.१३	५.५७	७.१६	६.२८	६.३८	६.०७	६.४९	६.१७	७.२६	६.१७
	१६	६.०१	५.३०	७.०३	६.०९	७.१०	६.३६	६.३४	६.१२	६.४५	६.२३	७.१६	६.२८
मार्च	१	६.०१	५.३७	६.५०	६.१९	७.०१	६.४१	६.२८	६.१५	६.३८	६.२६	७.०४	६.३६
	१६	५.४७	५.४३	६.३३	६.२८	६.४९	६.४६	६.१९	६.१६	६.२९	६.२७	६.४९	६.४४
अप्रैल	१	५.३२	५.४९	६.१४	६.३७	६.३५	६.४९	६.०८	६.१८	६.१९	६.२८	६.३२	६.५२
	१६	५.१८	५.५४	५.५८	६.४५	६.२३	६.५३	५.५९	६.१९	६.०९	६.२९	६.१७	६.५९
मई	१	५.०७	६.००	५.४४	६.५४	६.१३	६.५८	५.५१	६.२१	६.०२	६.३२	६.०३	७.०७
	१६	४.५९	६.०७	५.३३	७.०३	६.०६	७.०३	५.४६	६.२५	५.५७	६.३५	५.५४	७.१५
जून	१	४.५५	६.१४	५.२७	७.१२	६.०३	७.१०	५.४४	६.२९	५.५५	६.४०	५.४९	७.२३
	१६	४.५५	६.२०	५.२६	७.१८	६.०४	७.१५	५.४६	६.३४	५.५७	६.४४	५.४८	७.२९
जुलाई	१	४.५९	६.२२	५.३०	७.२१	६.०८	७.१७	५.४९	६.३६	६.००	६.४७	५.५२	७.३१
	१६	५.०४	६.२१	५.३७	७.१८	६.१३	७.१६	५.५४	६.३६	६.०४	६.४७	५.५९	७.२९
अगस्त	१	५.११	६.१७	५.४७	७.०९	६.१८	७.११	५.५७	६.३३	६.०८	६.४४	६.०७	७.२२
	१६	५.१७	६.१०	५.५४	६.५७	६.२३	७.०२	६.००	६.२६	६.११	६.३७	६.१४	७.१०
सितम्बर	१	५.२२	५.५०	६.०३	६.४०	६.२७	६.५०	६.०१	६.१७	६.१२	६.२७	६.२१	६.५४
	१६	५.२७	५.३६	६.१०	६.२२	६.२९	६.३७	६.०१	६.०६	६.१२	६.१७	६.२७	६.३८
अक्टूबर	१	५.३१	५.२१	६.१८	६.०४	६.३२	६.२४	६.०१	५.५६	६.१२	६.०६	६.३३	६.२१
	१६	५.३६	५.०८	६.२६	५.४८	६.३६	६.१२	६.०२	५.४७	६.१३	५.५७	६.४०	६.०७
नवम्बर	१	५.४४	४.५६	६.३६	५.३४	६.४२	६.०२	६.०५	५.३९	६.१६	५.५०	६.४९	५.५३
	१६	५.५२	४.५०	६.४८	५.२५	६.४९	५.५७	६.११	५.३६	६.२१	५.४७	७.००	५.४५
दिसम्बर	१	६.०२	४.४८	७.००	५.२१	६.५८	५.५६	६.१८	५.३७	६.२९	५.४८	७.११	५.४२
	१६	६.१२	४.५२	७.१०	५.२४	७.०७	६.०१	६.२६	५.४२	६.३७	५.५३	७.२१	५.४५

नक्षत्र से राशि और नामाक्षर का ज्ञान

जिस दिन बालक का जन्म हो, उस समय का नक्षत्र पंचांग में देखें, फिर नक्षत्र के अनुसार नाम का अक्षर और राशि नीचे लिखी तालिका से जानें–

अक्षर	नक्षत्र	राशि	अक्षर	नक्षत्र	राशि
चू चे चो ला	अश्विनी	मेष	पे पो, रा री	चित्रा	कन्या-२, तुला-२
ली लू ले लो	भरणी	मेष	रू रे रो ता	स्वाति	तुला
आ, ई उ ए	कृतिका	मेष-१, वृष-३	ती तू ते, तो	विशाखा	तुला-३, वृश्चिक-१
ओ वा वी वू	रोहिणी	वृष	ना नी नू ने	अनुराधा	वृश्चिक
वे वो, क की	मृगशिरा	वृष-२, मिथुन-२	नो या यी यु	ज्येष्ठा	वृश्चिक
कु घ ड़ छ	आर्द्रा	मिथुन	ये यो भा भी	मूल	धन
के को ह, ही	पुनर्वसु	मिथुन-३, कर्क-१	भू धा फा ढ़ा	पूर्वाषाढ़ा	धन
हु हे हो डा	पुष्य	कर्क	भे, भो जा जी	उत्तराषाढ़ा	धन-१, मकर-३
डी डू ड डो	आश्लेषा	कर्क	खा खू खे खो	श्रवण	मकर
मा मी मू मे	मघा	सिंह	गा गी, गू गे	धनिष्ठा	मकर-२, कुम्भ-२
मो टा टी टू	पूर्वाफाल्गुनी	सिंह	गो सा सि सू	शतभिषा	कुम्भ
टे, टो प पी	उत्तराफाल्गुनी	सिंह-१, कन्या-३	से सो द, दि	पूर्वाभाद्रपद	कुम्भ-३, मीन-१
पू ष ण ठ	हस्त	कन्या	दू थ झ ञ	उत्तराभाद्रपद	मीन
			दे दो च ची	रेवती	मीन

राशि स्वामी–मेष और वृश्चिक का मंगल, वृषभ और तुला का शुक्र, मिथुन और कन्या का बुध, कर्क का चन्द्र, सिंह का सूर्य, धन और मीन का गुरु, मकर और कुंभ का स्वामी शनि होता है।

गुरु-दर्शन के लिए नक्षत्र

रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, उत्तराषाढ़ा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद, रेवती, अश्विनी, ज्येष्ठा, श्रवण, अनुराधा तथा शुभ वार।

घात-चक्रम्

घात तिथि घातवारः घातनक्षत्रमेव च। यात्रायां वर्जये प्राज्ञैरन्य कर्मसुशोभनम्॥

राशि–	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन
घात मास–	कार्तिक	मिगसर	आषाढ़	पोष	ज्येष्ठ	भाद्रपद	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
घात तिथि–	१-६-११	५-१०-१५	२-७-१२	२-७-१२	३-८-१३	५-१०-१५	४-९-१४	१-६-११	३-८-१३	४-९-१४	३-८-१३	५-१०-१५
घात वार–	रविवार	शनिवार	सोमवार	बुधवार	शनिवार	शनिवार	गुरुवार	शुक्रवार	शुक्रवार	मंगलवार	गुरुवार	शुक्रवार
घात नक्षत्र–	मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूल	श्रवण	शतभिषा	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
घात प्रहर–	१	४	३	१	१	१	४	१	१	४	३	४
पु. घात चंद्र	मेष	कन्या	कुंभ	सिंह	मकर	मिथुन	धन	वृषभ	मीन	सिंह	धन	कुंभ
स्त्री घात चंद्र	मेष	धन	धन	मीन	वृश्चिक	वृश्चिक	मीन	धन	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	कुंभ

आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा घोषित आगामी मर्यादा महोत्सव एवं चतुर्मास

वर्ष	मर्यादा महोत्सव	चतुर्मास
सन् २०२०	हुबली (कर्नाटक)	हैदराबाद (तेलंगाना)
सन् २०२१	रायपुर (छत्तीसगढ़)	भीलवाड़ा (राजस्थान)
सन् २०२२	बीदासर (राजस्थान)	छापर (राजस्थान)
सन् २०२३	बायतू (राजस्थान)	मुंबई (महाराष्ट्र)

यात्रा में चंद्र विचार

मेषे च सिंहे धन पूर्व भागे, वृषे च कन्या मकरे च याम्ये।
युग्मे तुले कुंभसु पश्चिमायां, कार्कालि मीने दिशिचोत्तरस्याम्।।

अर्थ— मेष, सिंह, धन पूर्व। वृष कन्या, मकर दक्षिण।
मिथुन, तुला, कुंभ पश्चिम। कर्क, वृश्चिक, मीन, उत्तर।

फलम्— सन्मुखे अर्थलाभाय, दक्षिणे सुखसंपदा।
पृष्ठे तु प्राणनाशाय, वामे चंद्रे धनक्षयः।।

अर्थ— सन्मुख का चन्द्रमा, धनदाता दाहिना सुखदाता।
पीठ का प्राण-हर्ता और बायां धन-हर्ता।

यात्रा में योगिनी विचार

ईशान ३०/८	पूर्व १/९	अग्नि ३/११
उत्तर २/१०	योगिनी सुखदा वामे। पृष्ठे वांछित दायिनी।। दक्षिणे धनहंत्री च। सन्मुखे मरणप्रदा।।	दक्षिण ५/१३
वायव्य ७/१५	पश्चिम ६/१४	नैऋत्य ४/१२

दिशाशूल-विचार-चक्रम्

	पूर्व चन्द्र, शनि	
उत्तर मंगल, बुध	दिशाशूल ले जावो वामे। राहू योगिनी पूठ।। सन्मुख लेवै चन्द्रमा। लावे लक्ष्मी लूट।।	दक्षिण गुरु
	पश्चिम रवि, शुक्र	

काल-राहू-विचार-चक्रम्

ईशान	पूर्व शनि	अग्नि शुक्र
उत्तर रवि	अर्कोत्तरो वायुदिशा च सोमे भौमे प्रतीच्यां बुधनैऋते च याम्ये गुरौ वह्निदिशा च शुक्रे मंदे च पूर्वे प्रवदंति काल।	दक्षिण गुरु
सोम वायव्य	मंगल पश्चिम	बुध नैऋत्य

अभिजित मुहूर्त—दिनमान का आधा करने से जो समय प्राप्त हो उस समय से २४ मिनट पहले और २४ मिनट बाद तक अभिजित मुहूर्त रहता है, जो नगर प्रवेश आदि में श्रेष्ठ माना जाता है। इस मुहूर्त का बुधवार के दिन निषेध है।

सुयोग-कुयोग चक्र

योग	तिथि या नक्षत्र	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
सिद्धि	तिथि			३,८,१३ (जया)	२,७,१२ (भद्रा)	५,१०,१५ (पूर्णा)	१,६,११ (नंदा)	४,९,१४ (रिक्ता)
	–नक्षत्र	मूल	श्रवण	उ. भाद्रपद	कृतिका	पुनर्वसु	पू. फा.	स्वाति
अमृतसिद्धि	–नक्षत्र	हस्त	मृगशिरा	अश्विनी	अनुराधा	पुष्य	रेवती	रोहिणी
सर्वार्थसिद्धि	–नक्षत्र	मू. ह. पुष्य अश्वि. रे. उत्तरा-३	अनु. श्र.रो. कृ. पुष्य	उ.भा.अश्वि. कृ. आश्ले.	ह. कृ.रो. मृ. अनु.	पुन.पुष्य.रे. अनु. अश्वि.	अश्वि.रे. श्र. पुन. अनु.	रो. स्वा. श्र.
आनन्द	–नक्षत्र	अश्वि.	मृ.	आश्ले.	ह.	अनु.	उ. षा.	श.
मृत्यु	तिथि–	१,६,११	२,७,१२	१,६,११	३,८,१३	४,९,१४	२,७,१२	५,१०,१५
	–नक्षत्र	अनु.	उ.षा.	शत.	अश्वि.	मृग.	आश्ले.	हस्त.
कालयोग	–नक्षत्र	भ.	आर्द्रा	म.	चि.	ज्ये.	अभि.	पू. भा.

विशेष सुयोग (१) २,३,७,१२,१५ तिथि, रविवार, मंगलवार, बुधवार, शुक्रवार तथा भरणी, मृगशिरा, पुष्य, पू. षा, चित्रा, अनुराधा, धनिष्ठा, उ.भा. नक्षत्र–इनमें तीनों का सुयोग मिलने पर राजयोग बनता है, जो विशेष सिद्धि-दायक है।

(२) १,५,६,१०,११ तिथि, सोम, मंगल, बुध, शुक्रवार तथा अश्वि., रो., पुन., मघा, ह., वि., मू., श्र., पू. भ. नक्षत्र–इनमें तीनों का संयोग मिलने पर कुमार योग बनता है, जो शुभ है।

विशेष कुयोग–यदि एकम तिथि को मूल नक्षत्र हो, पंचमी को भरणी हो, अष्टमी को कृतिका हो, नवमी को रोहिणी हो, दशमी को आश्लेषा हो तो ज्वालामुखी योग बनता है, जो सब कार्यों में वर्जित है।

ज्ञातव्य– (क) सुयोग और कुयोग दोनों होने पर कुयोग का फल नहीं रहता।

(ख) अभिजित नक्षत्र–उत्तराषाढ़ा का चौथा चरण तथा श्रवण का प्रथम पन्द्रहवां भाग अभिजित नक्षत्र होता है।

पौरसी प्रमाण

दिनांक	पग	आंगुल	घंटा	मिनट
२१ अप्रैल	२	८	३	१२
२२ मई	२	४	३	२२
२२ जून	२	०	३	२७
२४ जुलाई	२	४	३	२२
२४ अगस्त	२	८	३	१२
२३ सितम्बर	३	०	३	०
२३ अक्टूबर	३	४	२	४८
२१ नवम्बर	३	८	२	३८
२२ दिसम्बर	४	०	२	३४
२० जनवरी	३	८	२	३८
२१ फरवरी	३	४	२	४८
२० मार्च	३	०	३	०

राहू-काल

वार	समय	राहू-काल बेला
रवि	सायं	४-३० से ६-००
सोम	प्रातः	७-३० से ९-००
मंगल	मध्याह्न	३-०० से ४-३०
बुध	मध्याह्न	१२-०० से १-३०
गुरु	मध्याह्न	१-३० से ३-००
शुक्र	प्रातः	१०-३० से १२-००
शनि	प्रातः	९-०० से १०-३०

टिप्पण :–राहू-काल (समय) में यात्रा करना वर्जित है।

दिन के चौघड़िये

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल

रात्रि के चौघड़िये

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

With Best Compliments from

कट्टरता सर्वत्र बुरी नहीं होती।
वह बहुत अच्छी व आवश्यक भी होती है।
व्रत पालन आदि के संदर्भ में तो कट्टरता अमृत है।

-आचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

श्री मदनलाल नाथूलाल तातेड़

मुंबई

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

किसी की सेवा कर उसको गिनाना
सेवा के महत्त्व व फल को कम करना है।
– आचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

अशोक बरमेचा

हैदराबाद

जैन विश्व भारती का महत्वपूर्ण उपक्रम आगम साहित्य का प्रकाशन

अन्य प्रकाशित आगम

1 अंगसुत्ताणि भाग – 1,2,3
2 उवंगसुत्ताणि भाग – 1,2
3 नवसुत्ताणि
4 दसवें आलियं
5 उत्तरज्झयणाणि
6 आगम शब्द कोष
7 श्री भिक्षु आगम विषय कोश भाग – 1,2
8 देशी शब्द कोश
9 निरूक्त कोश
10 एकार्थक कोश
11 जैनागम वनस्पति कोश
12 जैनागम प्राणी कोश
13 जैनागम वाद्य कोश
14 जैन पारिभाषिक कोश
15 भगवती जोड़ खण्ड 1 से 7
16 आयारो (अंग्रेजी)
17 आचारांगभाष्यम् (अंग्रेजी)
18 भगवई खण्ड 1 – (अंग्रेजी)
19 उत्तरज्झयणाणि भाग 1,2 (गुजराती)
20 सूयगडो भाग 1,2 (गुजराती)
21 आयारो
22 आचारांगभाष्यम्
23 सूयगडो
24 ठाणं
25 समवाओ
26 भगवई भाग 1,2,3,4,5
27 नायाधम्मकहाओ
28 उवासगदसाओ
29 नंदी
30 अणुओगदाराइं
31 दसवेआलियं
32 कप्पो (बृहतकल्प)
33 निसीहज्झयणं
34 दसाओ
35 विवागसुयं
36 आवस्सयं
37 इसिभासियाइं
38 निर्युक्तिपंचक
39 पिण्डनिर्युक्ति
40 व्यवहार निर्युक्ति
41 सानुवाद व्यवहार भाष्य
42 व्यवहार भाष्य
43 बृहतकल्पभाष्य भाग 1, 2
44 विशेषावस्यक भाष्य भाग 1, 2
45 निशीथ भाष्य भाग 1, 2, 3, 4
46 गाथा
47 आत्मा का दर्शन
48 सूयगडो (अंग्रेजी)
49 आवश्यक निर्युक्ति (भाग 2)
50 पंचकल्प सभाष्य
51 रायपसेणियं
52 ओघनिर्युक्ति

अधिक जानकारी हेतु संपर्क सूत्र : जैन विश्व भारती लाडनूं : 8742004849, आचार्य महाश्रमण प्रवास स्थल : 9928393902
ईमेल : books@jvbharati.org

Books are available online at : http://books.jvbharati.org

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

सही दिशा में
शक्ति का नियोजन करने वाला व्यक्ति ही
सफलता प्राप्त करता है।

-आचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

स्व.श्री सुखलाल जी श्री रतनलाल जी सेठिया की
पुण्यस्मृति में

श्रीमती माणकी देवी
विजय कुमार सोहनलाल सेठिया परिवार
चेन्नई-सरदारशहर

जैन विश्व भारती : शैक्षणिक इकाईयां

जैन विश्व भारती अपनी विभिन्न शिक्षण संबंधी इकाईयों के माध्यम से पूज्यवरों के स्वप्नों के अनुरूप आधुनिक शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों का समावेश कर मूल्यपरक शिक्षा प्रदान करते हुए स्वस्थ व्यक्ति, स्वस्थ समाज और स्वस्थ राष्ट्र के निर्माण की दिशा में सतत अग्रसर है। जैन विश्व भारती द्वारा संचालित तीनों विद्यालयों की संक्षिप्त जानकारी निम्न प्रकार है–

1. विमल विद्या विहार–पूरमपूज्य आचार्यश्री तुलसी की प्रेरणा से जैन विश्व भारती द्वारा सन् 1989 में विमल विद्या विहार के नाम से अंग्रेजी माध्यम के नगर के प्रथम प्राथमिक विद्यालय का शुभारंभ किया गया। इस विद्यालय में नर्सरी से कक्षा बारहवीं तक अंग्रेजी माध्यम से शिक्षण की व्यवस्था है तथा यह लाडनूं नगर का एकमात्र सी.बी.एस.ई. मान्यता प्राप्त सह-शैक्षिक विद्यालय है। विद्यालय में शिक्षण की आधुनिक तकनीक आई.सी.टी. (स्मार्ट क्लास) कक्षाएं संचालित हैं। वर्तमान में इस विद्यालय में 1115 छात्र-छात्राएं अध्ययनरत हैं।

• vvvldn@gmail.com • www.vimalvidyaschool.in

2. महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर–आधुनिकता और परम्परा का समुचित संगम करते हुए शिक्षा जगत के बहुआयामी संस्थान के रूप में महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल की स्थापना सन् 2006 में जयपुर में जैन विश्व भारती की एक इकाई के रूप में हुई। सी.बी.एस.ई. मान्यता प्राप्त नर्सरी से कक्षा 12 तक संचालित यह विद्यालय आधुनिक एवं तकनीकी शिक्षण पद्धतियों का प्रयोग कर संस्कारित पीढ़ी के निर्माण की दिशा में गतिशील है। वर्तमान में इस विद्यालय में 423 छात्र-छात्राएं अध्ययनरत हैं।

• mis.jaipur@gmail.com • www.misjaipur.com

3. महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, टमकोर–आचार्यश्री महाप्रज्ञ की जन्म स्थली टमकोर में स्थापित यह विद्यालय ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों के सर्वांगीण विकास और उन्हें उत्कृष्ट शिक्षा देने की दिशा में गतिशील है। यह विद्यालय सन् 2007 में प्रारम्भ हुआ एवं शैक्षणिक सत्र 2009-10 से जैन विश्व भारती की इकाई के रूप में संचालित है और अनवरत विकास के उच्च शिखरों की ओर आरूढ़ हो रहा है। नर्सरी से कक्षा 11 तक का यह विद्यालय वर्तमान में अपने विशाल निजी भवन में संचालित है। वर्तमान में इस विद्यालय में 625 छात्र-छात्राएं अध्ययनरत हैं।

• mis.tamkor@gmail.com • www.mistamkor.com

4. महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, बेंगलुरु–जैन विश्व भारती के अंतर्गत परमपूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी को जन्म शताब्दी के अवसर पर संपूर्ण देशभर में महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल की शृंखला स्थापित किए जाने का लक्ष्य लिया गया है। इसी क्रम में बेंगलुरु में देवराज मूलचंद नाहर चेरिटेबल ट्रस्ट के अंतर्गत संचालित महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, बेंगलूरु को जैन विश्व भारती के अंतर्गत संबद्धता प्रदान की गयी।

तीनों विद्यालयों में जरूरतमंद एवं मेधावी विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियां प्रदान की जाती है। छात्रवृत्ति हेतु प्रायोजकीय सहयोग सादर आमंत्रित है।

सहयोग प्रदान करने हेतु संपर्क सूत्र : 09772561866

प्रेक्षाध्यान

आचार्य तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के लोक कल्याणकारी अवदानों की शृंखला में एक प्रमुख अवदान है–'प्रेक्षाध्यान'। जो आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन दिशा-निर्देशन में जैन विश्व भारती की एक महत्त्वपूर्ण प्रवृत्ति के रूप में संचालित है। प्रेक्षाध्यान संबंधी समग्र गतिविधियों का नियमन जैन विश्व भारती के अन्तर्गत प्रेक्षा फाउण्डेशन द्वारा होता है। प्रेक्षा फाउण्डेशन द्वारा नियमित रूप से संचालित प्रेक्षाध्यान संबंधी प्रमुख गतिविधियों की जानकारी प्रस्तुत है।

1. प्रतिमाह प्रेक्षाध्यान शिविर

प्रेक्षा फाउण्डेशन द्वारा तुलसी अध्यात्म नीडम्, आचार्य तुलसी अंतर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान केन्द्र, जैन विश्व भारती, लाडनूं (राज.) के सुरम्य व शांत परिसर में अष्ट दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर प्रतिमाह आयोजित होते हैं, शिविर में भाग लेने वालों के लिए आवास, भोजन, प्रशिक्षण आदि की समुचित व्यवस्थाएं यहां उपलब्ध हैं। इन मासिक प्रेक्षाध्यान शिविरों की शृंखला में तुलसी अध्यात्म नीडम्, जैन विश्व भारती, लाडनूं में आगामी वर्ष में आयोजित होने वाले शिविरों की जानकारी निम्नलिखित है–

1. 09-17 फरवरी 2020 (प्रेक्षा प्रशिक्षक शिविर)
2. 21-28 फरवरी 2020
3. 21-28 मार्च 2020
4. 21-28 अप्रैल 2020
5. 21-28 जुलाई 2020
6. 01-08 अगस्त 2020
7. 21-28 सितम्बर 2020
8. 21-28 अक्टूबर 2020
9. 21-28 नवम्बर 2020
10. 21-28 दिसम्बर 2020

2. प्रेक्षाध्यान कार्यशालाएं

प्रेक्षाध्यान के अभ्यास एवं प्रयोग से अधिक से अधिक लोग लाभान्वित हो सकें, इस दृष्टि से प्रेक्षा फाउण्डेशन के तत्त्वावधान में विभिन्न क्षेत्रों में स्थानीय संस्थाओं (बिना जाति, लिंग, समुदाय के भेदभाव के) द्वारा प्रेक्षाध्यान कार्यशालाएं आयोजित की जा सकती है।

3. स्थानीय स्तर पर प्रेक्षावाहिनी

प्रेक्षाध्यान में रुचि रखने वाले न्यूनतम दस साधकों के समूह का नाम है–'प्रेक्षावाहिनी'। इन साधकों को प्रेक्षाध्यान के अभ्यास, प्रयोग एवं प्रशिक्षण के लिए स्थानीय स्तर पर एक सुव्यवस्थित व्यवस्था उपलब्ध हो सके एवं परस्पर संपर्क एवं संवाद बना रहे, इस दृष्टि से प्रेक्षा फाउण्डेशन के अंतर्गत देश के विभिन्न क्षेत्रों में प्रेक्षावाहिनियों का गठन हुआ है जिनकी संख्या 149 हो चुकी है।

4. प्रेक्षा कार्ड योजना

प्रेक्षा फाउण्डेशन के अंतर्गत संचालित प्रेक्षा कार्ड योजना निरन्तर गतिमान है। विभिन्न व्यक्तियों द्वारा इस योजना की सदस्यता प्राप्त की गई है एवं इस कार्ड योजना के माध्यम से कार्ड धारक को प्रदत्त प्रेक्षाध्यान संबंधी विशेष सुविधाओं यथा–प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले शिविर में किसी एक साप्ताहिक शिविर में निःशुल्क सहभागिता, प्रेक्षाध्यान पत्रिका की निःशुल्क सदस्यता इत्यादि का लाभ प्राप्त किया जा रहा है। प्रेक्षा कार्ड योजना के अंतर्गत निम्न श्रेणियां है–1. प्रेक्षा सिल्वर कार्ड 2. प्रेक्षा गोल्डन कार्ड 3. प्रेक्षा प्लेटिनम कार्ड 4. प्रेक्षा एमरेल्ड कार्ड।

5. प्रेक्षाध्यान मासिक पत्रिका

अध्यात्म, योग और अन्य जीवनोपयोगी विषयों पर आधारित मासिक पत्रिका 'प्रेक्षाध्यान' का विगत 37 वर्षों से जैन विश्व भारती के अंतर्गत

तुलसी अध्यात्म नीडम् द्वारा प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका के सदस्य बनकर प्रेक्षाध्यान से संबंधित गतिविधियों की संपूर्ण जानकारी व्यक्ति घर बैठे प्राप्त कर सकता है। प्रेक्षाध्यान पत्रिका की ऑनलाइन सदस्यता भी उपलब्ध है।

6. प्रेक्षा प्रशिक्षक

प्रेक्षा प्रशिक्षकों के निर्माण हेतु प्रेक्षा फाउण्डेशन की एक महत्त्वपूर्ण योजना जारी है। इसके अंतर्गत प्रेक्षाध्यान का एक समग्र पाठ्यक्रम तैयार किया गया है। लिखित एवं प्रायोगिक परीक्षाओं का क्रम रखा गया है। प्रेक्षा फाउण्डेशन प्रशिक्षकों निर्माण, उनसे नियमित संपर्क एवं प्रशिक्षण विधि की एकरूपता के लिए कटिबद्ध है। वर्तमान में लगभग 625 प्रेक्षा प्रशिक्षक पंजीकृत हो चुके हैं।

7. सोशल मीडिया के माध्यम से प्रेक्षा प्रसार

विगत वर्ष से प्रेक्षा साधकों की रुचि को ध्यान में रखकर विभिन्न सोशल ग्रुप्स के माध्यम से प्रेक्षा सामग्री के ऑडियो, वीडियो एवं पोस्ट व्हाटसप के माध्यम से लाखों लोगों तक प्रसारित किए जा रहे हैं।

प्रेक्षा फाउण्डेशन संबद्धता प्राप्त केन्द्र सूची

1.	तुलसी अध्यात्म नीडम्, लाडनूं	8233344482
2.	अध्यात्म साधना केन्द्र, मैहरोली	9643300655
3.	प्रेक्षा विश्व भारती, कोबा	9825033201
4.	प्रेक्षाध्यान केन्द्र, कूचबिहार	9434213099
5.	प्रेक्षाध्यान केन्द्र, राजकोट	9824043363
6.	प्रेक्षा प्रकोष्ठ, चेन्नई	9440205427
7.	महाप्रज्ञ प्रेक्षाध्यान केन्द्र, नागपुर	9373471831
8.	प्रेक्षाध्यान केन्द्र, अम्बाबाड़ी	9426087220
9.	प्रेक्षाध्यान केन्द्र, इन्दौर	9993465883
10.	प्रेक्षाध्यान केन्द्र, सूरत	9377555545
11.	प्रेक्षाध्यान केन्द्र, विक्रोली	9869990868
12.	प्रेक्षाध्यान योग साधना केन्द्र, कांदीवली	9004937723
13.	प्रेक्षाध्यान योग साधना केन्द्र (महिला), कांदीवली	9004798179
14.	प्रेक्षाध्यान योग साधना केन्द्र, दामोदरवाड़ी, कांदीवली	9004937723
15.	प्रेक्षाध्यान योग साधना केन्द्र, अशोकनगर कांदीवली	9004937723
16.	अर्हम् प्रेक्षाध्यान योग केन्द्र, गौहाटी	9435042723
17.	प्रेक्षाध्यान केन्द्र, रायपुर	9425285121
18.	प्रेक्षाध्यान केन्द्र, चेन्नई	9840845337
19.	प्रेक्षाध्यान केन्द्र, बैंगलोर	9686366250
20.	प्रेक्षाध्यान केन्द्र, गंगाशहर	9887914000
21.	प्रेक्षाध्यान केन्द्र, मणिनगर-कांकरियां	9426412624
22.	प्रेक्षाध्यान केन्द्र, उधना	9427113136
23.	प्रेक्षाध्यान केन्द्र, कांदीवली	9892474903

प्रेक्षा फाउण्डेशन
तुलसी अध्यात्म नीडम्
जैन विश्व भारती परिसर
पोस्ट : लाडनूं-341306, जिला : नागौर (राजस्थान)
फोन नं. : 01581-226119, मोबाईल नं. : 08233344482
ई-मेलः foundation@preksha.com, वेबसाईटः www.preksha.com

समण संस्कृति संकाय

तेरापंथ के नवम अधिष्ठाता गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के क्रांत मस्तिष्क से प्रस्फुटित लोककल्याणकारी अवदानों में सामाजिक, आध्यात्मिक एवं व्यावहारिक स्तर पर एक महत्त्वपूर्ण गतिविधि है 'जैन विद्या का प्रसार'।

'संस्कारों की प्रयोगशाला : समण संस्कृति संकाय'– जो भावी पीढ़ी में सद्-संस्कारों का वपन करने एवं उनके उन्नत व सुदृढ़ भविष्य का निर्माण करने के लिए जैन विद्या पाठ्यक्रम की लम्बी शृंखला के माध्यम से सन् 1977 से इस दिशा में प्रयासरत है। इस प्रयोगशाला के प्रयोगों को विश्वव्यापी बनाने की दिशा में वर्तमान में यह विभाग आचार्यश्री महाश्रमणजी के मार्गदर्शन में सतत् विकासशील है।

जैन विद्या अध्ययन का उद्देश्य

1. जैन विद्या अध्ययन के माध्यम से सभी आयु वर्ग के भाई बहनों को जैन धर्म के सिद्धांत, तत्त्व विद्या, दर्शन, मान्यताओं, परम्पराओं, आदर्शों से रूबरु करवाना। जैन विद्वान तैयार करना।

2. भौतिक संसाधनों की चकाचौंध व पाश्चात्य संस्कृति से लिप्त नई पीढ़ी को जैन संस्कृति से परिचित कराना व सद्संस्कारों का संरक्षण।

3. मानव जीवन के नियमों व प्रक्रियाओं का अध्ययन कराना जिससे जीवन में नैतिक मूल्यों का विकास हो, बौद्धिक विकास हो।

समण संस्कृति संकाय सम, शम और श्रम की संस्कृति के प्रचार का तंत्र है। उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु जैन विद्या के आयाम को विश्वव्यापी बनाने के लिए प्रतिवर्ष लगभग 300-350 केन्द्रों से हजारों प्रतिभागी संस्कार निर्माण की दिशा में अग्रसर होते हैं। परीक्षाओं के माध्यम से तैयार हुए प्रशिक्षक भी इसमें अपने समय व श्रम का नियोजन करते हैं। संकाय का पूरा तंत्र विशेष जागरूकता के साथ परीक्षाओं का संचालन करता है।

पाठ्य सामग्री

संकाय द्वारा पूज्यप्रवर के निर्देशन में सुगम व सारगर्भित जैन विद्या 9 वर्षीय पाठ्यक्रम संचालित होता है। जिसके निर्माण में मुनिश्री सुमेरमलजी 'सुदर्शन' का श्रम नियोजित हुआ था। आधुनिक पीढ़ी को ध्यान में रखते हुए इस पाठ्यक्रम के नवीनीकरण कार्य में जैन विश्व भारती के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री कीर्तिकुमारजी का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है। वर्तमान में जैन विद्या भाग 1 से 9 तक का पाठ्यक्रम इस प्रकार है–

जैन विद्या प्रथम वर्ष (भाग-1)	जैन विद्या भाग-1 (हिन्दी, अंग्रेजी)
जैन विद्या द्वितीय वर्ष (भाग-2)	जैन विद्या भाग-2 (हिन्दी, अंग्रेजी)
जैन विद्या तृतीय वर्ष (भाग-3)	जैन विद्या भाग-3
जैन विद्या चतुर्थ वर्ष (भाग-4)	जैन विद्या भाग-4
	सचित्र श्रावक प्रतिक्रमण
जैन विद्या पंचम वर्ष हेतु प्रवेश परीक्षा	जैन विद्या भाग-1 से 4
जैन विद्या पंचम वर्ष (भाग-5)	जैन तत्त्व विद्या खण्ड-1
	जैन परम्परा का इतिहास
जैन विद्या षष्ठम वर्ष (भाग-6)	जैन तत्त्व विद्या खण्ड-2, 3
	जैन धर्म : जीवन और जगत
जैन विद्या सप्तम वर्ष (भाग-7)	भिक्षु विचार दर्शन
	जीव-अजीव
जैन विद्या अष्टम वर्ष (भाग-8)	श्रमण महावीर
	(अध्याय 1-46)
	आचार्य भिक्षु
	(अध्याय 1-8, 10,11)
जैन विद्या नवम वर्ष (भाग-9)	जैन दर्शन मनन और मीमांसा
	(खण्ड-3 एवं 4)
जैन विद्या वर्ष (1-2) संयुक्त परीक्षा	जैन विद्या भाग 1,2
जैन विद्या वर्ष (3-4) संयुक्त परीक्षा	जैन विद्या भाग 3,4

जैन विद्या परीक्षाएं

जैन विद्या परीक्षाओं का नववर्षीय पाठ्यक्रम कक्षानुसार निर्धारित है, जिसकी पाठ्यपुस्तकें समण संस्कृति संकाय, जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित होती है। जैन विद्या परीक्षाओं के माध्यम से प्रतिवर्ष भारत, नेपाल एवं दुबई सहित 300-350 केन्द्रों से हजारों की संख्या में प्रतिभागी संस्कार निर्माण की दिशा में अग्रसर होते हैं। परीक्षाओं का संचालन स्थानीय संघीय संस्थाएं करती है। समण संस्कृति संकाय द्वारा स्थानीय संघीय संस्थाओं के अंतर्गत इन परीक्षाओं के व्यवस्थित संचालन की दृष्टि से आंचलिक संयोजक व केन्द्र व्यवस्थापक नियुक्त किये जाते हैं, जो विशेष जागरूकता के साथ परीक्षाओं के संचालन में सहयोग करते हैं। वर्तमान में जैन विद्या परीक्षाओं हेतु ऑनलाईन फार्म भी उपलब्ध करवा दिए गए है–http://sss.jvbharati.org

दीक्षान्त समारोह

लगभग पूज्यप्रवर के पावन सान्निध्य में चातुर्मास काल में समण संस्कृति

संकाय का दीक्षान्त समारोह आयोजित होता है, जिसमें राष्ट्रीय स्तर पर वरीयता प्राप्त ज्ञानार्थियों को सम्मानित व पुरस्कृत किया जाता है।

जैन विद्या कार्यशाला

भाई-बहिनों में तत्त्वज्ञान की रुचि जागृत करने तथा तत्त्वज्ञान की जानकारी की दृष्टि से समण संस्कृति संकाय एवं अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा संयुक्त रूप से गत छह वर्षों से राष्ट्रीय स्तर पर 'जैन विद्या कार्यशाला' का आयोजन किया जा रहा है।

प्रतिवर्ष जैन विद्या एवं तत्त्वज्ञान से संबंधित पुस्तक को आधार मानते हुए प्रतियोगिता आयोजित होती है, जिसकी 15 दिन की कक्षा चारित्रात्माओं के सान्निध्य में प्रतिदिन चलती है, जहां अध्ययन करवाया जाता है। उसके पश्चात् पूरे देश में एक दिन विभिन्न केन्द्रों पर लिखित परीक्षा आयोजित होती है। इस उपक्रम में तेरापंथ युवक परिषद् की स्थानीय शाखाओं का पूर्ण सहयोग रहता है।

राज्य स्तरीय/आंचलिक जैन विद्या कार्यकर्ता प्रशिक्षण कार्यशालाओं का आयोजन

समण संस्कृति संकाय द्वारा कार्यकर्ताओं को जैन विद्या का प्रशिक्षण प्रदान करने की दृष्टि से विभिन्न राज्यों/अंचलों में चारित्रात्माओं/समण-समणीवृंद के सान्निध्य में कार्यकर्ता प्रशिक्षण कार्यशालाओं का आयोजन समय-समय पर किया जा रहा है।

आगम मंथन प्रतियोगिता : श्रुत संपदा संवर्धन तथा आगम स्वाध्याय के प्रति रुचि जागृत करने के उद्देश्य से जैन विश्व भारती द्वारा विगत दस वर्षों से आगम मंथन प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। गत वर्ष से आगम मंथन प्रतियोगिता का संचालन समण संस्कृति संकाय के अंतर्गत किया जा रहा है। भगवान महावीर की जिनवाणी को सुधि पाठकों तक पहुंचाने का यह एक सार्थक प्रयास है।

अन्य कार्यक्रम : जैन विद्या प्रचार-प्रचार हेतु जैन विद्या सप्ताह, जैन विद्या संगठन यात्रा, जैन विद्या सम्पर्क कक्षाएं एवं विभिन्न ज्ञानवर्धक प्रतियोगिताओं का आयोजन नियमित रूप से किया जाता है। पिछले पांच वर्षों से जैन-अजैन-तेरापंथी विद्यालयों में जैन विद्या परीक्षाओं का आयोजन किया जाता है।

समण संस्कृति संकाय

जैन विश्व भारती, लाडनूं-341306 (राजस्थान)

फोन नं. 01581-226974 मो. 9785442373

E-mail : sss@jvbharati.org

महाप्रज्ञ ग्लोबल स्कूल परियोजना

जैन विश्व भारती की स्थापना के मूल उद्देश्यों में शिक्षा का प्रमुख स्थान रहा है। बौद्धिक शिक्षा के साथ-साथ मानवीय मूल्यों से युक्त शिक्षा के माध्यम से संस्कारों का निर्माण कर सर्वांगीण व्यक्तित्व का निर्माण जैन विश्व भारती का लक्ष्य रहा है। आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी के परिप्रेक्ष्य में स्थायी कार्य के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय आवासीय विद्यालय के निर्माण का कार्य जैन विश्व भारती को प्राप्त हुआ है। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने शिक्षा पर बहुत बल दिया एवं विद्यार्थी के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं भावनात्मक पक्ष के समान रूप से विकास हेतु शिक्षा प्रणाली में जीवन विज्ञान को समाविष्ट कर सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास का अभियान चलाया। पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के चिंतन को चिरस्थायी बनाये जाने के लिए आचार्य महाप्रज्ञजी के विचारों में शिक्षा स्तर को ध्यान में रख इस परियोजना को मूर्त रूप देने का लक्ष्य रखा गया है।

महावीर जयंती के पावन अवसर पर आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी वर्ष के अवसर पर जैन विश्व भारती द्वारा अत्याधुनिक सुविधाओं युक्त महाप्रज्ञ ग्लोबल स्कूल के निर्माण का संकल्प व्यक्त किया गया। इस अवसर पर आचार्यप्रवर ने पावन पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि **''जैन विश्व भारती एक ऐसी संस्था है, जो परमपूज्य गुरुदेव तुलसी की जन्मस्थली लाडनूं में सुशोभित है या जैन विश्व भारती से लाडनूं सुशोभित हो रहा है। जैन विश्व भारती के कार्यकर्ता यहां उपस्थित है। जैन विश्व भारती एक अच्छी और बड़ी संस्था है, उसके द्वारा अनेक गतिविधियां संचालित हो रही हैं। अभी एक स्कूल को भी योजना सामने आई है। एक ऐसा विद्यालय जो उच्च स्तर का हो और जहां भगवान महावीर का प्रभाव हो। ज्ञान के साथ जीवन कैसे अच्छा**

बने तथा अहिंसा आदि सिद्धांत उन विद्यार्थियों में कैसे आए, ऐसे उच्च स्तरीय विद्यालय का प्रकल्प सामने है और भी अनेक गतिविधियां है। जैन विश्व भारती खूब अच्छा काम करें।''

पूज्य प्रवर के पावन आशीर्वाद से प्रारम्भ हुए इस प्रकल्प को समाज के सहयोग से पूर्ण करने का लक्ष्य जैन विश्व भारती ने लिया है। पूज्यप्रवर के इंगितानुसार दिल्ली एवं आस पास के क्षेत्र का चयन महाप्रज्ञ ग्लोबल स्कूल के निर्माण हेतु किया गया है।

जय तुलसी एजुकेशन बोर्ड का गठन

महाप्रज्ञ ग्लोबल स्कूल एवं जैन विश्व भारती द्वारा संचालित सभी विद्यालयों के सुव्यवस्थित प्रबंधन एवं संचालन हेतु जय तुलसी एजुकेशन बोर्ड का गठन किया गया है। जिसके अंतर्गत विभिन्न श्रेणियों में अनुदानदाताओं एवं शिक्षाविदों को जोड़ा जाएगा।

विद्यालय में उपलब्ध होने वाली सुविधाएं

1 स्मार्ट क्लासरूम
2 आधुनिक पुस्तकालय एवं लैब
3 मेडिकल सुविधाएं
4 अतिथि गृह
5 आर्गेनिक फार्मिंग
6 सोलर प्लान्ट्स एवं वाटर हार्वेस्टिंग
7 योगा सेन्टर
8 विशेष खेल सुविधाएं

जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय), लाडनूं

जहां परम्परागत शिक्षा के साथ चरित्र, नैतिकता और सदाचार सिखाया जाता है

जैन विश्व भारती संस्थान अध्ययन, अध्यात्म, अनुसंधान और अनुशासन का मूर्त रूप है। जैन विश्वभारती संस्थान वैश्विक स्तर पर मानव समुदाय के सार्वभौमिक एवं वैयक्तिक उन्नयन हेतु अनेकान्त, अहिंसा, सहिष्णुता तथा शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व के उच्च सिद्धान्तों को जीवन में प्रयोग, प्रसार एवं प्रस्थापित करने का एक जीवन्त उपक्रम है। यहां प्राच्य विद्याओं के साथ पारस्परिक विषयों में भी अध्ययन, अध्यापन एवं शोध किया जाता है। हर व्यक्ति चाहता है उसकी आने वाली पीढ़ी संस्कारित एवं चरित्रवान हो, यह आज की आवश्यकता भी है। इसी को ध्यान में रखकर आचार्यश्री तुलसी के आध्यात्मिक नेतृत्व एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञ के दिशा-निर्देश में वर्ष १९९१ में चार अपारम्परिक विषयों यथा जैन विद्या, प्राकृत भाषा, अहिंसा एवं शांति तथा जीवन विज्ञान एवं योग के साथ जैन विश्वभारती संस्थान की स्थापना हुई।

संस्थान के वर्तमान अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण का आध्यात्मिक अनुशासन, कुलाधिपति श्रीमती सावित्री जिन्दल का प्रेरक मार्गदर्शन एवं कुलपति प्रोफेसर बच्छराज दूगड़ के कुशल नेतृत्व में यह संस्थान अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी विशेष पहचान रखता है। नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना हेतु कटिबद्ध यह संस्थान अपने २८ वर्ष पूरे करते हुए वर्तमान में काफी विस्तार ले चुका है। वर्तमान में छह अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों के साथ इसका अनुबंध है। 'णाणं सारमायारो'–'ज्ञान का सार है आचार' को अपना आदर्श बोधवाक्य मानकर यह विश्वविद्यालय जैन विद्या एवं प्राच्य विद्याओं, जीवन विज्ञान एवं मूल्यपरक शिक्षा तथा अहिंसा एवं शांति की शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय केन्द्र के रूप में विकसित हुआ है।

श्रेष्ठता का सत्यापन

- संस्थान अनुदान आयोग (UGC) द्वारा संस्थान को 12B में स्वीकृति प्रदान की गई है, जिससे संस्थान को शैक्षणिक गतिविधियों के विकास के लिए अनुदान प्राप्त हो सकेगा।
- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) के स्वायत्त संस्थान राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (NAAC) द्वारा संस्थान को 'A' ग्रेड प्रदान किया गया है।

● मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा संस्थान को 'ए' श्रेणी प्रदान की गई है।

● ISO 9001 : 2008 द्वारा प्रमाणित।

● देश के श्रेष्ठतम २५ निजी/मान्य विश्वविद्यालयों में इसका स्थान १७वां है।

● दी नॉलेज रिव्यू मैगजीन की सर्वे-सूची में देश के २० प्रशंसित विश्वविद्यालयों में शामिल।

● UGC के अलावा DEB एवं NCTE से मान्यता प्राप्त तथा AIU व ACU की स्थाई सदस्यता।

महिला शिक्षा में अग्रणी विश्वविद्यालय

महिला शिक्षा के क्षेत्र में संस्थान के अंतर्गत संचालित आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय अपनी स्थापना के बाद से ही प्रगति के नित नये सोपान चढ़ रहा है। संस्थान ने महिला-शिक्षा के क्षेत्र में अपनी विशेष पहचान बनाई है। महाविद्यालय में स्नातक तक कला, वाणिज्य एवं विज्ञान–तीनों संकायों में अध्ययन की उत्तम व्यवस्था है। यहां वे समस्त आधुनिक सुविधाएं एवं संसाधन उपलब्ध हैं, जिनसे छात्राओं को श्रेष्ठतम अध्यापन के साथ उनके सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त होता है। विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग में केवल महिलाओं हेतु बी.एड., बी.ए.- बी.एड, बी.एस.सी.-बी.एड. व एम.एड. शिक्षण की उत्तम व्यवस्था है।

विशेषताएं

● सुविस्तृत सुन्दर, सुरम्य, हरितिमा–युक्त, प्राकृतिक, शांत व सुरक्षित वातावरण।

● स्मार्ट क्लासेज एवं विषय एक्सपर्ट के साथ लाईव कॉन्फ्रेंसिंग सुविधायुक्त कक्षाएं।

● NCC (नेशनल कैडेट कोर) एवं NSS (राष्ट्रीय सेवा योजना) की सुविधा।

● सम्पूर्ण विश्वविद्यालय परिसर में 24×7 WI-FI की सुविधा।

● सुसमृद्ध विशाल केन्द्रीय लाईब्रेरी एवं आधुनिक प्रयोगशालाएं।

● आधुनिक संयंत्रों युक्त जिम्नेजियम तथा खेलों के लिए पर्याप्त मैदान एवं सुविधाएं।

● अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त महिला एवं पुरुष छात्रावास की पृथक् व्यवस्था।

● 24×7 पानी एवं बिजली की आपूर्ति की सुविधा। मीठे व शुद्ध पानी हेतु RO प्लांट।

● दूर-दराज के क्षेत्रों से छात्राओं को लाने व ले जाने के लिए वाहन सुविधा।

● आधुनिकतम सुविधाओं, लाईट, साउंड सिस्टम एवं संयंत्रों से सुसज्जित ऑडिटोरियम।

● सुरक्षा-व्यवस्था की दृष्टि से सम्पूर्ण परिसर में CCTV कैमरे।

● परिसर में ही होमियोपैथी, आयुर्वेदिक एवं ऐलोपैथिक चिकित्सा सुविधा।

● शुद्ध एवं स्वास्थ्यवर्द्धक खाद्य वस्तुओं हेतु विश्वविद्यालय परिसर में ही केंटीन व्यवस्था।

● जरूरतमंद विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति एवं विशेष पाठ्यक्रमों हेतु निःशुल्कः शिक्षण सुविधा।

नियमित विद्यार्थियों हेतु स्नातक के पश्चात उच्च शिक्षा के पाठ्क्रम

● **एम.ए. (मास्टर इन आर्ट्स)**—राजनीति विज्ञान, हिन्दी, अंग्रेजी, समाज कार्य, संस्कृत, प्राकृत, दर्शन, योग एवं जीवन-विज्ञान, जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन, अहिंसा एवं शांति, एम.एड.।

● **एम.फिल. (मास्टर इन फिलोसॉफी)**—जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन, अहिंसा एवं शांति, प्राकृत तथा जैन आगम।

● विविध पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा एवं सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम।

घर बैठे अध्ययन करने के इच्छुक विद्यार्थियों हेतु दूरस्थ शिक्षा के पत्राचार पाठ्यक्रम

● एम.ए.—जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन, योग एवं जीवन-विज्ञान, राजनीति विज्ञान, हिन्दी, अंग्रेजी।

● बी.ए., बी.कॉम।

शोध कार्य एवं विशिष्ट शोध अध्ययन केन्द्र

विश्वविद्यालय के जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म एवं दर्शन विभाग, प्राकृत एवं संस्कृत विभाग, अंग्रेजी विभाग, अहिंसा एवं शांति विभाग, योग एवं जीवन विज्ञान विभाग, समाज कार्य विभाग व शिक्षा विभाग में पीएच.डी. व डी.लिट् शोधकार्य की सुविधा उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त संस्थान में जैन विद्याओं के क्षेत्र में अनुसंधान हेतु भगवान महावीर इण्टरनेशनल शोध-केन्द्र एवं अनेकान्त शोधपीठ आदि शोध-अध्ययन केन्द्र संचालित हैं, जिनके अन्तर्गत संस्थान के सदस्यों एवं विविध बाह्य विषय-विशेषज्ञों द्वारा अनेक महत्त्वपूर्ण शोधकार्य पूर्ण किये गए हैं एवं वर्तमान में भी अनेक शोधकार्य जारी हैं।

भावी योजनाएं

आचार्य महाप्रज्ञ जन्म-शताब्दी के अवसर पर 'आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल फॉर नेचुरोपैथी एवं योग' परियोजना का कार्य प्रारम्भ हो गया है। उक्त भवन का शिलान्यास दिनांक १ नवम्बर को अनुदानदाताओं के कर कमलों से किया गया है। निर्माण के लिए श्री पदमचंद भुतोड़िया एवं श्री कमल किशोर ललवानी ने अपनी स्वीकृति प्रदान की है। इसी प्रकार छात्रावास निर्माण की योजना पर भी कार्य चल रहा है।

तेरापंथ धर्मसंघ की विशिष्ट संस्थाएं

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा
महासभा भवन
3, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट
कोलकाता - 700001 (पश्चिम बंगाल)
फोन : 033-22357956, 22343598
E-mail : info@jstmahasabha.org

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्
प्रशासकीय कार्यालय
अणुव्रत भवन, तीसरा तल्ला
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली - 110002
फोन - 011-23210593
E-mail : abtyp1964@gmail.com

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल
'रोहिणी' जैन विश्व भारती परिसर
पो. लाडनूं - 341306
जिला - नागौर (राजस्थान)
फोन : 01581-226070

जैन विश्व भारती
पो. - लाडनूं - 341 306
जिला : नागौर (राजस्थान)
01581-226080,224671
E-mail contact @jvbharati.org
Website : www.jvbharati.org

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय
जैन विश्व भारती परिसर
पो. - लाडनूं - 341 306
जिला - नागौर (राजस्थान)
01581-226230,226110
E-mail : office@jvbi.ac.in
Website : http:/www.jvbi.ac.in

जय तुलसी फाउण्डेशन
एक्सलैण्ड प्लैस, तीसरा तल्ला
कोलकाता - 17
फोन - 033-22902277,22903377
E-mail : jtfcal@gmail.com

अणुव्रत महासमिति
अणुव्रत भवन, तीसरा तल्ला
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली - 110002
फोन : 011-23233345, 23239963
E-mail : anuvrat_mahasamiti@yahoo.com

अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास
अणुव्रत भवन
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली - 110002
फोन. 011-23236738, 23222965

अणुव्रत विश्व भारती
विश्व शांति निलयम्
पो. - राजसमंद - 313326 (राजस्थान)
फोन : 02952-220516, 220628
E-mail : rajsamand@anuvibha.in

राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद
चपलोत गली
राजसमंद - 313326 (राजस्थान)
फोन : 02952-202010, 223100
E-mail : rass_rajsamand@rediffmail.com

पारमार्थिक शिक्षण संस्था
'अमृतायन' भवन
जैन विश्व भारती परिसर
पो. - लाडनूं - 341306
जिला - नागौर (राजस्थान)
फोन : 01581-226032, 224305

अमृत वाणी
हिन्द पेपर हाउस
951, छोटा छिपावाड़ा
चावड़ी बाजार
दिल्ली - 110006
फोन : 011-23264782, 23263906
E-mail : hindpaper@yahoo.com

आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान
'शक्तिपीठ' नोखा रोड
पो. - गंगाशहर - 334401
जिला - बीकानेर (राजस्थान)
फोन : 0151-2270396
E-mail : gurudevtulsi@gmail.com

प्रेक्षा विश्व भारती
गांधीनगर हाइवे
कोबा पाटिया
गांधीनगर - 382009 (गुजरात)
फोन. 079-23276271, 23276606
E-mail : prekshabharati@yahoo.com

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम
अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली - 110002
फोन : 08094368313,08107451951
E-email : tpfoffice@tpf.org
website : www.tpf.org.in

शिविर कार्यालय
आचार्य महाश्रमण प्रवास स्थल
सम्पर्क सूत्र :
हेमन्त बैद : 9672996960,7044448888
E-mail : campoffice@gmail.com

''जय कुंजर''

''जैन विश्व भारती एक गौरवशाली संस्था है। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का मार्गदर्शन उस संस्था को मिला है और तेरापंथ समाज के पास इतनी बड़ी संस्था का आना एक प्रकार से समाज का मानो भाग्य है, तब इतनी बड़ी संस्था समाज के हाथ में आती है। यह संस्था अब तो युवावस्था में है। इस संस्था के द्वारा मानव जाति का कल्याण हो, इस संस्था के द्वारा जैन विद्या का खूब प्रचार-प्रसार हो। इस सस्स्था के द्वारा साहित्य के माध्यम से लोगों में ज्ञान वृद्धि हो और लौकिक सेवा का काम भी चल रहा है, जो समाज के लिए महत्त्वपूर्णहोता है। जैन विश्व भारती से तीन विद्यालय सीधे साक्षात जुड़े हुए हैं, उसके अंतर्गत हैं तो स्कूलों के माध्यम से भी विद्यार्थियों को अच्छा नैतिक ज्ञान मिले। जीवन विज्ञान, जैन विद्या आदि का ज्ञान मिले, इस प्रकार जैन विश्व भारती, जिससे कामधेनु कहा जाये और जय कुंजर (विशालकाय हाथी) कहा जाये, कुछ भी कहे दें, अपने आप में बहुत बड़ी संस्था है।''

पूज्यप्रवर के शब्दों द्वारा प्रदान की गयी जय कुंजर की उपमा को चिरस्थायी बनाये जाने हेतु जय कुंजर के प्रतिरूप का निर्माण कार्य प्रगति पर है, जो शीघ्र ही जैन विश्व भारती परिसर में एक आकर्षण का केन्द्र सिद्ध होगा।

प्रस्तावित प्रतिरूप

- प्रस्तावित की ऊंचाई १२ फुट
- रंग : मूल रंग
- मस्तक स्वर्ण मंडित
- पैर : चार (पैर में सोने की बेड़ह युक्त)
- दांत : दो (दांत पर सोने के कड़े)
- आंख : दो
- कुम्भस्थल : दो
- सूंड : मूवेंट में सेंसरयुक्त (यदि कोई व्यक्ति सामने आए तो चिंघाड़े)
- घंटा : दो बड़े
- महावत : अंकुश युक्त
- ध्वनि : गंभीर ध्वनि
- महाझूल : पीठ पर डाला जाने वाला कपड़ा (कशीदायुक्त लाल रंग)

जैन विश्व भारती द्वारा प्रदत्त पुरस्कार

पूज्यप्रवरों के चिंतन का एक प्रमुख सृजन है-समाज की कामधेनु **''जैन विश्व भारती''**। जैन विश्व भारती शिक्षा, शोध, साधना, सेवा, संस्कृति आदि क्षेत्रों में तो सक्रिय भूमिका निभा ही रही है साथ ही साथ सम्मान एवं प्रोत्साहन के क्षेत्र में भी गतिशील है। इस संदर्भ में जैन विश्व भारती द्वारा ०९ पुरस्कार विभिन्न ट्रस्टों एवं महानुभावों के सहयोग से संचालित हैं। ये पुरस्कार प्रतिवर्ष निर्धारित अर्हताओं के आधार पर क्षेत्र विशेष में विशिष्ट कार्य करने वाले व्यक्तियों एवं संस्थाओं को प्रदान किये जाते हैं। पुरस्कारों से संबंधित विवरण एवं नियमावली अग्रलिखित है-

(१) आचार्य तुलसी अनेकांत सम्मान : प्रायोजक-एम.जी. सरावगी फाउण्डेशन, कोलकाता।

अर्हता :

१. सापेक्षता समन्वय, सहप्रतिपक्ष, सहिष्णुता एवं सहअस्तित्व के प्रचार-प्रसार एवं क्रियान्वयन में योगदान।

२. जैन दर्शन के महत्वपूर्ण सिद्धान्त 'अनेकान्त' के प्रचार-प्रसार एवं क्रियान्वयन में महत्वपूर्ण योगदान।

(२) आचार्य महाप्रज्ञ अहिंसा सम्मान : प्रायोजक-एम.जी. सरावगी फाउण्डेशन, कोलकाता।

अर्हता :

१. अहिंसा का व्यापक प्रचार-प्रसार एवं आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा प्रणीत अभिनव शांति तकनीक 'अहिंसा प्रशिक्षण' के विकास और संवर्धन में विशेष योगदान।

२. अहिंसा प्रशिक्षण के क्षेत्र में नवसृजन अथवा अन्य उल्लेखनीय कार्य का संपादन।

३. अहिंसा प्रशिक्षण के विविध आयामों हृदय परिवर्तन, दृष्टिकोण परिवर्तन, जीवन शैली परिवर्तन, व्यवस्था परिवर्तन एवं आजीविका प्रशिक्षण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य।

(३) महादेवलाल सरावगी जैन आगम मनीषा पुरस्कार : प्रायोजक-एम.जी. सरावगी फाउण्डेशन, कोलकाता।

अर्हता :

१. जैन आगमों के विकास, विस्तार एवं संवर्धन में विशेष योगदान।

२. जैन आगम एवं जैन विद्या के क्षेत्र में शोधपूर्ण एवं विशिष्ट कार्य के द्वारा जैन आगमों के संवर्धन में योगदान।

(४) गंगादेवी सरावगी जैन विद्या पुरस्कार : प्रायोजक-एम.जी. सरावगी फाउण्डेशन, कोलकाता।

अर्हता :

१. केवल महिलाओं के लिए।

२. जैन विद्या के विविध क्षेत्रों में उत्कृष्ट शोध कार्य कर जैन विद्या के विकास में महत्वपूर्ण योगदान।

(५) आचार्य तुलसी प्राकृत पुरस्कार : प्रायोजक-के.बी.डी. फाउण्डेशन, कोलकाता।

अर्हता :

१. जैनागम एवं प्राकृत भाषा तथा साहित्य के विकास एवं संवर्धन में विशेष योगदान।

२. प्राकृत एवं पाली जैसी प्राचीन भाषाओं के विकास एवं पाण्डुलिपियों के संरक्षण, संपादन एवं प्रकाशन की दिशा में उल्लेखनीय कार्य।

३. नैतिक मूल्यों व श्रमण संस्कृति में आस्था, तेरापंथ धर्मसंघ के सिद्धान्तों, आदर्शों एवं आचार्य के प्रति निष्ठा।

(६) आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य पुरस्कार : प्रायोजक-सूरजमल सुराणा चेरिटेबल ट्रस्ट, गुवाहाटी।

अर्हता :

१. आचार्य महाप्रज्ञ के चिन्तन और विचारों को मूर्त रूप प्रदान करते हुए उन्हें साहित्य के माध्यम से प्रसारित करने में विशेष योगदान।

२. जैन विद्या व आचार्य महाप्रज्ञ के विशाल साहित्य का गहन अनुशीलन कर सत्साहित्य सृजन में श्रीवृद्धि का कार्य।

३. नैतिक मूल्यों व श्रमण संस्कृति में आस्था, तेरापंथ धर्मसंघ के सिद्धान्तों, आदर्शों एवं आचार्य के प्रति निष्ठा।

(७) प्रज्ञा पुरस्कार : प्रायोजक-श्री उम्मेदसिंह, विनोदसिंह, दिलीपसिंह दूगड़, हैदराबाद-गुवाहाटी-तुरा।

अर्हता :

शिक्षा, चिकित्सा, पर्यावरण, संस्कृति, पत्रकारिता, कला एवं शिल्प आदि क्षेत्रों में विशिष्ट योगदान अथवा उल्लेखनीय कार्य।

(८) संघ सेवा पुरस्कार : प्रायोजक-नेमचंद जेसराज सेखानी चेरिटेबल ट्रस्ट, कोलकाता।

अर्हता :

१. संघ एवं संघपति के प्रति निष्ठा, आस्था एवं सेवा भावना को जागृत, प्रोत्साहित एवं वर्धापित करने में विशेष योगदान।

२. धर्मसंघ के विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय एवं महत्वपूर्ण सेवाऐं।

३. नैतिक मूल्यों व श्रमण संस्कृति में आस्था, तेरापंथ धर्मसंघ के सिद्धान्तों, आदर्शों एवं आचार्य के प्रति निष्ठा।

(९) जय तुलसी विद्या पुरस्कार : प्रायोजक-चौथमल कन्हैयालाल सेठिया चेरिटेबल ट्रस्ट, सूरत।

अर्हता :

ऐसी शिक्षण संस्था जिसने जीवन विज्ञान एवं मूल्यपरक शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्योंएवं गतिविधियों को संपादित किया हो।

आवेदन भेजने हेतु पता :

जैन विश्व भारती, पोस्ट : लाडनूं-३४१३०६ जिला : नागौर (राज.)

संपर्क सूत्र : (०१५८१) २२६०८०, २२४६७१

ई-मेल : jainvishvabharati@yahoo.com

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

व्यक्ति अपनी शक्ति का दुरुपयोग तो
करे ही नहीं, शक्ति का अनुपयोग भी न हो,
जितना हो सके वह अपनी
शक्ति का सदुपयोग ही करे।

–आचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

प्रभात सेठिया

हैदराबाद

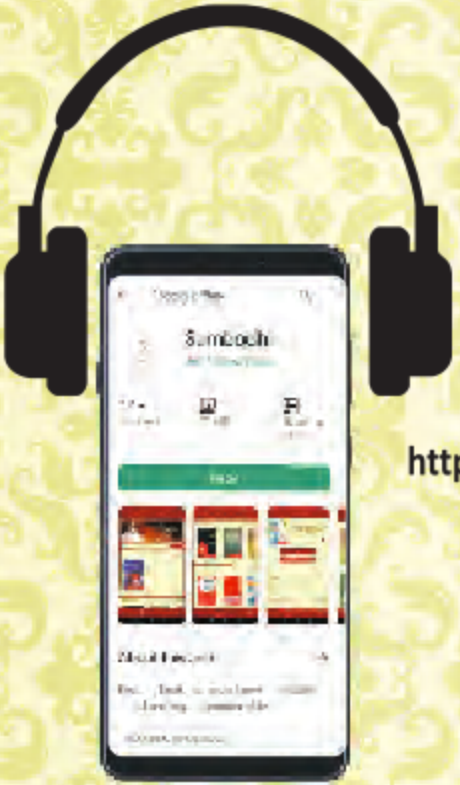

Sambodhi

A Speako Library

स्वर्ण जयंती वर्ष
1970 - 2020

GET IT ON Google Play

Download on the App Store

Android Device :

https://play.google.com/store/apps/details?id=com.sambodhi

Apple IOS :

http://itunes.apple.com/app/id1486821625

संपर्क सूत्र :

98401-66699

आदर्श साहित्य विभाग

नव प्रकाशित साहित्य

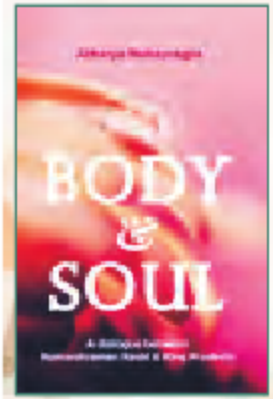

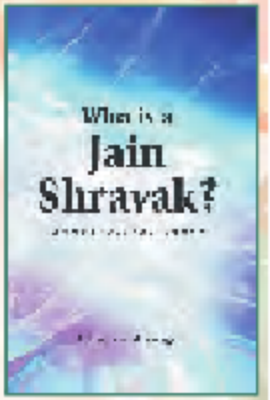

अधिक जानकारी हेतु संपर्क सूत्र :

जैन विश्व भारती लाडनूं : 8742004849, आचार्य महाश्रमण प्रवास स्थल : 7002359890

ईमेल : books@jvbharati.org | Books are available online at : http://books.jvbharati.org

।। जय भिक्षु ।।

।। जय महाश्रमण ।।

Acharya Mahapragya Birth Centenary 1920-2020

कहना बहुत सरल, करना बहुत कठिन। कठिन को सरल बनाने की साधना करो ।।

- आचार्य महाप्रज्ञ

श्रद्धावनत

श्रीचंद, उम्मेद, विजयसिंह, अजय, अभिषेक, आतिष, तनिश, आरव एवं विराज मोहोनोत

(डीडवाना निवासी, बैंगलुरु प्रवासी)

Jay Group

Manufacturers & Exporters of
Plastic Tagging Pins, Loop Pins, Tagging Guns, Trimmers &
Texitile Spot Cleaning Guns under popular brands of :

ARROW® | Wonder® | TagStar® | UNIVERSAL® | CHOKHO®

No. 5 Charles Campbell Road, Cox Town, Bengaluru - 560005, Karnataka, India.
Tel. 0091 (0) 80- 25483928/25483508; Fax. 0091 (0)80-25488780/25484364;
E-mail : enquiry@jaygroups. com; Website - www.jaygroups.com